मुक्तिदाता येशु का शुभ संदेश
लेखक शिष्य लूकस

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

मुक्तिदाता येशु-ग्रंथ में चार लेखकों ने प्रभु येशु की जीवन-कहानी का वर्णन किया है। प्रभु येशु के शिष्य लूकस उनमें से तीसरे लेखक हैं। इस सच्ची कहानी का आरंभ लगभग 2000 साल पहले इज़राएल देश के यहूदी लोगों के बीच में हुआ था। यहूदी समाज के लोग अद्‌भुत थे क्योंकि परमात्मा का आशीर्वाद और मुक्ति का संदेश उन्हीं के माध्यम से हर समाज के लोगों तक पहुँचना था। यहूदी इतिहास के अनुसार प्रभु येशु के जन्म से 1500 साल पहले परमात्मा ने उनके प्रवक्ता मोशे द्वारा यहूदी लोगों को इजिप्ट देश की गुलामी से मुक्त करके एक महान कार्य किया है। परंतु इस घटना के सैकड़ों साल बाद मुक्तिदाता येशु के मुक्ति देने की सच्ची कहानी घटित हुई। और यह मुक्ति केवल यहूदी समाज के लोगों के लिए ही नहीं, परंतु दुनिया के हर समाज के लोगों के लिए है।

मुक्तिदाता येशु के जन्म के समय, यहूदी समाज के लोग रोम सम्राट साम्राज्य की गुलामी में थे। बहुत से यहूदियों की आशा थी कि मुक्तिदाता आएँगे और उन्हें रोम सरकार से मुक्ति दिलाएँगे। लेकिन प्रभु येशु राजनैतिक मुक्ति देने नहीं आए थे, परंतु पाप-बंधन, स्वार्थ, अशुद्ध आत्माओं और बिमारियों से मुक्ति देने आए थे। प्रभु येशु ने अपनी मौत और परमात्मा द्वारा ज़िन्दा होने के बाद यह घोषणा कर दी कि उनके शिष्य दुनिया के हर समाज के लोगों को बताएँगे कि वे अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करें। उनके ऐसा करने से परमात्मा मुक्तिदाता

येशु के नाम में उनके बुरे कर्मों का खाता मिटा देंगे। इस कारण उन्हें परमात्मा के मार्ग पर चलने की शक्ति और आशीर्वाद मिलेगा।

हम इस हिंदी अनुवाद के माध्यम से सब लोगों को निमंत्रण देते हैं कि वे भी प्रभु येशु की जीवन-कहानी से, जो सबके लिए है, मुक्ति और आशीर्वाद प्राप्त करें।

प्रार्थना - "हे परमात्मा, शिष्य लूकस को मुक्तिदाता येशु के बारे में इस शुभ संदेश को बताने की प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। यह आपकी दया है कि जो नम्र होकर आपके पास आते हैं, आप उन सभी को मुक्ति का वरदान देते हैं।"

• • • ■ • • •

1

लूकस द्वारा प्रभु येशु की जीवन-कहानी का परिचय

[1-3]आदरणीय थिओफिलस,* अनेक लेखकों ने कोशिश की है कि
हमारे बीच जो घटनाएँ घटी हैं, उनका वर्णन करें। उन्होंने वही लिखा
जो मुक्तिदाता येशु के बारे में हमें बताया गया था। वे उन लोगों की
बातों पर निर्भर थे जो प्रभु येशु के जीवन को शुरुआत से जानते थे और
जिन्होंने उनका शुभ संदेश फैलाकर परमात्मा की सेवा की। इसलिए
मैंने भी प्रभु येशु की सब बातों का शुरू से बहुत ध्यान से अध्ययन
किया है। उसके बाद मैंने सही समझा कि आपके लिए यह सब
घटनाओं को सच्ची तरह लिखूँ [4]ताकि आप पूरी तरह से भरोसा कर
सकें कि जो बातें आपने सीखी हैं, वे सच हैं।

स्वर्गदूत द्वारा बूढ़े पति-पत्नी से बेटा होने का वादा

[5]इज़राएल देश में यहूदिया प्रदेश के राजा हेरोदेस के शासन-काल में
जकरयाह नाम का एक पुरोहित था जो अबियाह के पुरोहितों के समूह
का सदस्य था। उसकी पत्नी एलिशिबा पुरोहित हारोन के वंश की

---

* **1:1-3** *थिओफिलस* - लूकस ने यह पुस्तक थिओफिलस व्यक्ति के नाम लिखी है। ग्रीक भाषा में थिओफिलस नाम का अर्थ, "परमात्मा-भक्त" है।

थी। 6वे दोनों परमात्मा की नज़र में धर्मी थे और अपने जीवन में प्रभु
परमात्मा की सारी आज्ञाओं और नियमों का पालन करते थे। 7उनके बच्चे
नहीं थे, क्योंकि एलिशिबा बाँझ थी और दोनों की उम्र ढल चुकी थी।
8एक दिन जकरयाह और उसके लोग अपनी बारी आने पर परमात्मा
के मंदिर में पुरोहित का काम कर रहे थे। 9तब पुरोहितों की प्रथा के
अनुसार पर्ची डालकर जकरयाह को चुना गया कि वह मंदिर के पवित्र
स्थान में जाकर धूप जलाए। 10जिस समय मंदिर में धूप जलाई जा रही
थी, लोग मंदिर के बाहर प्रार्थना कर रहे थे।
11तब जकरयाह ने यह देखा कि प्रभु परमात्मा का एक स्वर्गदूत जहाँ
धूप जलाई जा रही थी, उस वेदी के दाईं ओर खड़ा है। 12उसे देखकर
जकरयाह घबरा गया और डर ने उसे जकड़ लिया। 13लेकिन स्वर्गदूत ने
उससे कहा, "जकरयाह, मत डरो, क्योंकि परमात्मा ने तुम्हारी प्रार्थना
सुन ली है और तुम्हारी पत्नी एलिशिबा एक पुत्र को जन्म देगी। उसका
नाम तुम योहन रखना। 14उसका जन्म तुमको खुशी से भर देगा, और
बहुत लोग आनंदित होंगे। 15तुम्हारा बेटा प्रभु परमात्मा की नज़र में
महान होगा। वह किसी भी किस्म की शराब नहीं पीएगा, परंतु माता
के गर्भ से ही परमात्मा की पवित्र आत्मा उनके साथ होगी। 16योहन
इज़राएल के अनेक लोगों को प्रभु परमात्मा की ओर लौटा लाएगा।
17इससे पहले कि प्रभु अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करने आएँ,
परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह की तरह योहन परमात्मा की पवित्र
आत्मा और शक्ति से भरकर आएँगे। योहन पिताओं के मन में अपने
बच्चों के लिए प्रेम फिर से जागृत करेगा। वह पापियों को समझाएगा
कि वे धर्मी और समझदार बनें। इस तरह जो प्रभु करने जा रहे थे,
उसके लिए योहन लोगों को तैयार करेगा।"
18जकरयाह ने स्वर्गदूत से कहा, "मैं तुम्हारी बात पर कैसे विश्वास
करूँ? मैं स्वयं बूढ़ा हूँ और मेरी पत्नी की उम्र भी ढल चुकी है।"
19स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "मेरा नाम गब्रिएल है, और मैं परमात्मा
का सेवक हूँ। मुझे तुमको यह खुश खबरी सुनाने के लिए भेजा गया
है। 20परंतु तुमने मेरी बातों पर विश्वास नहीं किया जो समय आने पर
पूरी होगी। इसलिए तुम जब तक यह बात पूरी न हो जाए, तब तक के
लिए तुम गूँगे हो जाओगे और बोल न पाओगे।"

[21]बाहर लोग जकरयाह का इंतज़ार कर रहे थे और हैरान थे कि उसे
मंदिर में इतनी देर क्यों लग रही है। [22]जब वह बाहर निकले तब गूँगा
बन जाने के कारण लोगों से बोल नहीं सके। लोग समझ गए कि उन्हें
मंदिर में परमात्मा से संदेश मिला है, क्योंकि जकरयाह हाथ से इशारा
करते रहे, लेकिन कुछ बोल न सके।
[23]मंदिर में अपना सेवा कार्य का समय पूरा हो जाने के बाद, वह अपने
घर चले गए। [24]तब कुछ समय के बाद जकरयाह की पत्नी एलिशिबा
गर्भवती हुई। वह पाँच महीने तक अपने घर के अंदर ही रही। उसने
अपने मन में कहा, [25]“प्रभु परमात्मा ने मेरा बाँझपन मिटाकर समाज में
मेरी लाज रख ली और मुझपर कृपा की है।”

प्रभु येशु के जन्म की भविष्यवाणी

[26]जब एलिशिबा छह महीने की गर्भवती थी, परमात्मा ने स्वर्गदूत
गब्रिएल को गलील प्रदेश के नासरत नगर में [27]मरियम नामक कुँवारी
कन्या के पास भेजा। उसकी मंगनी राजा दाविद के वंशज योसफ
नामक पुरुष से हो चुकी थी। [28]स्वर्गदूत ने मरियम को प्रणाम किया
और कहा, “प्रभु तुम्हारे साथ है।”
[29]मरियम स्वर्गदूत की बात सुनकर घबरा गई और सोचने लगी कि
इसका क्या मतलब है। [30]तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, “मरियम, डरो
मत, क्योंकि परमात्मा की कृपा तुम पर हुई है। [31]देखो, तुम गर्भवती
होगी और बेटे को जन्म दोगी। तुम उसका नाम येशु रखना। [32]वह
महान होगा और परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। प्रभु परमात्मा उसे
राजा बनाएँगे जैसे कि उनके पूर्वज दाविद राजा थे। [33]वह इज़राएल के
लोगों पर हमेशा शासन करेगा और उसके साम्राज्य का अंत कभी नहीं
होगा।”
[34]मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा, “यह कैसे संभव होगा, क्योंकि मैं अब
तक कुँवारी हूँ?”
[35]स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, “परमात्मा की पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगी
और परमेश्वर की शक्ति तुम्हारे साथ होगी। इस कारण जो तुमसे जन्म
लेगा, वह परमात्मा का पवित्र पुत्र कहलाएगा। [36]तुम्हारी रिश्तेदार
एलिशिबा को भी एक बेटा होने वाला है, जबकि वह बूढ़ी हो चुकी है।

एलिशिबा को, जो बाँझ कहलाती थी, छः माह का गर्भ है, [37]क्योंकि
परमात्मा के लिए कुछ भी असंभव नहीं।"*
[38]तब मरियम ने कहा, "मैं प्रभु परमात्मा की सेविका हूँ। जैसा आपने
कहा है वैसा ही मेरे जीवन में पूरा हो।" इसके बाद, स्वर्गदूत उसके
पास से चला गया।

मरियम और एलिशिबा की मुलाकात

[39-40]इसके बाद मरियम तुरंत यहूदिया प्रदेश के एक पहाड़ी नगर
को चली गई जहाँ जकरयाह का घर था। वहाँ पहुँचकर मरियम ने
एलिशिबा को नमस्कार किया। [41]जब एलिशिबा ने मरियम की आवाज़
सुनी तब उसके गर्भ में शिशु उछल पड़ा और एलिशिबा परमात्मा की
पवित्र आत्मा से भर गई। [42]एलिशिबा ऊँची आवाज़ में मरियम से बोल
उठी, "सारी महिलाओं में से परमात्मा ने तुम पर कृपा की है और
उनकी कृपा उस बच्चे पर भी है जिसको तुम जन्म दोगी। [43]मुझ पर
यह कृपा कैसे हुई कि मेरे प्रभु की माता यहाँ मुझसे मिलने आई हैं?
[44]देखिए, आपकी आवाज़ जैसे ही मेरे कानों में पड़ी, मेरी कोख में शिशु
खुशी से उछल पड़ा। [45]मरियम, तुम कितनी भाग्यशाली हो कि तुमने
विश्वास किया कि जो वादा प्रभु परमात्मा ने तुमसे किया है, वह पूरा
होगा।"

कुँवारी मरियम द्वारा परमात्मा का गुणगान

[46]इस पर मरियम ने कहा,
"मेरा मन प्रभु परमात्मा का गुणगान करता है
[47] और मेरी आत्मा मेरे मसीहा परमात्मा के कारण खुश है
[48]उन्होंने अपनी नम्र सेविका पर कृपा की है।
अब से सब पीढ़ी के लोग कहेंगे कि मैं भाग्यशाली हूँ।
[49]सर्वशक्तिमान परमात्मा ने मेरे लिए महान काम किए हैं,
पवित्र है उनका नाम।
[50]वह पीढ़ी से पीढ़ी तक उन लोगों पर दया करते हैं

---

* **1:37** *परमात्मा के लिए कुछ भी असंभव नही* - या, "उनके शब्द कभी प्रभावहीन नहीं होते।"

जो उनका आदर-सम्मान करते हैं।
51 परमात्मा ने अपना बाहुबल दिखाया है
और अहंकारी मन वालों को तितर-बितर कर डाला है।
52 उन्होंने शक्तिशाली राजाओं को सिंहासनों से उतारा है
और नम्र लोगों को महान बनाया है।
53 परमात्मा ने भूखे गरीबों को अच्छी-अच्छी चीज़ें खिलाई हैं
पर अमीरों को खाली हाथ लौटा दिया है।
54 परमात्मा अपने सेवक इज़राएल देश की मदद करते हैं
और अपने लोगों के लिए हमेशा दयालु हैं।
55 परमात्मा को कुलपिता अब्राहम और उनके वंशजों पर
हमेशा दयालु बने रहने का वादा याद है।”

56 मरियम लगभग तीन महीने एलिशिबा के साथ रहकर अपने घर
लौट गई।

बूढ़े माँ-बाप के यहाँ योहन का जन्म

57 गर्भ का समय पूरा होने पर पुरोहित जकरयाह की पत्नी एलिशिबा ने एक
पुत्र को जन्म दिया। 58 जब उसके पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने सुना कि उस
पर प्रभु परमात्मा की बड़ी दया हुई है, तब उन्होंने उसके साथ खुशी मनाई।
59 आठवें दिन वे बालक का चीरा-संस्कार करने के लिए इकट्ठा हुए
और उसके पिता के नाम पर उसका नाम “जकरयाह” रखने लगे।
60 परंतु उसकी माता ने कहा, “नहीं, इसका नाम ‘योहन’ रखा जाएगा।”
61 लोगों ने उससे कहा, “यह नाम तुम्हारे पूरे परिवार में किसी का
नहीं है।” 62 और उसके पिता से इशारा कर पूछा, “तुम इसका क्या
नाम रखना चाहते हो?”
63 जकरयाह ने तख्ती माँगकर उस पर लिखा, “इसका नाम योहन है।”
इस पर सब हैरान हो गए। 64 उसी समय जकरयाह की ज़बान खुल गई,
वह बोलने लगे और परमात्मा का गुणगान करने लगे।
65 इससे पड़ोसियों पर डर छा गया और इन सब बातों की चर्चा
यहूदिया प्रदेश के पूरे पहाड़ी इलाके में फैल गई। 66 जिन्होंने भी ये बातें
सुनीं, सोच में पड़ गए और पूछा, “यह बालक क्या बनेगा?” क्योंकि
सचमुच उस पर प्रभु परमात्मा का हाथ था।

पुरोहित जकरयाह का परमात्मा के लिए गीत

67 बच्चे का पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से भरकर दिव्य संदेश बताने
लगा,

68 “इज़राएल के प्रभु परमात्मा का गुणगान हो
क्योंकि वह अपने लोगों को मुक्ति देने आए हैं।
69 परमात्मा ने अपने सेवक राजा दाविद के वंश में
हमारे लिए एक शक्तिशाली मसीहा* प्रदान किया है
70 जैसे परमात्मा ने अपने पावन प्रवक्ताओं के द्वारा
प्राचीन काल में वादा किया था
71 कि वह हमारे शत्रुओं और जो हमसे नफरत करते हैं
उन सब से बचाएँगे।
72 परमात्मा हमारे पूर्वजों पर दया दिखाएँगे
और अपने पवित्र अनुबंध को पूरा करेंगे।
73 उन्होंने हमारे पूर्वज अब्राहम से वादा किया
74-75 कि वह हमें हमारे शत्रुओं के हाथ से मुक्त करेंगे।
तब हम बिना डरे, पवित्रता और आज्ञाकारिता से
पूरे जीवन परमात्मा की सेवा करेंगे।
76 हे मेरे बच्चे योहन,
तुम परमेश्वर के प्रवक्ता कहलाओगे।
तुम प्रभु से पहले जाओगे
और उनके लिए रास्ता तैयार करोगे।
77 तुम अपने लोगों को मुक्ति प्राप्ति का ज्ञान दोगे
जिससे उनके बुरे कर्मों का खाता मिट सकता है।
78 हमारे परमात्मा की अपार कृपा
हम पर उस प्रकार चमकेगी
जैसे आकाश में उगता सूरज।
79 हम जो मृत्यु की अँधेरी छाया में जीते हैं
यह प्रकाश शांति भरे जीवन में
मार्गदर्शन करने के लिए चमकेगा।”

---

* **1:69** *शक्तिशाली मसीहा* - (या, “मसीहा का सींग”) सींग शक्ति का प्रतीक था।

80बालक योहन बढ़ता गया और परमात्मा की पवित्र आत्मा ने उसे
बहुत शक्ति दी। योहन इज़राएल देश के लोगों के सामने आने से पहले
एक सुनसान जगह पर रहते थे।

2

प्रभु येशु का एक कुँवारी से जन्म लेना

1उसी समय रोम सम्राट अगसतस ने आदेश निकाला कि पूरे रोम
साम्राज्य में जनगणना की जाए। 2सीरिया देश के राज्यपाल कुरीनियस
के शासन-काल की यह पहली जनगणना थी। 3सब लोग जनगणना
में अपना नाम लिखवाने के लिए अपने-अपने पूर्वजों के नगर को जाने
लगे। 4इसलिए योसफ गलील प्रदेश के नासरत नगर से यहूदिया प्रदेश
में बैथलहम नगर को चले गए। राजा दाविद का जन्म बहुत साल पहले
बैथलहम में हुआ था और योसफ उनके वंशज थे।
5मरियम की योसफ के साथ मंगनी हुई थी और वह भी उसके साथ
बैथलहम गई। वह गर्भवती थी और जल्दी ही बच्चे को जन्म देने वाली
थी। 6जब वे बैथलहम में थे, मरियम के गर्भ के दिन पूरे हो गए 7और
उसने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया। मरियम ने उसे कपड़े में
लपेटकर पशु-चरनी में लिटाया, क्योंकि उन्हें ठहरने के लिए कोई
कमरा नहीं मिला था।

स्वर्गदूत द्वारा मुक्तिदाता के जन्म का संदेश

8उस रात बैथलहम नगर के पास के मैदानों में कुछ चरवाहे अपनी भेड़
बकरियों की रखवाली कर रहे थे। 9अचानक प्रभु परमात्मा का स्वर्गदूत
उनको दिखाई दिया और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमकने लगा। यह
देखकर चरवाहे बहुत डर गए। 10लेकिन दूत ने उनसे कहा, “डरो मत। देखो,
मैं तुम्हें बड़ी खुशी का शुभ संदेश सुना रहा हूँ जो सभी लोगों के लिए होगा।
11आज राजा दाविद के नगर में तुम्हारे लिए एक मसीहा ने जन्म लिया है।
वही मुक्तिदाता और प्रभु हैं। 12तुम्हारे लिए उनकी पहचान की निशानी यह है
कि तुम एक शिशु को कपड़े में लिपटे और पशु-चरनी में लेटे हुए पाओगे।”
13फिर अचानक उस दूत के साथ असंख्य स्वर्गदूतों का समूह दिखाई
पड़ा जो यह गीत गाते हुए परमात्मा का गुणगान कर रहे थे,

[14] “परमस्वर्ग में परमात्मा का गुणगान हो,
और पृथ्वी पर उन लोगों को शांति मिले
जिनसे परमात्मा खुश हैं।”
[15] जब स्वर्गदूत उनसे विदा होकर परमस्वर्ग चले गए तब चरवाहों
ने विचार किया, “क्यों न हम बैथलहम चलें और यह घटना अपनी
आँखों से देखें जो प्रभु ने हम पर प्रकट की है।”
[16] वे तुरंत गए और उन्होंने मरियम, योसफ और शिशु को
पाया जो पशु-चरनी में लेटा हुआ था। [17] चरवाहों ने जब बालक
को देखा तब उन्होंने बालक के माता-पिता और दूसरे लोगों
को बताया जो कुछ स्वर्गदूत ने उनसे बालक के बारे में कहा।
[18] और सब सुनने वाले चरवाहों की बातों पर हैरान रह गए। [19] पर
मरियम सब बातें सुनकर मन में रखे रही और उन पर विचार
करती रही।
[20] तब चरवाहे परमात्मा का गुणगान करते हुए लौट गए, क्योंकि
जो कुछ उन्होंने देखा और सुना था, ठीक वैसा ही था जैसा उनको
स्वर्गदूत ने बताया था।
[21] आठ दिन की समाप्ति पर जब बालक का चीरा-संस्कार हुआ तब
उसका नाम येशु रखा गया। बालक के गर्भ में आने से पहले स्वर्गदूत ने
मरियम से यही नाम रखने के लिए कहा था।

बालक येशु का मंदिर में अर्पण

[22] अब जब मोशे के नियम और शिक्षा के अनुसार उनके शुद्ध
होने का समय आया, तो योसफ़ और मरियम बालक येशु को
यरूशलम शहर के मंदिर में ले आए कि उन्हें प्रभु परमात्मा की
सेवा के लिए अर्पित करें। [23] जैसा प्रभु परमात्मा ने जो नियम मोशे
को सौंपे थे उनके अनुसार हर एक पहलौठा पुत्र प्रभु की सेवा
के लिए अर्पित किया जाएगा [24] और इन्हीं नियमों के अनुसार
एक जोड़ा फाखता या कबूतर के दो बच्चे बलि में चढ़ाए जाने
चाहिए।

2:23 निर्गमन 13:2,12,15 **2:24** लेवी 12:8

बूढ़े शिमयोन का गीत

25उस समय यरूशलम शहर में परमात्मा का एक धर्मी भक्त रहा करता
था जिसका नाम शिमयोन था। परमात्मा की पवित्र आत्मा उसके साथ थी
और वह उस घड़ी का इंतज़ार कर रहा था जब परमात्मा इज़राएल देश को
मुक्ति देंगे। 26पवित्र आत्मा द्वारा उसे यह प्रकाश मिला था कि जब तक वह
प्रभु परमात्मा द्वारा भेजे गए मुक्तिदाता के दर्शन न कर लेगा, उसकी मृत्यु नहीं
होगी। 27शिमयोन पवित्र आत्मा की प्रेरणा से परमात्मा के मंदिर के आँगन
में आया। जब बालक येशु के माता-पिता उन्हें मंदिर के अंदर लाए कि पहले
जन्मे बेटे के लिए मोशे के नियम और शिक्षा की रीति पूरा करें, 28तब शिमयोन
ने बालक को गोद में लिया और परमात्मा का गुणगान करते हुए यह कहा,

29 “हे जग के मालिक,
अब आपका सेवक शांति से मर सकता है,
क्योंकि आपने अपने वायदे को पूरा किया है।
30 मेरी आँखों ने इस बालक में
आपके मुक्तिदाता का दर्शन कर लिया है
31 जिसे आपने दुनिया के
हर समुदाय के लोगों के लिए तैयार किया है।
32 यह बालक आपके इज़राएल की प्रजा को गौरव देने वाली
और दुनिया के हर समाज के लोगों को
प्रकाशित करने वाली प्रकाश बने।”

33बालक येशु के बारे में ये बातें सुनकर उसके माता-पिता हैरान हो
गए। 34-35तब शिमयोन ने उन्हें आशीर्वाद देकर येशु की माता मरियम से
कहा, “देखिए, यह बालक एक ऐसा चेतावनी-संकेत होगा जिसका लोग
विरोध करेंगे। यह तुम्हारे लिए एक तलवार की तरह दर्दनाक होगा जो
तुमको आर-पार भेद देगी। इस बालक के कारण इज़राएल देश में बहुतों
से लोगों का सूरज उदय होगा और बहुतों का सूरज डूब जाएगा। और
इस प्रकार अनेक लोगों के मनों के विचार सामने आ जाएँगे।”

बूढी स्त्री हनना द्वारा परमात्मा का गुणगान

36जब यह हो रहा था उस समय हनना नामक एक परमात्मा के
प्रवक्ता भी मंदिर में थी। वह फनुएल नामक व्यक्ति की बेटी थीं जो

अशेर वंश का था। हनना बहुत बूढ़ी थीं। शादी के सात साल बाद
ही उसके पति की मृत्यु हो गई थी [37]और अब वह चौरासी साल की
विधवा थीं। वह प्रार्थना और उपवास के साथ दिन-रात मंदिर में
रहकर परमात्मा की सेवा करती थीं। [38]जिस समय शिमयोन मरियम
और योसफ से मंदिर में खड़े होकर बातें कर रहा था, उसी समय वह
आई, और परमात्मा का गुणगान करने लगी। तब वह सब लोगों को
बालक के बारे में बताने लगीं जो यरूशलम शहर और इज़राएल देश के
आज़ाद होने का इंतज़ार कर रहे थे।

बालक येशु का धार्मिक गुरुओं को मंदिर में ज्ञान देना

[39]जब योसफ और मरियम प्रभु परमात्मा द्वारा मोशे को सौंपे गए
नियमों की रीतियों को पूरा कर चुके तब वे गलील प्रदेश में अपने नगर
नासरत को लौट गए। [40]बालक येशु बड़े होते हुए बलवन्त होते गए
और उनकी बुद्धि का विकास होता गया। उन पर परमात्मा की कृपा
थी।

[41]बालक येशु के माता-पिता हर साल मुक्ति का त्यौहार मनाने
यरूशलम शहर जाया करते थे। [42]जब बालक येशु बारह साल के हुए
तब वे अपनी प्रथा के अनुसार यरूशलम शहर के मंदिर में त्यौहार
मनाने गए। [43]त्यौहार समाप्त होने पर जब वे घर वापस आने लगे तब
बालक येशु शहर यरूशलम में ही रह गए, परंतु इस बात का येशु के
माता-पिता को पता नहीं था। [44]वे समझे कि बालक येशु अन्य यात्रियों
के साथ ही कहीं होगा तो बालक के माता-पिता को यात्रा करते हुए
एक दिन गुज़र गया, तब भी येशु उन्हें कहीं नहीं दिखे। और फिर वे
येशु को अपने रिश्तेदारों और यात्रियों में ढूँढ़ने लगे, [45]पर वह न मिले।
इसलिए वे उनको ढूंढते हुए शहर यरूशलम लौट आए। [46]तीसरे दिन
उन्होंने येशु को मंदिर में धर्मगुरुओं के बीच बैठे, उनकी बातें सुनते
और उनसे प्रश्न करते हुए पाया। [47]सब सुनने वाले बालक येशु की
बुद्धि और उनके उत्तरों से हैरान थे।

[48]येशु को वहाँ देखकर उनके माता-पिता चकित थे। उनकी माता ने
कहा, “बेटे, तुमने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? देखो, मैं और तुम्हारे
पिता चिंतित होकर तुम्हें ढूँढ़ रहे थे।”

49बालक येशु ने कहा, “आप मुझे यहाँ-वहाँ क्यों ढूँढ़ रहे थे? क्या
आप नहीं जानते थे कि मुझे यहाँ होकर अपने पिता परमात्मा के कामों
को करना था?” 50पर जो बात बालक येशु ने कही, उसे वे न समझ
पाए।

51तब बालक येशु उनके साथ नासरत नगर को गए और अपने
माता-पिता की आज्ञाओं का पालन करते रहे। उनकी माता ने ये सब
बातें अपने मन में रखीं।

52बालक येशु बुद्धि और शारीरिक बल में बढ़ते गए। परमात्मा और
लोग उनसे खुश थे।

3

प्रभु येशु की पहचान उजागर होना

1सम्राट तिबिरियुस के शासन-काल के पंद्रहवें साल में* पोंतियुस
पिलातुस यहूदिया प्रदेश का राज्यपाल था। गलील प्रदेश में हेरोदेस*
शासक था, इतूरैया और त्रखोनीतिस इलाके में उसका भाई फिलिपस
शासक था और अबिलेने के इलाके में लिसानियस शासक था। 2हनास
और काइफस* यहूदी समाज के महापुरोहित पद पर थे।

उस समय परमात्मा ने जकरयाह के पुत्र योहन को सुनसान जगह पर
एक संदेश दिया। 3तब योहन यरदन नदी घाटी के इलाकों में गए और
लोगों को यह बताया, “अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप का समर्पण-स्नान
लो, तब परमात्मा तुम्हारे बुरे कर्मों के खाते को मिटा देंगे।” 4ऐसा ही
परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह ने अपनी पुस्तक में लिखा है,

“सुनसान बंजर जगह में कोई पुकार रहा है,
‘प्रभु के आने के लिए रास्ते को तैयार करो
और हर बाधा को दूर करो।
5हर एक खाली स्थान को भर दो,
हर एक पहाड़ और पहाड़ी को झुका दो,

---

* **3:1** *सम्राट तिबिरियुस के शासन-काल के पंद्रहवें साल में* - (सन् 28-29 सी.ई.) प्रभु येशु उस समय लगभग 30 साल के थे। * **3:1** *हेरोदेस* - यह हेरोदेस अन्तिपस है जो निर्दय हेरोदेस महान का बेटा था। * **3:2** *हनास और काइफस* - सन् 6-15 सी.ई. में हनास यहूदी समाज के महापुरोहित थे और उनका दामाद काइफस सन् 18-36 सी.ई. में महापुरोहित थे।

टेढ़े रास्ते सीधे
और उबड़-खाबड़ रास्तों को ठीक कर दो
6 और सभी लोग उस मुक्ति को देखेंगे
जो परमात्मा देते हैं।'"
7 समर्पण-स्नान लेने आई भीड़ से योहन कहते थे, "ओ ज़हरीले
साँपों के बच्चो! परमात्मा के क्रोध से बचने का रास्ता किसने तुमको
बता दिया? 8 अगर तुम सच में परमात्मा के क्रोध से बचना चाहते
हो तो अच्छे काम करो जिससे पता चले कि तुमने अपने बुरे कर्मों
से पश्चाताप कर लिया है। इस धोखे में न रहो कि अब्राहम* तुम्हारे
कुलपिता हैं इसलिए तुम बच जाओगे। मैं तुमसे कहता हूँ, परमात्मा
इन पत्थरों से भी अब्राहम के लिए संतान पैदा कर सकते हैं। 9 अब
कुल्हाड़ी से पेड़ों की जड़ों को काटने की तैयारी पूरी हो चुकी है। जो
पेड़ अच्छा फल नहीं देता वह काटा और आग में झोंका जाएगा।"
10 लोगों ने योहन से पूछा, "तो हम क्या करें?"
11 उन्होंने उत्तर दिया, "जिसके पास दो कुर्ते हों, वह एक कुर्ता गरीब
को दे दे। और जिसके पास खाना हो वह उसे दे दे जिसके पास खाने
को कुछ नहीं है।"
12 समर्पण-स्नान लेने के लिए टैक्स अधिकारी भी आए और उन्होंने
योहन से पूछा, "हे गुरुजी, हमें क्या करना चाहिए?"
13 योहन ने उत्तर दिया, "जो टैक्स बनता है वही लो। उससे ज़्यादा मत
लो।"
14 सिपाहियों ने भी उनसे पूछा, "और हम क्या करें?"
योहन बोले, "अत्याचार करके या झूठे मुकदमे चलाने की धमकी
देकर पैसे मत लो, और अपने वेतन में संतुष्ट रहो।"
15 लोगों की उम्मीदें बढ़ने लगीं और वे मन में सोच रहे थे कि कहीं
योहन ही तो उनके मुक्तिदाता नहीं हैं। 16 परंतु योहन ने सबसे कहा,
"मैं तो तुम्हें पानी से समर्पण-स्नान देता हूँ, पर वह जो आ रहे हैं मुझ
से अधिक शक्तिशाली हैं। मैं तो उनके जूतों के फीते भी खोलने योग्य

3:6 यशायाह 40:3-5   * **3:8** *अब्राहम* - यहूदी समाज के लोगों का यह मानना था कि कुलपिता अब्राहम के गुण इज़राएल को परमात्मा के दंड और क्रोध से बचा सकते थे।

नहीं हूँ। वही हैं, जो तुम्हें पवित्र आत्मा और आग में समर्पण-स्नान देंगे।
[17]वह उन लोगों को एक दूसरे से अलग करने के लिए तैयार है जिन्होंने
पश्चाताप किया है और जिन्होंने नहीं किया है, जैसे एक किसान गेहूँ
को भूसी से अलग कर देता है। वह गेहूँ को अपने अनाज घर में रखेगा
लेकिन भूसी को ऐसी आग फेंक देगा जो कभी बुझती नहीं।" [18]योहन
इस तरह की कई चेतावनियाँ देते रहे और लोगों को मुक्तिदाता के
आने का शुभ संदेश भी सुनाते रहे।

[19]योहन ने शासक हेरोदेस को फटकार लगाते हुए कहा, "तुम्हारा
अपने भाई की पत्नी हेरोदियास को रखना गलत है।" योहन ने यह
कहा कि हेरोदेस ने और भी कई बुरे काम किए थे। [20]तब हेरोदेस ने
अपने बुरे कामों में एक और बुरा काम जोड़ लिया, उसने योहन को
जेल में डाल दिया।

परमात्मा के प्रिय पुत्र का समर्पण-स्नान लेना

[21]जब सब लोगों ने समर्पण-स्नान प्राप्त कर लिया प्रभु येशु ने भी
समर्पण-स्नान ले लिया। तब जब वह प्रार्थना कर रहे थे, आकाश खुल
गया [22]और पवित्र आत्मा सफेद कबूतर के समान उन पर उतरा और
परमस्वर्ग से परमात्मा की यह आवाज़ सुनाई दी, "तुम मेरे प्रिय पुत्र हो,
मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।"

मुक्तिदाता येशु की वंशावली

[23]प्रभु येशु इस समय लगभग तीस साल के थे।
ऐसा माना जाता था कि वह योसफ के पुत्र थे,
और योसफ एली का पुत्र था,
[24]और एली मतात का पुत्र था,
और मतात लेवी का पुत्र था,
और लेवी मलखी का पुत्र था,
और मलखी यनाई का पुत्र था,
और यनाई योसफ का पुत्र था,
[25]और योसफ मतातियस का पुत्र था,
और मतातियस आमोस का पुत्र था,

और आमोस नहूम का पुत्र था,
और नहूम असल्या का पुत्र था,
और असल्या नग्गई का पुत्र था,
26 और नग्गई महत का पुत्र था,
और महत मतातियस का पुत्र था,
और मतातियस शिमीन का पुत्र था,
और शिमीन योसेख का पुत्र था,
और योसेख योदा का पुत्र था,
27 और योदा योहानन का पुत्र था,
और योहानन रेसा का पुत्र था,
और रेसा ज़रुबाबेल का पुत्र था,
और ज़रुबाबेल शालतिएल का पुत्र था,
और शालतिएल नेरी का पुत्र था,
28 और नेरी मलखी का पुत्र था,
और मलखी अद्दी का पुत्र था,
अद्दी कोसम का पुत्र था,
और कोसम एलमदाम का पुत्र था,
और एलमदाम एर का पुत्र था,
29 और एर यहोशु का पुत्र था,
और यहोशु एलीएज़र का पुत्र था,
और एलीएज़र योरीम का पुत्र था,
और योरीम मतात का पुत्र था,
और मतात लेवी का पुत्र था,
30 और लेवी शिमयोन का पुत्र था,
और शिमयोन यहूदा का पुत्र था,
और यहूदा योसफ का पुत्र था,
और योसफ योनाम का पुत्र था,
और योनाम एलियाकिम का पुत्र था,
31 और एलियाकिम मेलेआ का पुत्र था,
और मेलेआ मेना का पुत्र था,
और मेना मताता का पुत्र था,

और मताता नातम का पुत्र था,
और नातम दाविद का पुत्र था,
32 और दाविद यिशय का पुत्र था,
और यिशय ओबेद का पुत्र था,
और ओबेद बोआज़ का पुत्र था,
और बोआज़ सालमन+ का पुत्र था,
और सालमन नहशोन का पुत्र था,
33 और नहशोन अमिनादाब का पुत्र था,
और अमिनादाब अदमीन+ का पुत्र था,
और अदमीन अरनी का पुत्र था,
और अरनी हेज़रोन का पुत्र था,
और हेज़रोन पेरेस का पुत्र था,
और पेरेस यहूदा का पुत्र था,
34 और यहूदा याकोब का पुत्र था,
और याकोब इसहाक का पुत्र था,
और इसहाक अब्राहम का पुत्र था,
और अब्राहम तेरह का पुत्र था,
और तेरह नाहोर का पुत्र था,
35 और नाहोर सरूख का पुत्र था,
और सरूख रागौ का पुत्र था,
और रागौ पेलग का पुत्र था,
और पेलग एबर का पुत्र था,
और एबर शेला का पुत्र था,
36 और शेला कनान का पुत्र था,
और कनान अरफकशद का पुत्र था,
और अरफकशद शेम का पुत्र था,
और शेम नोहा का पुत्र था,
और नोहा लामेक का पुत्र था,
37 और लामेक मथूसेला का पुत्र था,
और मथूसेला हनोक का पुत्र था,
और हनोक यारद का पुत्र था,

और यारद महालालेल का पुत्र था,
और महालालेल केनन का पुत्र था,
38 और केनन हनोश का पुत्र था,
और हनोश शेथ का पुत्र था,
और शेथ आदम का पुत्र था,
और आदम परमात्मा का पुत्र था।

4

शैतान की प्रभु येशु से अपनी भक्ति कराने की कोशिश

1 प्रभु येशु यरदन नदी में समर्पण-स्नान लेकर लौटे परमात्मा की
पवित्र आत्मा की शक्ति उनके साथ थी और पवित्र आत्मा उन्हें
सुनसान बंजर जगह पर ले गयी। 2 वहाँ शैतान चालीस दिन तक उन्हें
अलग-अलग तरीकों से परखता रहा। उन दिनों प्रभु येशु ने कुछ नहीं
खाया, पर चालीस दिन बीत जाने पर उन्हें भूख लगी।
3 तब शैतान ने उनसे कहा, “यदि तुम परमात्मा के पुत्र हो तो इस
पत्थर से कहो कि वह रोटी बन जाए।”
4 परंतु प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा है, ‘इंसान
का जीवन केवल भोजन पर ही निर्भर नहीं रहता है।’”
5 तब शैतान प्रभु येशु को ऊँचे स्थान पर ले गया और पल भर में
संसार के सब देश दिखाते हुए 6 उनसे कहा, “मैं तुमको इन सबका
अधिकार और चमक-दमक दूँगा, क्योंकि यह सब मुझे मिला है और मैं
जिसे चाहूँ, उसे देता हूँ। 7 यदि तुम मेरी भक्ति करो तो यह सब तुम्हारा
हो जाएगा।”
8 प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा है, ‘तुम केवल
प्रभु परमात्मा की ही भक्ति और सेवा करो।’”
9 तब शैतान प्रभु येशु को यरूशलम शहर में ले गया और परमात्मा के
मंदिर के शिखर पर खड़ा कर उनसे कहा, “यदि तुम परमात्मा के पुत्र
हो तो यहाँ से नीचे कूद जाओ, 10 क्योंकि परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा
है, ‘परमात्मा तुम्हारे लिए अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगें कि वे तुम्हारी

4:8 उपदेश 6:13

रक्षा करें [11]और स्वर्गदूत तुमको अपने हाथों में लपक लेंगे कि कहीं
ऐसा न हो कि तुम्हारे पावों में पत्थर से ठेस लगे।'"
[12]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "परमात्मा-ग्रंथ में यह भी कहा गया है, 'तुम
प्रभु परमात्मा को मत परखो।'"
[13]जब शैतान ने प्रभु येशु को सब प्रकार की परीक्षा में डालकर देख
लिया तब अगला मौका मिलने तक के लिए वह उनको छोड़कर चला
गया।

शुभ संदेश को फैलाने के कार्य की शुरुआत

[14]प्रभु येशु पवित्र आत्मा की शक्ति से भरकर गलील प्रदेश में लौट
गए। उनके बारे में खबर हर जगह फैल गई। [15]प्रभु येशु यहूदी सत्संग
भवनों में शिक्षा देते थे और सभी उनकी तारीफ करते थे।

प्रभु येशु के पृथ्वी पर आने का लक्ष्य

[16]प्रभु येशु नासरत नगर में आए जहाँ उनका पालन-पोषण हुआ था।
अपनी आदत के अनुसार वह आराम-दिवस पर सत्संग भवन में गए।
वह परमात्मा-ग्रंथ को पढ़ने के लिए उठे [17]तो उन्हें ग्रंथ में परमात्मा के
प्रवक्ता यशायाह की पुस्तक दी गई। पुस्तक खोलकर प्रभु येशु ने वह
जगह निकाली जहाँ यह लिखा है,

[18] "प्रभु परमात्मा की पवित्र आत्मा मुझ पर है
क्योंकि उन्होंने मुझे गरीबों को
शुभ संदेश सुनाने के लिए नियुक्त किया है।
उन्होंने मुझे भेजा है कि मैं सब को बताऊँ
कि हर प्रकार के बंदी मुक्त होंगे
और अंधे देखने लगेंगे।
मुझे अन्याय सह रहे लोगों को आज़ाद करने
[19] और प्रभु परमात्मा की कृपा के विशेष साल के बारे में *
सब लोगों को बताने के लिए भेजा गया है।"

4:11 भजन शास्त्र 91:11-12 **4:12** उपदेश 6:16 * **4:19** *प्रभु परमात्मा की कृपा के विशेष साल के बारे में* - इज़राएल देश में हर पचासवें साल में गुलामी और कर्ज़ की मुक्ति के "जुबली साल" की घोषणा होती थी (लेवी 25:8-10)। **4:19** यशायाह 61:1-2; 58:6

[20]प्रभु येशु ने इस भाग को पढ़ा और ग्रंथ को बंद करके सेवक को
वापस दे दिया और वह बैठ गए। सत्संग भवन में सब लोगों की आँखें
उनकी ओर लगी हुई थीं। [21]तब प्रभु येशु उनसे बोले, "अभी इस ग्रंथ में
से जो मैंने पढ़ा है वह आज सच हो गया है।"
[22]वहाँ पर खड़े सब लोगों ने उनकी तारीफ की। वे प्रभु येशु के मुँह से
लोगों के लिए परमात्मा की कृपा के वचनों को सुनकर हैरान रह गए।
वे आपस में पूछने लगे, "क्या यह योसफ का पुत्र नहीं है?"
[23]प्रभु येशु ने उनसे कहा, "ज़रूर तुम लोग मेरे बारे में यह कहावत
कहोगे, 'ओ डॉक्टर! पहले अपना इलाज कर।' तुम मुझसे यह भी
कहोगे, 'जो चमत्कार आपने कफरनहूम शहर में किए, उनके बारे में
हमने सुना है, वह यहाँ अपने नगर में भी कीजिए।' [24]मैं तुम लोगों से
सच कहता हूँ कि परमात्मा के प्रवक्ता का आदर सम्मान उसके अपने
नगर में ही नहीं होता।
[25]"परंतु सच बात तो यह है कि परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह के
दिनों में साढ़े तीन साल तक न बारिश हुई और न ओस पड़ी, और
सारे इज़राएल देश में भयानक अकाल पड़ा। उस समय वहाँ बहुत सी
विधवाएँ रहती थीं, [26]किंतु सीदोन क्षेत्र के सरापत नगर में रहने वाली
एक विधवा के अलावा जो यहूदी समाज से नहीं थी, एलियाह को
मदद के लिए किसी और विधवा के पास नहीं भेजा गया था। [27]और
परमात्मा के प्रवक्ता एलीशा के समय में भी इज़राएल देश में बहुत से
लोग कोढ़ से पीड़ित थे, पर सीरिया देश के निवासी नामान के अलावा
जो यहूदी समाज से नहीं था, किसी और का कोढ़ ठीक नहीं हुआ।"
[28]जब यहुदी सत्संग भवन में लोगों ने प्रभु येशु को दूसरे समाज के लोगों
की तारीफ करते हुए सुना, तो वे बहुत गुस्सा हुए। [29]उन्होंने प्रभु येशु को
धक्के मारते हुए नगर के बाहर निकाल दिया और जिस पहाड़ पर उन लोगों
का नगर बसा था, उसकी चोटी पर उन्हें ले गए कि उनको नीचे गिरा दें।
[30]परंतु प्रभु येशु किसी तरह उनके बीच में से निकलकर चले गए।

अशुद्ध आत्मा का प्रभु येशु के सामने समर्पण

[31]अब प्रभु येशु गलील प्रदेश के कफरनहूम शहर में आए और
आराम-दिवस के मौके पर यहूदी सत्संग भवन में उपदेश देने लगे।

[32]लोग उनकी शिक्षा पर हैरान थे, क्योंकि उनकी शिक्षाओं में अधिकार
होता था। [33]तभी सत्संग भवन में अशुद्ध आत्मा से जकड़ा हुआ एक
मनुष्य था। वह ऊँची आवाज़ में चिल्ला उठा, [34]"हे नासरत-निवासी येशु,
आपको हमसे क्या काम? क्या आप हमें नष्ट करने आए हैं? मैं जानता
हूँ कि आप कौन हैं, परमात्मा के पवित्र जन!"
[35]प्रभु येशु ने उसे डाँटकर कहा, "चुप रह, और इस मनुष्य में से
निकल जा!" अशुद्ध आत्मा मनुष्य को सबके सामने पटक कर उसे
बिना नुकसान पहुँचाए उसमें से निकल गई।
[36]इस पर वे सब हैरान रह गए और आपस में कहने लगे, "यह क्या
बात है? यह अधिकार और शक्ति के साथ अशुद्ध आत्माओं को
आदेश देते हैं और वे निकल जाती हैं।" [37]इसके बाद आसपास के सब
स्थानों में प्रभु येशु की खबर फैलती गई।

प्रभु येशु का बीमारों को स्वस्थ करना

[38]प्रभु येशु सत्संग भवन से निकलकर शिमोन पतरस के घर आए।
शिमोन की सास को तेज बुखार चढ़ा था। जो लोग वहाँ थे उन्होंने प्रभु
येशु से उसे ठीक करने की विनती की। [39]प्रभु येशु ने उसके पास खड़े
होकर बुखार को डाँटा और बुखार उतर गया। वह उसी समय उठी
और उनके लिए भोजन का इंतजाम करने लगी।
[40]सूरज डूबने के बाद जिन परिवारों में लोग अलग-अलग बीमारियों से
पीड़ित थे, वे सब उनको प्रभु येशु के पास लाने लगे। प्रभु येशु ने उनमें
से हर एक पर हाथ रखा और उन सबको स्वस्थ कर दिया। [41]बहुतों
में से अशुद्ध आत्माएँ ऊँची आवाज़ से यह कहते हुए निकलीं, "आप
परमात्मा-पुत्र हैं।" प्रभु येशु ने उन्हें डाँटा और बोलने न दिया, क्योंकि
अशुद्ध आत्माएँ पहचानती थीं कि वह मुक्तिदाता हैं।
[42]जब दिन हुआ तब प्रभु येशु किसी सुनसान जगह में चले गए।
लोग उन्हें ढूँढ़ते हुए उनके पास पहुँचे और उनसे विनती की कि वह
उनको छोड़कर न जाएँ। [43]तब प्रभु येशु ने लोगों से कहा, "यह ज़रूरी
है कि मैं अन्य नगरों में भी परमात्मा के साम्राज्य का शुभ संदेश सुनाऊँ,
क्योंकि परमात्मा ने मुझे इसीलिए भेजा है।" [44]और वह यहूदिया प्रदेश
के सत्संग भवनों में प्रवचन देते रहे।

5

गुरु येशु के आज्ञा पालन से खाली जाल भर गए

[1]एक बार प्रभु येशु गनेसरत झील के किनारे पर खड़े थे और लोगों
की भीड़ परमात्मा के शब्द सुनने के लिए उन पर गिरि जा रही थी।
[2]प्रभु येशु ने झील के किनारे दो नावें देखीं जिनसे उतरकर मछुआरे
जाल धो रहे थे। [3]प्रभु येशु उनमें से एक नाव पर, जो शिमोन की थी,
चढ़ गए और कहा, “नाव को किनारे से कुछ दूर ले चलो।” तब वह
नांव में बैठकर लोगों को उपदेश देने लगे।

[4]जब प्रभु येशु ने लोगों को उपदेश देना खत्म किया तब शिमोन से
कहा, “नांव गहरे पानी में ले चलो और मछली पकड़ने के लिए वहाँ
जाल डालो।”

[5]शिमोन ने उत्तर दिया, “स्वामी, हमने रातभर कोशिश की, पर एक भी
मछली नहीं पकड़ सके। फिर भी आपके कहने पर दुबारा जाल डालता
हूँ।” [6]जाल डालने पर बहुत मछलियाँ उसमें आ गईं, यहाँ तक कि उनके
जाल फटने लगे। [7]इस पर मछुआरों ने अपने साथियों को, जो दूसरी नाव
पर थे, इशारा किया कि वे आकर उनकी मदद करें। वे आये और उन्होंने
दोनों नावें मछलियों से इतनी भर लीं कि वे डूबने लगीं।

[8]यह देखकर शिमोन पतरस प्रभु येशु के चरणों में गिर पड़ा और
बोला, “प्रभुजी, कृपा कर मेरे पास से चले जाइए। आप पवित्र हैं
और मैं एक पापी मनुष्य हूँ।” [9]क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने
से पतरस और अन्य मछुआरे हैरान थे। [10]शिमोन के साथी मछुआरे
याकोब और योहन भी जो ज़बदियाह के पुत्र थे, हैरान रह गए थे।

प्रभु येशु ने शिमोन से कहा, “डरो मत, आज तक तुम्हारा काम
मछली पकड़ना था। लेकिन अब से मैं तुम्हें लोगों को परमात्मा की
शरण में लाना सिखाऊँगा।”

[11]उन्होंने नावों को किनारे पर लगा दिया और वे मछली पकड़ने का
सारा समान वहीं छोड़कर प्रभु येशु के शिष्य बनकर उनके पीछे चल दिए।

प्रभु येशु का कोढ़ी को स्वस्थ करना

[12]जब प्रभु येशु किसी नगर में थे, एक व्यक्ति आया जिसके पूरे शरीर
में कोढ़ फैल चुका था। वह प्रभु येशु को देखकर उनके चरणों पर

गिरकर उनसे विनती करने लगा, “प्रभु, यदि आप चाहें तो मुझे ठीक
कर सकते हैं।”
[13]प्रभु येशु ने हाथ बढ़ाया और उसे छूकर कहा, “मैं चाहता हूँ, तुम
ठीक हो जाओ।” उसी समय उसका कोढ़ दूर हो गया। [14]प्रभु येशु ने
उसे आदेश दिया, “इसके बारे में किसी से न कहना, परंतु जाओ, अपने
आपको पुरोहित को दिखाओ कि तुम ठीक हो गए हो। और परमात्मा
के प्रवक्ता मोशे के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ाओ जिससे लोगों को
भी यह मालूम हो जाए कि तुम ठीक हो गए हो।”
[15]प्रभु येशु की खबर और भी फैलती गई और बड़ी भीड़ उनके
उपदेश सुनने और बीमारों को ठीक कराने के लिए उनके पास इकट्ठी
होने लगी। [16]लेकिन प्रभु येशु अक्सर भीड़ को छोड़ प्रार्थना करने के
लिए ऐसी जगह जाते थे जहाँ कोई न हो।

लकवे का रोगी चलने फिरने लगा

[17]एक दिन प्रभु येशु उपदेश दे रहे थे और बहुत से लोग उनके पास
आ रहे थे, क्योंकि प्रभु परमात्मा ने उन्हें लोगों को स्वस्थ करने की
शक्ति दी थी। कुछ फरीसी धार्मिक पंथ के लोग और कुछ धर्मगुरु प्रभु
येशु के पास बैठे थे। वे सारे गलील प्रदेश और यहूदिया के हर गाँव से,
और यरूशलम शहर से भी आये।
[18]इसी समय एक लकवे के बीमार को उसके दोस्त चटाई पर लेकर
आए। वे उसे घर के अंदर लाने और प्रभु येशु तक पहुँचाने की कोशिश
करने लगे। [19]परंतु जब लोगों की भीड़ के कारण उसे अंदर लाने का
कोई उपाय न सूझा, तो वे छत पर चढ़ गए। उन्होंने मिट्टी की कुछ
कच्ची टाइलों को हटाकर बिमार व्यक्ति को जो चटाई पर लेटा था
लोगों के बीच में प्रभु येशु के सामने उतार दिया। [20]उसकी और उसके
दोस्तों की आस्था को देखकर प्रभु येशु ने उस मनुष्य से कहा, “तुम्हारे
बुरे कर्मों का खाता मिटा दिया गया है।”
[21]इस पर धर्मगुरु और फरीसी मन में सोचने लगे, “इस आदमी को
इस तरह बात करने का कोई अधिकार नहीं है। यह परमात्मा का
अपमान करता है। परमात्मा के अलावा और कौन है जो बुरे कर्मों का
खाता मिटा सकता है?”

[22]उनके मन के विचारों को जानकर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तुम
लोग अपने मन में ऐसा क्यों सोच रहे हो? [23]क्या कहना ज़्यादा आसान
है, ‘तुम्हारे बुरे कर्मों का खाता मिट गया,’ या ‘उठो और चलो-फिरो?’
[24]मैं चाहता हूँ कि तुम लोग समझ जाओ कि तेजस्वी मानव-पुत्र को
पृथ्वी पर बुरे कर्मों का खाता मिटाने का अधिकार है।” तब उन्होंने
लकवे के बीमार को देखा और बोले, “उठो, अपनी चटाई उठाओ
और अपने घर जाओ!”

[25]वह उन लोगों के सामने उसी समय उठा और जिस चटाई पर
वह पड़ा था, उसे उठाकर परमात्मा का गुणगान करता हुआ अपने
घर चला गया। [26]जो लोग वहाँ थे सबके सब हैरान रह गए। उन्होंने
परमात्मा का गुणगान किया और बड़ी श्रद्धा से कहा, “आज हमने
अद्‌भुत चमत्कार देखा है।”

प्रभु येशु ने बेईमान टैक्स लेने वाले का जीवन बदल दिया

[27]इसके बाद प्रभु येशु घर से बाहर गए तो उन्होंने एक टैक्स लेने वाले
को टैक्स चौकी पर बैठे हुए देखा। उसका नाम लेवी था। प्रभु येशु ने
उससे कहा, “मेरे शिष्य बन जाओ और मेरे पीछे चलो।” [28]लेवी उठा
और टैक्स लेने का काम छोड़कर प्रभु येशु का शिष्य बन गया।

[29]इसके कुछ समय बाद लेवी ने प्रभु येशु के लिए अपने घर में बड़ी
दावत रखी। बहुत-से टैक्स लेने वाले और अन्य मेहमान भी दावत
में शामिल हुए। [30]इस पर फरीसी और उनके पंथ के कुछ धर्मगुरु
बड़बड़ाने लगे और प्रभु येशु के शिष्यों से बोले, “तुम लोग बेईमान
टैक्स लेने वालों और पापियों के साथ क्यों उठते-बैठते हो?”

[31]प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “स्वस्थ लोगों को डॉक्टर की ज़रूरत
नहीं, पर बीमारों को होती है। [32]मैं नेक लोगों का मन परमात्मा की ओर
लगाने नहीं आया, परंतु मैं पापियों का मन परमात्मा की ओर लगाने के
लिए आया हूँ।”

नए धार्मिक विचारों को जीवन में भरना

[33]कुछ लोगों ने प्रभु येशु से कहा, “समर्पण स्नान दाता योहन के
शिष्य तो नियमित रूप से उपवास रखते और प्रार्थना में लगे रहते

हैं और फरीसियों के शिष्य भी ऐसा ही करते हैं, पर आपके शिष्य
उपवास नहीं रखते।”
[34]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जब लोग दूल्हे के साथ शादी में होते हैं
तो वे उपवास के बारे में सोचते भी नहीं हैं। [35]पर वह समय आएगा
जब दूल्हा उनसे छीन लिया जाएगा, तब उस समय वे उपवास
करेंगे।”
[36]प्रभु येशु ने एक उदाहरण देते हुए कहा, “कोई भी नए कपड़े का
टुकड़ा पुराने कपड़े में नहीं लगाता। यदि वह ऐसा करता है, तो नया
कपड़े का टुकड़ा धोए जाने पर सिकुड़ जाता है और पुराने कपड़े को
फाड़ देता है। दोनों टुकड़े आपस में मेल नहीं खाते।
[37]“इसी तरह कोई भी नए अंगूर-रस को पुरानी और सख्त मश्कों में
नहीं रखता है। यदि वह इसे रखेगा, तो नया अंगूर-रस झाग के साथ
उफनता जाएगा और पुरानी और सख्त मश्कों को फाड़ देगा। और
सारा अंगूर-रस बिखर जाएगा। [38]नए अंगूर-रस को नए नरम और
लचीली मश्कों में रखा जाना चाहिए। [39]जब कोई पुराने अंगूर-रस के
स्वाद को चख लेता है, तो वह नए अंगूर-रस को पसंद नहीं करता,
क्योंकि वह कहता कि पुराना ही बेहतर है।”

6

धार्मिक नियमों का उद्देश्य

[1]एक आराम-दिवस के मौके पर प्रभु येशु खेतों में से होकर जा
रहे थे तो उनके शिष्य अनाज की बालें तोड़ने* और दानों को हाथ से
मसल-मसल कर खाने लगे। [2]कुछ फरीसियों ने कहा, “तुम लोग ऐसा
काम क्यों कर रहे हो जिसे आराम-दिवस पर करना मना है?”
[3]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “क्या तुमने परमात्मा-ग्रंथ में नहीं पढ़ा कि
जब राजा दाविद और उनके साथियों को भूख लगी तब राजा दाविद
ने क्या किया था? [4]वह परमात्मा के भवन में गए। उन्होंने परमात्मा
को अर्पित भेंट की रोटियाँ लीं, उन्होंने और उनके साथियों ने वे रोटियाँ

---

* **6:1** *अनाज की बालें तोड़ने* - भूखे यात्रियों को गेहूँ के दाने तोड़ने देना एक यहूदी रिवाज था (उपदेश 23:25)।

खाईं, जो केवल पुरोहित ही खा सकते थे।” [5]तब प्रभु येशु ने उनसे
कहा, “तेजस्वी मानव-पुत्र आराम-दिवस का भी मालिक है।”

प्रभु येशु ने आराम-दिवस पर एक व्यक्ति को स्वस्थ किया

[6]किसी दूसरे आराम-दिवस के मौके पर प्रभु येशु सत्संग भवन में
आकर उपदेश देने लगे। वहाँ एक मनुष्य था जिसका दायाँ हाथ पूरी
तरह से सूख गया था और उस हाथ से कुछ काम नहीं होता था।
[7]धर्मगुरु और फरीसी इस ताक में थे कि प्रभु येशु इस व्यक्ति को
आराम-दिवस पर स्वस्थ करें और वे उन पर आरोप लगा सकें।
[8]प्रभु येशु उनके विचारों को जानते थे, इसलिए सूखे हाथ वाले मनुष्य
से बोले, “उठो, सब के बीच में खड़े हो जाओ।” वह उठकर खड़ा हो
गया। [9]तब प्रभु येशु ने धर्मगुरुओं से कहा, “मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता
हूँ, ‘आराम-दिवस पर लोगों की भलाई करना सही है या बुराई करना?
किसी के जीवन को बचाना सही है या मरते हुए व्यक्ति को छोड़ देना
सही है?’”
[10]फिर उन्होंने अपने पास खड़े सब लोगों को देखने के बाद उस
सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, “अपना हाथ बढ़ाओ।” उसने ऐसा ही
किया और उसका सूखा हाथ बिल्कुल ठीक हो गया।
[11]इसको देखकर धर्मगुरु और फरीसी गुस्से से पागल हो गए और
आपस में विचार करने लगे कि प्रभु येशु का क्या किया जाए?

राजदूतों का चुना जाना

[12]उस समय के दौरान प्रभु येशु पहाड़ पर प्रार्थना करने गए और
रात भर परमात्मा से प्रार्थना करते रहे। [13]जब दिन निकला तब प्रभु
येशु ने अपने शिष्यों को बुलाया और उनमें से बारह को चुनकर
उन्हें अपना राजदूत बनाया। [14]इन सब के नाम इस प्रकार है, शिमोन
जिसका नाम उन्होंने “पतरस” रखा, शिमोन का भाई अंदरियास,
याकोब, योहन, फिलिपस, बरतोलोमै, [15]मत्तियाह, थोमस,
हलफियस का पुत्र याकोब, शिमोन जो “देशभक्त” कहलाता है,
[16]याकोब का पुत्र यहूदा और यहूदा इस्करियोत जो विश्वासघाती
निकला।

प्रभु येशु ने बड़ी भीड़ को शिक्षा दी

[17]प्रभु येशु अपने बारह राजदूतों के साथ पहाड़ से उतरकर मैदान में
खड़े हो गए जहाँ उनके बहुत-से अन्य शिष्य और लोगों की बड़ी भीड़
उनसे मिलने आई थी। वे लोग पूरे यहूदिया प्रदेश, यरूशलम शहर
और समुद्र तट पर बसे सोर तथा सीदोन शहरों से आए थे [18]कि उनका
उपदेश सुनें और अपनी बीमारियों से स्वस्थ हों। इन लोगों के साथ
आए अशुद्ध आत्माओं से जकड़े व्यक्ति भी ठीक हो रहे थे। [19]सब
लोग प्रभु येशु को छूने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उनसे शक्ति
निकलकर सबको स्वस्थ कर रही थी।

खुशी का रहस्य

[20]प्रभु येशु ने अपने शिष्यों की ओर देख कर कहा,
"खुश हो तुम जो गरीब हो,
क्योंकि तुम्हें परमात्मा का साम्राज्य तुम्हारा है।
[21] खुश हो तुम जो अभी भूखे हो,
क्योंकि तुम्हारे पास खाने के लिए बहुत कुछ होगा।
खुश हो तुम जो अब रोते हो,
क्योंकि तुम ज़रूर हँसोगे।

[22]"खुश हो तुम जब लोग तुमसे इसलिए नफरत करें, तुम्हें ठुकरा
दें, तुम्हारा अपमान करें और नाम बदनाम करें, क्योंकि तुम तेजस्वी
मानव-पुत्र के भक्त हो। [23]उस दिन खुशी मनाना और उछलना-कूदना,
क्योंकि तुम्हारे द्वारा ये सब दुख झेले जाने के कारण परमात्मा से
परमस्वर्ग में तुम्हें बड़ा इनाम मिलेगा। तुम याद रखो कि उनके बाप
दादाओं ने भी अपने समय में परमात्मा के प्रवक्ताओं के साथ ऐसा ही
बुरा व्यवहार किया था।

[24] परंतु मातम मनाओ तुम जो अमीर हो,
क्योंकि इस पृथ्वी पर तुम सुख भोग चुके हो।
[25] मातम मनाओ तुम जिनके पास इस पृथ्वी पर
खाने के लिए बहुत है,
क्योंकि एक दिन तुम भूखे होगे।
मातम मनाओ तुम जो अब हँसते हो,

क्योंकि एक दिन तुम दुख उठाओगे और रोओगे ज़रूर।
[26] मातम मनाओ तुम जब सब लोग तुम्हारी तारीफ करते हैं,
क्योंकि उनके बाप दादाओं ने
झूठे प्रवक्ताओं की भी तारीफ की थी।”

दुश्मनों से प्रेम

प्रभु येशु ने अपनी बात जारी रखी, [27] “परंतु जो सच में जानना चाहते
हैं, मैं तुमसे कहता हूँ, तुम अपने दुश्मनों से प्रेम करो। जो तुमसे नफरत
करते हैं, उनकी भलाई करो। [28] जो तुम्हें शाप देते हैं, उन्हें आशीर्वाद
दो। जो तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो।
[29] जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारता है, उसकी ओर दूसरा भी फेर
दो। जो तुम्हारा कोट छीन रहा है, उसे अपना कुर्ता भी लेने दो। [30] जो
कोई तुमसे माँगे, उसे दो, और जो कोई तुम्हारी चीज़ छीन ले, उससे
फिर न माँगो। [31] जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ व्यवहार करें,
वैसा ही व्यवहार तुम उनके साथ करो।

[32] “यदि तुम उन्हीं से प्रेम करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो इसमें
क्या बड़ी बात है? क्योंकि बुरे लोग भी अपने से प्रेम करने वालों
के साथ प्रेम करते हैं। [33] यदि तुम उन्हीं की भलाई करते हो जो तुम्हारे
साथ भलाई करते हैं, तो इसमें क्या बड़ी बात है? ऐसा तो बुरे लोग भी
करते हैं। [34] यदि तुम उन्हें ही पैसे की मदद करते हो जिनसे तुम्हें उम्मीद
है कि वह वापस कर देंगे, तो इसमें भी क्या बड़ी बात है? बुरे लोग भी
इस आशा से पैसा देते हैं कि उतना ही फिर से प्राप्त कर लें।

[35] “परंतु तुम अपने दुश्मनों से प्रेम करो, उनकी भलाई करो और फिर
से पाने की आशा न रखकर+ उधार दो। तब तुम्हारा इनाम बड़ा होगा
और तुम परमेश्वर की संतान कहलाओगे, क्योंकि वह उन पर भी
कृपा करते हैं जो उनकी आशीषों के लिए धन्यवाद नहीं देते और बुरे
हैं। [36] दयालु बनो, जैसे तुहारे पिता परमात्मा दयालु हैं।”

दूसरों पर दोष न लगाओ

[37] प्रभु येशु ने आगे कहा, “तुम किसी के अच्छे और बुरे होने का
न्याय मत करो। न्याय करना परमात्मा का काम है। हमेशा दूसरों में

गलती मत ढूँढ़ो और परमात्मा भी तुममें गलती नहीं ढूँढ़ेंगे। दूसरों के
पापों का हिसाब मत रखो, तो परमात्मा भी तुम्हारे पापों का हिसाब
नहीं रखेंगे। [38]यदि तुम दूसरों पर उदार हो, तो वे भी तुम पर उदारता
दिखाएँगे। तुमको दबा-दबाकर,* हिला-हिलाकर बाहर गिरता हुआ
वापस दिया जाएगा। जिस तराज़ू से तुम तौलते हो उसी से तुम्हारे लिए
भी तौला जाएगा।"

[39]प्रभु येशु ने लोगों से बात करते समय एक और उदाहरण दिया,
"क्या अंधा अंधे को रास्ता दिखा सकता है? इससे क्या दोनों ही गड्ढे
में न गिरेंगे? [40]शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता, पर पूरी शिक्षा पाकर
वह अपने गुरु जैसा बन सकता है।

[41]"तुम दूसरों की आँख में तिनका क्यों ढूँढ़ते हो जबकि अपनी आँख
में पड़ी मोटी लकड़ी पर तुम्हारा ध्यान नहीं जाता? [42]तुम्हारा जब अपनी
आँख में पड़ी मोटी लकड़ी पर ध्यान नहीं जाता तो तुम दूसरों से कैसे
कह सकते हो, 'आओ, मैं तुम्हारी आँख का तिनका निकाल दूँ?' ढोंगी!
पहले अपनी आँख में पड़ी मोटी लकड़ी निकाल लो, तभी तुम दूसरों की
आँख का तिनका निकालने के लिए ठीक-ठीक देख सकोगे।"

अच्छे पेड़ का अच्छा फल

प्रभु येशु ने कहा, [43]"अच्छे पेड़ पर बुरे फल नहीं लगते और न बुरे
पेड़ पर अच्छे फल। [44]हर एक पेड़ की पहचान उसके फल से होती
है। लोग कंटीले झाड़ियों से अंजीर और अंगूर का फल नहीं तोड़ते।
[45]अच्छा व्यक्ति अपने मन के अच्छे खजाने से अच्छी बातें निकालता
है और बुरा व्यक्ति अपने मन के बुरे भंडार से बुरी बातें। क्योंकि जो
मन में भरा है, वही मुँह पर आता है।"

आज्ञा-पालन का फल

प्रभु येशु ने आगे कहा, [46]"जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तब मुझे
'प्रभु' क्यों कहते हो? [47]मैं तुम्हें बताता हूँ कि जो मेरे पास आता है और

---

* **6:38** *दबा-दबाकर* - यह उस उदार व्यापारी का विवरण है जो अपने अच्छे ग्राहकों को अधिक मात्रा में देता है। तुम्हारा दान तुम्हारे पास भरपूरी के साथ वापस आ जाएगा और जिस प्रकार से हम दूसरों पर दया करते हैं, उसी प्रकार से हम पर भी दया की जाएगी।

मेरे उपदेश को सुनता और उन पर चलता है, वह किसके समान है?
48वह ऐसे व्यक्ति के समान है जिसने घर बनाते समय गहरी खुदाई
करके मज़बूत जगह पर नींव डाली। जब बाढ़ आई और नदी की तेज़
लहरें घर से टकराईं तब वे उसे हिला न सकीं, क्योंकि वह मज़बूत
बना था। 49परंतु यदि कोई मेरा उपदेश सुनता तो है, पर उस पर चलता
नहीं तो वह उस व्यक्ति के समान है जिसने बिना नींव के डाले घर
बनाया। जब तेज़ बारिश से जलभराव के कारण लहरें घर से टकराईं
जिससे घर तुरंत गिर पड़ा और पूरी तरह से बर्बाद हो गया।”

7

दूसरे समाज में अद्‌भुत आस्था

1जब प्रभु येशु ये सब उपदेश लोगों को सुना चुके, तब वह
कफरनहूम शहर में आए। 2वहाँ किसी रोम सेना-अधिकारी का बहुत
प्रिय सेवक बीमार था और मृत्यु के नज़दीक पहुँच चुका था। 3जब
सेना-अधिकारी ने प्रभु येशु के बारे में सुना, उसने यहूदी समाज के बड़ों
को उनके पास यह विनती करने के लिए भेजा कि वह आने की कृपा
करें और उसके सेवक को ठीक करें। 4वे लोग प्रभु येशु के पास आए
और विनती करने लगे, “सेना-अधिकारी एक अच्छा आदमी है आप
उसकी मदद ज़रूर करें, 5क्योंकि वह हम यहूदी लोगों से प्रेम करता है
और उसी ने हमारे लिए सत्संग भवन बनवाया है।”

6इस पर प्रभु येशु उनके साथ चले गए। जब वह सेना-अधिकारी
के घर से ज़्यादा दूर नहीं थे, तब उस सेना-अधिकारी ने अपने मित्रों से
कहला भेजा, “प्रभुजी, कष्ट न कीजिए, मैं इस योग्य नहीं कि आप मेरे
घर आएँ। 7और मैंने अपने को इस काबिल भी नहीं समझा कि आपके
पास आऊँ। आप वहीं से आदेश दे दीजिए तो मेरा सेवक ज़रूर स्वस्थ
हो जाएगा। 8मैं स्वयं बड़े अधिकारियों के अधीन हूँ और सैनिक मेरे
अधीन हैं। मैं एक सैनिक से कहता हूँ, ‘जा’ तो वह जाता है। दूसरे से
कहता हूँ, ‘आ’ तो वह आता है। और अपने सेवक से कहता हूँ, ‘यह
कर’ तो वह कर देता है।” 9यह सुनकर प्रभु येशु को उस पर हैरानी हुई
और उन्होंने अपने पीछे आने वाली भीड़ की ओर मुड़कर कहा, “मैं
तुमसे कहता हूँ, मैंने ऐसी आस्था इज़राएल के लोगों में भी नहीं देखी।”

[10]सेना-अधिकारी द्वारा भेजे गए लोगों ने घर लौटने पर बीमार सेवक को ठीक पाया।

विधवा के बेटे का ज़िन्दा होना

[11]इसके कुछ ही समय+ बाद प्रभु येशु नाईन नगर को गए, और उनके साथ उनके शिष्य और एक बड़ी भीड़ जा रही थी। [12]जब प्रभु येशु नगर-द्वार पर पहुँचे, लोग एक मृत युवक को अंतिम संस्कार के लिए नगर के बाहर ले जा रहे थे। वह अपनी विधवा माँ का इकलौता बेटा था। नगर की एक बड़ी भी उस विधवा माँ के साथ थी। [13]विधवा को देखकर प्रभु येशु का मन दया से भर गया। उन्होंने उससे कहा, “रोओ मत!” [14]और आगे बढ़कर अरथी को छुआ। कंधा देनेवाले रुक गए। तब प्रभु येशु ने कहा, “युवक, मैं तुमसे कहता हूँ, उठ जाओ!” [15]मृत युवक उठ बैठा और बात-चीत करने लगा। प्रभु येशु ने युवक की माँ से कहा अपने बेटे को घर ले जाओ।

[16]सब लोगों पर यह देखकर डर छा गया और वे यह कह कर परमात्मा का गुणगान करने लगे, “हमारे बीच एक महान परमात्मा के प्रवक्ता आए हैं! परमात्मा अपने लोगों को बचाने आए हैं!” [17]प्रभु येशु के बारे में यह खबर पूरे यहूदिया प्रदेश और आसपास के सारे इलाके में फैल गई।

परमात्मा के प्रवक्ता से बड़ा

[18]समर्पण-स्नान दाता योहन के शिष्यों ने अपने गुरु को इन सब बातों की खबर दी। [19]यह बात सुनकर योहन ने अपने शिष्यों में से दो को बुलाया और प्रभु येशु के पास यह पूछने के लिए भेजा, “जिन मुक्तिदाता का हम इंतजार कर रहे थे, क्या वह आप ही हैं या हम किसी दूसरे का इंतज़ार करें?”

[20]शिष्यों ने प्रभु येशु के पास आकर कहा, “समर्पण-स्नान दाता योहन ने हमको आपके पास यह पूछने के लिए भेजा है कि जो आने वाले थे, वह क्या आप ही हैं, या हम किसी दूसरे का इंतज़ार करें?”

[21]ठीक उसी समय प्रभु येशु ने अनेक लोगों को उनकी बीमारियों, पीड़ाओं और अशुद्ध आत्माओं से स्वस्थ किया और अनेक अंधों

को दृष्टि प्रदान की। [22]तब प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “जाओ, जो कुछ
तुमने देखा और सुना है, उसकी खबर योहन को दो कि अंधे देखते हैं,
लँगड़े चलते हैं, कोढ़ी स्वस्थ किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं, मरे हुए
लोग ज़िन्दा किए जाते हैं और गरीबों को शुभ संदेश सुनाया जाता है।
[23]परमात्मा उसे आशीर्वाद दें जो मानता है कि मैं वही मुक्तिदाता हूँ जो
आने वाला था।”

[24]योहन द्वारा भेजे गए शिष्यों के लौट जाने पर प्रभु येशु योहन के बारे
में लोगों से कहने लगे, “तुम सुनसान जगह में क्या देखने गए थे? क्या
हवा से हिलती हुई लंबी घास को? [25]तो बताओ तुम क्यों और क्या
देखने निकले थे? ऐसे मनुष्य को जो कीमती कपड़े पहनता है? जो
लोग महंगे कपड़े पहनते और ऐशो-आराम का जीवन बिताते हैं, वे
महलों में रहते हैं। [26]अब बताओ तुम क्या देखने निकले थे? परमात्मा
के प्रवक्ता को देखने? हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ, परमात्मा के प्रवक्ता से
भी महान व्यक्ति को। [27]योहन के बारे में परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा है,

‘देखो, मैं तुम्हारे आगे अपना दूत भेज रहा हूँ,
वह लोगों को तुम्हारा स्वागत करने के लिए तैयार करेगा।’

[28]“मैं तुमसे कहता हूँ, जो स्त्रियों से पैदा हुए हैं, उनमें योहन से महान
कोई परमात्मा के प्रवक्ता+ नहीं। फिर भी परमात्मा के साम्राज्य में छोटे
से छोटा व्यक्ति योहन से अधिक महान है।”

[29]जब सभी लोगों ने, यहाँ तक कि टैक्स लेने वालों ने भी प्रभु येशु
के संदेश सुने, तो उन सब ने योहन का समर्पण-स्नान लेने के द्वारा यह
स्वीकार किया कि परमात्मा की योजना सही है। [30]परंतु फरीसियों और
धर्मगुरुओं ने परमात्मा की योजना को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि
उन्होंने योहन से समर्पण-स्नान नहीं लिया था।

[31]प्रभु येशु ने आगे कहा, “मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किससे
करूँ? ये किसके समान हैं? [32]ये लोग गलियों में खेलते हुए बच्चों के
समान हैं जो एक-दूसरे को पुकारकर कहते हैं,

‘हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी पर खुशी का गीत बजाया,
पर तुम न नाचे।

7:27 मलाकी 3:1

हमने दुख भरे गीत गाए,
पर तुम न रोए।’
33“योहन आया, और उसने उपवास किया, और अंगूर रस नहीं पिया,
और इस पर भी तुम कहते हो, ‘योहन में अशुद्ध आत्मा है।’ 34परंतु
तेजस्वी मानव-पुत्र आए और उन्होंने खाया और पिया, और तुमने कहा,
‘इस आदमी को देखो! पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, बेईमान टैक्स लेने
वालों और पापियों का दोस्त।’ 35हालाँकि, परमात्मा की बुद्धि का सही
परिणाम उन लोगों में दिखाई देता है जो इसका इस्तेमाल करते हैं।”

बदनाम औरत के पापों का हिसाब मिट जाना

36एक फरीसी पंथ के व्यक्ति ने प्रभु येशु को अपने यहाँ खाने पर
बुलाया। वह उसके घर गए और भोजन करने के लिए बैठे। 37उस
नगर की एक पापी औरत को यह मालूम होने पर कि प्रभु येशु फरीसी
के यहाँ भोजन करने बैठे हैं, कीमती संगमरमर के एक मर्तबान में
खुशबूदार तेल लेकर आई। 38वह रोती हुई प्रभु येशु के पास खड़ी
हो गई और अपने आँसुओं से उनके चरण धोने और अपने बालों से
उन्हें पोंछने लगी। वह उनके चरणों का चुंबन करती और चरणों पर
खुशबूदार तेल लगा रही थी।

39यह देखकर वह कट्टर फरीसी जिसने प्रभु येशु को निमंत्रण दिया था,
सोचने लगा, “यदि यह परमात्मा के प्रवक्ता होते तो जान जाते कि यह
औरत जो उन्हें छू रही है, वह पापी है।”

40इस पर प्रभु येशु ने उस फरीसी से कहा, “शिमोन, मुझे तुमसे कुछ
कहना है।”

शिमोन बोला, “गुरुजी, कहिए।”

41प्रभु येशु ने कहा, “किसी महाजन के दो मनुष्य कर्ज़दार थे। एक
पर उसका पाँच सौ चाँदी के सिक्कों का कर्ज़ था और दूसरे पर पचास
का। 42इन दोनों के पास कर्ज़ चुकाने के लिए कुछ नहीं था, इसलिए
उसने दोनों का कर्ज़ माफ कर दिया। अब उनमें से कौन उसकी ज़्यादा
तारीफ करेगा?”

43शिमोन ने उत्तर दिया, “मेरी समझ में वह, जिसका अधिक कर्ज
माफ हुआ, उसकी अधिक तारीफ़ करेगा।”

प्रभु येशु ने कहा, “तुम्हारा उत्तर सही है।” [44]तब उस स्त्री की ओर
मुड़कर प्रभु येशु ने शिमोन से कहा, “इस स्त्री को देखो? मैं तुम्हारे घर
आया* पर तुमने तो मेरे पैर धोने के लिए पानी तक न दिया। लेकिन इसने
आँसुओं से मेरे पैर भिगोए और अपने बालों से उन्हें पोंछा। [45]तुमने चुंबन
से मेरा स्वागत नहीं किया, परंतु जब से यह स्त्री घर के अंदर आई है,
इसने मेरे पैरों को चूमना नहीं छोड़ा। [46]तुमने मेरे सिर पर कोई भी तेल
नहीं लगाया, परंतु इसने मेरे पैरों पर महंगा खुशबूदार तेल लगाया है।
[47]“इस कारण मैं तुमसे कहता हूँ, इसके बुरे कर्मों का हिसाब, जो
बहुत था, मिटा दिया गया है और इसलिए यह मुझसे बहुत प्रेम करती
है। परंतु जिसके बुरे कर्म थोड़े ही थे उसके बुरे कर्मों का हिसाब भी
थोड़ा ही मिटाया गया है, वह प्रेम भी थोड़ा करता है।” [48]तब प्रभु येशु ने
स्त्री से कहा, “तुम्हारे बुरे कर्मों का खाता मिटा दिया गया है।”
[49]जो लोग उनके साथ बैठे थे, वे आपस में कहने लगे, “यह कौन है
जो बुरे कर्मों का खाता मिटा सकता है?”
[50]प्रभु येशु ने उस स्त्री से कहा, “तुम्हारी आस्था मुझ में है, इसलिए
तुमको मुक्ति मिल गयी है। खुशी से जाओ।”

8

महिला भक्तों द्वारा सहायता

[1]इसके बाद प्रभु येशु परमात्मा के साम्राज्य के शुभ संदेश सुनाने और
फैलाने के लिए नगर-नगर और गाँव-गाँव में घूमने लगे। उनके साथ
बारह राजदूत थे। [2]उनमें कुछ महिलाएँ भी थीं जो अशुद्ध आत्माओं
और बीमारियों से ठीक हुई थीं जिनके नाम थे मगदलवासी मरियम,
जिसे सात अशुद्ध आत्माओं से मुक्ति मिली थी, [3]योआना जो राजा
हेरोदेस के अफसर खूज़ा की पत्नी थी, शोशाना और बहुत सी अन्य
महिलाएँ थीं जो अपनी धन-संपत्ति में से प्रभु येशु और उनके शिष्यों की
मदद करती थीं।

---

* **7:44** *मैं तुम्हारे घर आया* - जब कोई मेहमान घर पर आता था तो उसे सबसे पहले पाँव धोने के लिए पानी दिया जाता था, क्योंकि लोग या तो नंगे पाँव आते थे या फिर सैंडल पहनकर जिसके कारण उनके पाँव में काफी धूल होती थी। मेहमानों का स्वागत गालों पर प्यार करके भी किया जाता था और खास मेहमानों के सिर पर जैतून का तेल भी उंडेला जाता था।

बीज, मिट्टी और आस्था के बीच सम्बन्ध

4जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हो रही थी और अलग-अलग नगरों से लोग
प्रभु येशु के पास आ रहे थे तब प्रभु येशु ने एक कहानी सुनाई।
5"एक किसान बीज बोने निकला। बोते समय कुछ बीज रास्ते पर
गिरे जो पैरों से रौंदे गए और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। 6और
कुछ बीज पथरीली ज़मीन पर गिरे और नमी न होने के कारण उगते ही
सूख गए। 7कुछ और बीज कंटीली झाड़ियों के बीच गिरे और कंटीली
झाड़ियाँ उनके साथ-साथ बढीं और उन्हें फलने-फूलने नहीं दिया। 8पर
कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे और बहुत मात्रा में फसल हुई।"
यह कहकर प्रभु येशु ऊँची आवाज़ में बोले, "जिसके कान खुले हों
वह सुन ले!"
9प्रभु येशु के शिष्यों ने उनसे पूछा, "इस कहानी का क्या अर्थ है?"
10उन्होंने कहा, "तुम तो परमात्मा के साम्राज्य के रहस्यों को समझ
चुके हो, पर मैं दूसरों को इन रहस्यों के बारे में साधारण कहानी के
माध्यम से बताता हूँ, ताकि परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह की यह
भविष्यवाणी पूरी हो,

'वे आँखों से देखेंगे तो,
पर संभव है कि वे मन की आँखों से देख न पाएँ।
वे सुनेंगे तो
पर संभव है कि वे मन से समझ न पाएँ।'

11"कहानी का यह अर्थ है कि बीज परमात्मा का संदेश है। 12रास्ते
पर गिरे हुए बीज वे लोग हैं जिन्होंने संदेश सुना है, पर शैतान आकर
संदेश उनके मन से निकाल ले जाता है कि कहीं ऐसा न हो कि वे
आस्था रखें और अपने पापों के दंड से बच जाएँ। 13पथरीली ज़मीन पर
गिरे हुए बीज वे हैं जो संदेश सुनकर उसे खुशी से स्वीकार करते हैं,
पर उनमें जड़ें गहरी नहीं होतीं। वे कुछ समय के लिए आस्था रखते हैं,
पर परेशानियाँ आने पर आस्था छोड़कर पीछे हट जाते हैं।
14"काँटों के बीच गिरे हुए बीज वे हैं जिन्होंने संदेश को सुना है, पर
आगे चलकर चिंताओं, धन-संपत्ति और जीवन के सुखभोग में फंसे रहने

8:10 यशायाह 6:9

के कारण संदेश उनमें फल-फूल नहीं पाया। [15]और अच्छी भूमि पर गिरे
हुए बीज वे लोग हैं जो परमात्मा के संदेश को सुनते हैं और उसको
अपने सच्चे और अच्छे मन में रखकर उस पर चलते हैं और निरंतर
बहुत-सा फल लाते रहते हैं।”

प्रकाश में सब साफ दिखता है

[16]प्रभु येशु ने आगे कहा, “कोई भी दीपक जलाकर उसे बर्तन से
नहीं ढकता और न उसे पलंग के नीचे रखता है। घर में दीपक हमेशा
ऊँचे स्थान पर रखा जाता है ताकि लोगों को तेज़ रोशनी मिलती रहे।
[17]क्योंकि कोई चीज़ छिपी नहीं है जिसे प्रकट न किया जाएगा, और
ऐसी कोई गुप्त बात नहीं जिसे सबके सामने न लाया जाएगा। [18]तो इस
संदेश को तुम सावधानी से सुनो, क्योंकि जिसके पास है, उसे और
दिया जाएगा और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा
जो वह सोचता है कि उसका है।”

सच्चे नाते रिश्तेदार

[19]प्रभु येशु की माता और भाई उनसे मिलने आए, पर भीड़ के कारण
मिल न सके। [20]प्रभु येशु से किसी ने कहा, “आपकी माता और आपके
भाई बाहर खड़े हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।”

[21]प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया, “मेरी माँ और मेरे भाई वे सभी हैं जो
परमात्मा के संदेश को सुनते हैं और उसके अनुसार जीवन जीते हैं।”

प्रभु का शिष्यों को डाँटना और तूफान का थामना

[22]एक दिन प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, “आओ, हम झील के
पार चलें।” इसलिए वे सब नाव में बैठकर चल दिए। [23]जब नाव चल
रही थी, प्रभु येशु को नींद आ गई। इसी बीच झील में तूफान आ गया।
नाव में पानी भरने लगा और शिष्य संकट में पड़ गए।

[24]शिष्य प्रभु येशु के पास जाकर और उन्हें जगा के उनसे कहने लगे,
“स्वामी, स्वामी, हम डूब रहे हैं!”

तो प्रभु येशु उठे और उन्होंने तूफान और शक्तिशाली लहरों को
थम जाने का आदेश दिया। लहरें और हवाएँ थम गईं और सब शांत

हो गया। [25]तब प्रभु येशु शिष्यों से बोले, "बस, इतनी ही आस्था है तुम्हारी?"

पर वे डर और हैरानी से आपस में कहने लगे, "किस तरह के व्यक्ति हैं यह, जो हवा और जल को आदेश देते हैं और वे इनकी बात मान लेते हैं?"

बहुत अशुद्ध आत्माओं से ग्रस्त व्यक्ति का जीवन बदल जाना

[26]तब प्रभु येशु और उनके शिष्य नाव से गिरासेन* के इलाके में
पहुँचे, जो गलील प्रदेश के सामने दूसरे किनारे पर है। [27]जैसे ही प्रभु
येशु किनारे पर उतरे, उन्होंने उस नगर के एक मनुष्य को देखा जिसमें बहुत सी अशुद्ध आत्माएँ थीं। वह नंगा रहता था और घर में न रहकर कब्रिस्तान में रहा करता था।

[28-29]अशुद्ध आत्मा बार-बार उस मनुष्य को पकड़ लेती थी। लोग जंजीरों और बेड़ियों से बाँधकर उसकी चौकीदारी करते थे, परंतु वह जंजीरों को तोड़ देता था और अशुद्ध आत्मा उसे सुन सान जगह में भगा ले जाती थी। वह प्रभु येशु को देखते ही चिल्लाया, उनके सामने जा गिरा और ऊँची आवाज़ में बोला, "हे येशु, परमेश्वर के पुत्र! आपका मुझसे क्या सम्बन्ध? मैं विनती करता हूँ कि मुझे सज़ा न दीजिएगा।" उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि प्रभु येशु अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से निकल जाने की आज्ञा दे रहे थे।

[30]प्रभु येशु ने अशुद्ध आत्मा से पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

उसने उत्तर दिया, "विशाल सेना," क्योंकि उसमें अनेक
अशुद्ध आत्माएँ घुस आई थीं। [31]अशुद्ध आत्माएँ विनती करने
लगीं, "हमें उस गहरे गड्ढे में जाने का आदेश न दीजिए जहाँ हम अशुद्ध आत्माओं को सज़ा मिलेगी और हम वापस नहीं आ सकेंगी!"

[32]वहीं पहाड़ पर सूअरों का बड़ा झुंड चर रहा था। अशुद्ध आत्माओं ने विनती कि, "हमें सूअरों के अंदर जाने की आज्ञा दीजिए।" प्रभु येशु
ने आज्ञा दे दी। [33]तब अशुद्ध आत्माएँ उस मनुष्य से निकलकर सूअरों

---

* **8:26** *गिरासेन* - जो लोग यहूदी समाज से नहीं थे, वे इस इलाके में रहते थे।

में चली गईं और सूअरों का झुंड टीले से नीचे झील की ओर भागा
और डूब मरा।
[34]जो सूअरों को चरा रहे थे उन्होंने इस घटना को देखा और वे इसे
बताने के लिए अपने नगर और आस पास की जगहों की ओर भागे।
[35]इस पर लोग नगर से बाहर निकल कर आए कि देखें क्या हुआ है। वे
प्रभु येशु के पास आए और देखा कि जिस मनुष्य में से अशुद्ध आत्माएँ
निकल गई थीं, वह कपड़े पहने हुए है और शांत मन से प्रभु येशु के
चरणों में बैठा है। यह देखकर वे लोग हैरान रह गए। [36]जिन्होंने यह सब
देखा था, उन्होंने लोगों को बताया कि अशुद्ध आत्माओं से जकड़े हुए
मनुष्य को कैसे छुटकारा मिला। [37]तब गिरासेन इलाके के आसपास
के लोगों ने प्रभु येशु से कहा, “हमारे यहाँ से चले जाइए,” क्योंकि वे
बहुत डर गए थे। तो प्रभु येशु नाव में सवार हो गए और जब किनारे से
थोड़ी दूर ही गए थे।
[38]जिस मनुष्य से अशुद्ध आत्माएँ निकल गई थीं, वह किनारे पर
खड़ा होकर विनती करने लगा, “मुझे अपने साथ ले चलिए।”
परंतु प्रभु येशु ने उससे कहा, [39]“अपने घर लौट जाओ, और परमात्मा
ने जो इतना कुछ तुम्हारे लिए किया है, वह लोगों को बताओ।” तो
वह चला गया और पूरे नगर में बताने लगा कि प्रभु येशु ने उसके लिए
क्या किया है।

मृत्यु और बीमारी से छुटकारा

[40]प्रभु येशु झील की दूसरी ओर लौटे जहाँ लोग उनका इंतज़ार कर रहे
थे, और लोगों ने उनका स्वागत किया।
[41]याइरस नामक एक मनुष्य आया, जो यहूदी सत्संग भवन में धर्मगुरु
था, और वह प्रभु येशु के चरणों पर गिरकर विनती करने लगे कि वह
उसके घर चलें। [42]उसकी इकलौती बेटी, जिसकी उम्र बारह साल की
थी, मरने वाली थी।
जब प्रभु येशु उनके घर जा रहे थे तब वह भीड़ में दबे जा रहे थे।
[43]और भीड़ में एक स्त्री थी, जो मासिक धर्म में अधिक खून बहने से
पीड़ित थी। और इसको ऐसा बारह साल से हो रहा था वह अपनी
सारी धन-संपत्ति डॉक्टरों पर खर्च कर चुकी थी,+ पर उसे कोई स्वस्थ

नहीं कर सका था। [44]वह भीड़ में से प्रभु के पीछे आई और उसने प्रभु
येशु के कपड़े के सिरे को छू लिया। उसी समय उसका खून बहना बंद
हो गया। [45]तब प्रभु येशु ने लोगों से पूछा, "किसने मुझे छुआ?"

सबके मना करने पर, शिष्य पतरस ने+ कहा, "स्वामी, आप भीड़ से घिरे हुए हैं और लोग आपके ऊपर गिरे जा रहे हैं, और आप कह रहे हैं, 'किसने मुझे छुआ?'"+

[46]इस पर प्रभु येशु ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ ज़रूर है, क्योंकि
मैं जानता हूँ कि मुझमें से शक्ति निकली है।" [47]जब स्त्री ने देखा कि
वह छिपी नहीं रह सकती है तब वह काँपती हुई आई और प्रभु येशु के
चरणों पर गिर गई। उसने सब लोगों के सामने बताया कि उसने क्यों
उनको छुआ और कैसे वह तुरंत स्वस्थ हो गई। [48]प्रभु येशु ने कहा,
"बेटी, मुझ पर तुम्हारी आस्था ने तुम्हें ठीक किया है। खुश रहो।"

[49]वह यह कह ही रहे थे कि सत्संग भवन के मुखिया के घर से एक मनुष्य आया और याइरस से बोला, "आपकी बेटी मर चुकी है। गुरु को अब कष्ट न दीजिए।"

[50]प्रभु येशु ने यह सुनकर उत्तर दिया, "डरो मत। परमात्मा पर आस्था रखो, उसकी जान बच जाएगी।"

[51]याइरस के घर पहुँचने पर प्रभु येशु ने पतरस, योहन, याकोब और
लड़की के माता-पिता के अलावा अन्य किसी को अपने साथ घर के अंदर
नहीं आने दिया। [52]सब लोग रो रहे थे और लड़की के लिए शोक मना
रहे थे। प्रभु येशु ने उनसे कहा, "रोओ मत, वह मरी नहीं बल्कि सो रही
है।" [53]लोग यह जानते थे कि लड़की मर गई है, इसलिए वे प्रभु येशु पर
हँसने लगे। [54]परंतु प्रभु येशु ने उसका हाथ पकड़कर पुकारा, "बालिका,
उठ!" [55]लड़की ज़िन्दा हो गई और वह तुरंत उठ बैठी। और तब प्रभु येशु ने
आदेश दिया कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। [56]उसके माता-पिता हैरान हो
गए, परंतु प्रभु येशु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे यह घटना किसी को न बताए।

9

राजदूतों को कार्यभार

[1]प्रभु येशु ने अपने बारहों राजदूतों को एक साथ बुलाया और उन्हें सब अशुद्ध आत्माओं और बीमारियों को दूर करने की शक्ति और

अधिकार दिया। [2]तब प्रभु ने उन्हें परमात्मा के साम्राज्य के बारे में बताने
और बीमारों को स्वस्थ करने के लिए भेज दिया। [3]प्रभु येशु ने उनसे
कहा, “यात्रा में कुछ भी साथ न ले जाना, न लाठी, न झोला, न रोटी,
न पैसे और यहाँ तक की दो कुरते भी न रखना। [4]जिस घर में तुम्हारा
स्वागत हो, विदा होने तक वहीं रहना। [5]जहाँ लोग तुम्हारा स्वागत न
करें, तो उस नगर से निकलते समय उधर मुड़कर भी न देखना। यह
उनके लिए एक चेतावनी होगी कि तुम्हारा स्वागत न करके उन्होंने
एक गंभीर गलती की है।”*
[6]यह सुनकर राजदूत निकले और गाँव-गाँव परमात्मा के साम्राज्य का
शुभ संदेश सुनाते और सब जगह लोगों को स्वस्थ करते रहे।

राज्यपाल हेरोदेस की उलझन

[7]जब शासक हेरोदेस ने ये सब घटनाएँ सुनीं तो वह उलझन में
पड़ गया, क्योंकि कुछ लोगों का कहना था, “समर्पण-स्नान दाता
योहन मरने के बाद भी ज़िन्दा हो गए हैं।” [8]और कुछ का कहना था,
“परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह फिर पृथ्वी पर प्रकट हुए हैं,” कुछ
अन्य कहते थे, “प्राचीन ऋषियों में से कोई ज़िन्दा हो गया है।”
[9]हेरोदेस ने कहा, “मैंने तो योहन का सिर कटवा दिया था, फिर यह
कौन है जिसके बारे में मैं ये बातें सुन रहा हूँ?” तो प्रभु येशु से मिलने के
लिए हेरोदेस की उत्सुकता बढ़ती गई।

पाँच रोटियों से पाँच हजार से ज़्यादा की भूख मिटाना

[10]राजदूत अपनी यात्रा से लौटे और जो कुछ उन्होंने किया था, वह
सब प्रभु येशु को बताया। फिर प्रभु येशु उन्हें अपने साथ ले गए और
वे लोगों से दूर बैथसैदा नगर+ में चले गए। [11]जब लोगों को इसका पता
चला तो वे भी उनके पीछे-पीछे वहाँ चले आए। प्रभु येशु ने उनका
स्वागत किया, उन्हें परमात्मा के साम्राज्य के सम्बन्ध में बताया और
उनमें जो बीमार थे, उनको स्वस्थ किया।

*** 9:5** *चेतावनी* - ऐसे काम करके न केवल लोग राजदूतों को ठुकरा रहे थे, बल्कि वे परमात्मा और उनके साम्राज्य को भी ठुकरा रहे थे, और उन्हें कर्मों के न्याय के दिन परमात्मा को जवाब देना होगा।

12अब दिन ढलने लगा था। प्रभु येशु के बारहों राजदूतों ने उनके
पास आकर कहा, “लोगों को विदा कर दीजिए कि वे आसपास के
गाँवों और क्षेत्रों में जाकर अपने ठहरने और खाने का इंतज़ाम कर लें,
क्योंकि यहाँ हम सुनसान जगह में हैं।”
13प्रभु येशु ने कहा, “तुम लोग ही इन्हें खाने को दो।”
वे बोले, “गुरूजी हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियों से
अधिक कुछ नहीं है। हाँ, यदि हम जाकर इन सब लोगों के लिए
भोजन खरीदें तो यह हो सकता है।”
14वहाँ भीड़ में लगभग 5,000
पुरुष प्रभु येशु का उपदेश सुन रहे थे।
उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, “इनको पचास-पचास की पंक्ति में
बैठा दो।”
15शिष्यों ने ऐसा ही किया और सबको बैठा दिया।
16तब
प्रभु येशु ने वे पाँचों रोटियाँ और दोनों मछलियाँ लीं और ऊपर आकाश
की ओर देखकर उनके लिए परमात्मा को धन्यवाद दिया। और फिर
रोटियों और मछलियों के टुकड़े करके शिष्यों को दे दिए कि वे लोगों
को परोस दें।
17सबने पेट भर भोजन किया और शिष्यों ने बचे हुए खाने
को बारह टोकरों में भरा।

प्रभु येशु कौन हैं?

18एक बार जब प्रभु येशु एकांत में प्रार्थना कर रहे थे तो शिष्य उनके पास
आए और प्रभु येशु ने उनसे पूछा, “लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?”
19शिष्यों ने उत्तर दिया, “कुछ कहते हैं, समर्पण-स्नान दाता योहन,
कुछ परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह और अन्य कहते हैं कि प्राचीन
ऋषियों में से कोई एक ज़िन्दा हो गया है।”
20तब प्रभु येशु ने कहा, “परंतु तुम क्या कहते हो? मैं कौन हूँ?”
शिष्य पतरस ने उत्तर दिया, “आप परमात्मा के भेजे मुक्तिदाता हैं।”
21इस पर प्रभु येशु ने उन सबको सख्त मना किया कि वे यह बात
किसी से न कहें।
22प्रभु येशु ने अपने शिष्यों को बताया, “यह ज़रूरी है कि
तेजस्वी मानव-पुत्र को बहुत दुख सहना ही पड़ेगा। समाज के बड़ों,
प्रधान-पुरोहितों और धर्मगुरुओं द्वारा उसका बहिष्कार किया जाएगा।
वह मार डाला जाएगा, परंतु तीसरे दिन परमात्मा उन्हें ज़िन्दा कर देंगे।”

आत्मसमर्पण

[23]तब गुरु येशु ने वहाँ पर सभी लोगों से कहा, “यदि तुम मेरे शिष्य
बनना चाहते हो, तो तुमको अपना अहम त्यागना होगा, अपना क्रूस
रोज़ाना उठाना होगा* और मेरे पीछे चलना होगा। [24]जो कोई अपने
जीवन को बचाना चाहता है, वह उसे गंवा देगा तथा जो कोई मेरे लिए
अपने जीवन की हानि उठाता है, तो उसका जीवन सुरक्षित रहेगा।
[25]अगर किसी को पूरी दुनिया की संपत्ति हासिल हो जाए, लेकिन मोक्ष
न मिले तो ऐसे जीवन का क्या लाभ है? [26]अगर कोई व्यक्ति मुझे और
मेरी शिक्षा को स्वीकार नहीं करता है, तब मानव-पुत्र भी उस व्यक्ति
को स्वीकार नहीं करेगा जब वह पृथ्वी पर न्याय करने के लिए
तेजस्वी पिता परमात्मा और उनके पवित्र स्वर्गदूतों के तेज में वापस
आएगा। [27]मैं तुमसे सच कहता हूँ, यहाँ कुछ व्यक्ति खड़े हैं, वे जब
तक परमात्मा के साम्राज्य को न देख लेंगे, तब तक वे मृत्यु का स्वाद
नहीं चखेंगे।”

शिष्यों के सामने गुरु येशु का दिव्य रूपांतर

[28]इस बात से कोई आठ दिन बाद प्रभु येशु ने पतरस, योहन और
याकोब को अपने साथ लिया और पहाड़ पर प्रार्थना करने गए। [29]जब
वह प्रार्थना कर रहे थे तब उनका चेहरा तेज से भर गया और उनके
कपड़े सफेद उज्जवल हो चमकने लगे। [30]अचानक, दो पुरुष, परमात्मा
के प्रवक्ता मोशे और परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह प्रकट हुए और प्रभु
येशु से बात करने लगे। [31]मोशे और एलियाह भी तेज से भरे हुए थे।
वे प्रभु येशु की मृत्यु के बारे में बात कर रहे थे कि प्रभु येशु यरूशलम
शहर में अपनी मृत्यु के द्वारा परमात्मा के मकसद को पूरा करने वाले
हैं।

[32]पतरस और उसके साथी नींद में डूबे हुए थे। पर जब वे जगे तो उन्होंने
प्रभु येशु के तेज को और उन दो पुरुषों को, जो उनके साथ खड़े थे,
देखा। [33]जब वे दोनों प्रभु येशु से विदा होने लगे तब पतरस ने उनसे कहा,

---

*** 9:23** *अपना क्रूस रोज़ाना उठाना होगा* - यानी, हर दिन सताए जाने और यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार रहना होगा

“स्वामी, कैसी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आइए, हम तीन तम्बू के
मंदिर बनाएँ, एक आपके लिए, एक मोशे के लिए और एक एलियाह
के लिए।” परंतु जो वह कह रहा था उसकी उसे पूरी समझ नहीं थी।
34पतरस इस प्रकार बोल ही रहा था कि एक बादल की छाया उन सब
पर आ गई। जब बादल ने उनको ढांप लिया शिष्य बहुत डर गए।
35तब बादल में से यह आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा पुत्र है, मेरा चुना
हुआ।+ इसकी बात सुनो।” 36आवाज़ बंद हो जाने पर उन्होंने देखा कि
सिर्फ प्रभु येशु ही वहाँ खड़े थे। जो कुछ शिष्यों ने देखा था, उसके बारे
में कुछ समय तक उन्होंने किसी को नहीं बताया।

अशुद्ध आत्मा से मुकाबला करने के लिए आस्था की ज़रूरत

37दूसरे दिन जब प्रभु येशु और उनके तीन शिष्य पहाड़ से उतरे तब
उनको एक बड़ी भीड़ मिली। 38भीड़ में से एक मनुष्य ने ऊँची आवाज़
से कहा, “गुरुजी! मेरी आपसे विनती है कि आप मेरे बेटे पर कृपा करें
क्योंकि यह मेरा इकलौता बेटा है। 39अचानक एक अशुद्ध आत्मा इसे
पकड़ लेती है और वह चिल्लाने लगता है। अशुद्ध आत्मा इसे ऐसा मरोड़ती
है कि इसके मुँह से झाग निकलने लगता है। वह मेरे बेटे को घायल
करती है और बड़ी मुश्किल से इसको छोड़ती है। 40मैंने आपके शिष्यों से
भी विनती की थी कि उसे निकालें पर वे उसे नहीं निकाल सके।”
41प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “ओ यह पीढ़ी नास्तिकों और पापियों से
भरी हैं! कब तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगा और तुमको सहन करूँगा?”
फिर प्रभु येशु ने उस मनुष्य से कहा, “अपने पुत्र को यहाँ लाओ।”
42बालक पास आ ही रहा था कि अशुद्ध आत्मा ने उसे पटक दिया
और उसे मरोड़ने लगी। तब प्रभु येशु ने अशुद्ध आत्मा को आदेश
दिया कि बालक को छोड़ दे। बालक के मुक्त होने के बाद प्रभु येशु
ने बालक को उसके पिता को सौंप दिया। 43प्रभु येशु में परमात्मा की
महान शक्ति देखकर सब लोग हैरान रह गए।

प्रभु येशु जानते थे कि कब उनकी मृत्यु होगी

जब सभी लोग प्रभु येशु के इन सब कामों को देखकर हैरान हो रहे थे
तब उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, 44“मेरी बात ध्यान से सुनो! तेजस्वी

मानव-पुत्र सरकारी लोगों के हाथ पकड़वाया जाने वाला है।” [45]परंतु
यह बात शिष्यों की समझ में नहीं आई। इस बात का मतलब उनसे
छुपाकर रखा गया कि कहीं वे समझ न जाएँ, और वे प्रभु येशु से इस
के बारे में पूछने से भी डरते थे।

कौन सबसे बड़ा है?

[46]तब शिष्यों के बीच इस बात पर बहस हो गई कि उनमें सबसे बड़ा
कौन है। [47]प्रभु येशु ने उनके मन का विचार जानकर एक बालक को
लिया और उसे अपने पास खड़ाकर [48]शिष्यों से कहा, “जो कोई एक
बच्चे को मेरे नाम से प्यार करता है, वह मुझ से प्यार करता है और मेरे
भेजने वाले परमात्मा को प्यार करता है। जो व्यक्ति समाज की नज़रों
में महत्वपूर्ण नहीं है, वह परमात्मा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।”

उदार विचार

[49]शिष्य योहन ने कहा, “स्वामी, हमने एक मनुष्य को आपके नाम
के अधिकार से अशुद्ध आत्माएँ निकालते देखा, तो उसे मना किया कि
वह ऐसा काम न करे, क्योंकि वह हमारे समूह में से नहीं है।”
[50]प्रभु येशु ने उससे कहा, “उसे मत रोको, क्योंकि जो तुम्हारे विरोध
में नहीं, वह तुम्हारे पक्ष में है।”

प्रभु येशु द्वारा निरादर का सामना किया जाना

[51]जब प्रभु येशु को परमात्मा द्वारा परमस्वर्ग में उठाए जाने का समय
निकट आया तब उन्होंने यरूशलम शहर जाने का निश्चय किया। [52]और
उन्होंने कुछ संदेश वाहकों को अपने वहाँ पहुँचने से पहले समेरिया
प्रदेश के एक गाँव में भेजा कि वे उनके आने की तैयारी करें। [53]पर
समेरिया के लोगों ने उनका स्वागत करने से इंकार कर दिया* क्योंकि
प्रभु येशु समेरिया में ठहरने के बजाए यरूशलम शहर जा रहे थे। [54]जब

---

* **9:53** *समेरिया के लोगों ने उनका स्वागत करने से इंकार कर दिया* - समेरिया समाज और यहूदी समाज के बीच संघर्ष का इतिहास रहा है। जब यहूदी लोग गलील प्रदेश से यरूशलम शहर में भक्ति करने के लिए जाते थे, तो उन्हें समेरिया प्रदेश से गुजरना पड़ता था, और समेरिया के लोगों को यह पसंद नहीं था। इसलिए उन्होंने प्रभु येशु और उसके शिष्यों का स्वागत नहीं किया।

प्रभु येशु के शिष्य याकोब और योहन ने यह देखा तो वे बोले, "प्रभुजी, क्या आप चाहते हैं कि हम आज्ञा दें कि आकाश से आग गिरे और इन्हें भस्म कर दे?"+ [55-56]प्रभु येशु ने उन्हें देखा और इस बात के लिए उन्हें डाँटा।+ तब प्रभु येशु और उनके शिष्य दूसरे गाँव को चले गए।

गुरु येशु के मार्ग में चलने की कीमत चुकाना

[57]जब वे रास्ते में जा रहे थे तब किसी ने प्रभु येशु से कहा, "गुरुजी जहाँ कहीं आप जाएँगे, मैं आपके साथ आऊँगा।"

[58]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "लोमड़ियों की माँदें हैं और आकाश के पक्षियों के घोंसले, परंतु तेजस्वी मानव-पुत्र के पास कोई घर नहीं जिसमें वह आराम कर सके।"

[59]प्रभु येशु ने एक अन्य व्यक्ति से कहा, "मेरे पीछे हो लो।" पर उसने उत्तर दिया, "प्रभुजी, अभी मुझे जाने दीजिए कि मैं अपने बूढ़े पिता की देखभाल करूँ। उनके अंतिम संस्कार का समय आने बाद आपके साथ चलूँगा।"

[60]परंतु प्रभु येशु ने उससे कहा, "जो मर चुके हैं उन्हें अपने मृत लोगों का अंतिम संस्कार करने दो, लेकिन तुम जाओ और परमात्मा के साम्राज्य के बारे में लोगों को बताओ।"

[61]किसी और व्यक्ति ने कहा, "प्रभुजी, मैं आपके साथ चलूँगा, परंतु मुझे पहले अपने रिश्तेदारों से विदा लेने की आज्ञा दीजिए।"

[62]प्रभु येशु ने उससे कहा, "यदि तुम अब वापस जाओगे, तो तुम उस मनुष्य के समान हो, जिसने अपना खेत आधा बिना जुताई छोड़ दिया हो। तुम परमात्मा के साम्राज्य के अच्छे किसान नहीं बन सकोगे।"

10

परमात्मा के संदेश को कैसे फैलाएँ

[1]इसके बाद प्रभु येशु ने अन्य बहत्तर+ शिष्यों * को नियुक्त किया और हर एक नगर तथा स्थान को, जहाँ वह स्वयं जाने वाले थे, उन्हें

*** 10:1** *बहत्तर+ शिष्यों* - उत्पत्ति की पुस्तक के अनुसार पूरी पृथ्वी पर 72 देश थे और प्रभु येशु ने इतने ही शिष्यों को चुनकर यह दिखाया कि उनका संदेश पूरे संसार के लिए है।

दो-दो करके भेजा। [2]प्रभु येशु ने उनसे कहा, "पकी फसल तो बहुत है,
पर मज़दूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के मालिक से विनती करो कि वह
फसल काटने के लिए मज़दूर भेजे। [3]जाओ, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच
भेड़ों के समान भेज रहा हूँ। [4]न बटुआ लो, न झोला, न जूते। रास्ते में
किसी से बात करने के लिए ज़्यादा समय तक मत रुकना।

[5]"लेकिन जब तुम किसी घर में जाओ तो कहना, 'परमात्मा इस घर
में हमेशा शांति बनाए रखें।' [6]अगर उस घर में रह रहे लोग शांति प्रिय
होंगे, तुम्हारी शांति की प्रार्थना से उन्हें आशीर्वाद मिलेगा, परंतु अगर
वे शांति प्रिय नहीं होंगे, तो तुम्हारी प्रार्थना से उन्हें आशीर्वाद नहीं
मिलेगा। [7]जब किसी नगर में जाओ तो इधर-उधर घूमने के बजाय
एक ही परिवार में रहकर उनकी सेवा-सत्कार स्वीकार करना। तुम मेरे
सेवक हो, और तुम्हारी अच्छी देख-भाल होनी चाहिए।

[8]"जब तुम किसी नगर में जाओ और लोग तुम्हारा स्वागत करें, और
जो कुछ तुम्हारे सामने परोसें उसे खाओ। [9]वहाँ के बीमारों को स्वस्थ
करना और कहना, 'परमात्मा का साम्राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।'

[10]"परंतु यदि तुम किसी नगर में जाओ और लोग तुम्हारा स्वागत न
करें, तो वहाँ की सड़कों पर निकल कर कहना, [11]'तुम्हारे नगर की
धूल तक, जो हमारे पैरों में लगी है, हम तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं। यह
इस बात की चेतावनी है कि परमात्मा का साम्राज्य निकट आ गया है
पर तुमने उसको ठुकरा दिया।' [12]मैं कहता हूँ, जो नगर तुम्हारा स्वागत
नहीं करेंगे उनकी दशा सब लोगों के अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के
दिन भ्रष्ट सदोम शहर से अधिक बुरी होगी।"

आस्थाहीन नगरों को फटकार

प्रभु येशु ने आगे कहा, [13]"खोराज़िन शहर, तुझे इसका परिणाम
भुगतना पड़ेगा! बैथसैदा नगर, तुझे भी इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा!
जो चमत्कारी काम तुम्हारे यहाँ किए गए, वे यदि अधर्मी सोर और
सीदोन शहर में किए जाते तो उनके निवासियों ने बहुत पहले ही टाट
ओढ़कर और राख में बैठकर दिखा दिया होता कि उन्होंने अपने बुरे
कर्मों से पश्चाताप कर लिया है। [14]इसलिए सब लोगों अच्छे और
बुरे कर्मों के न्याय के दिन सोर और सीदोन शहरों की दशा तुम्हारी

दशा से अधिक अच्छी होगी। [15]और तू, ओ कफरनहूम शहर! क्या तुझे
परमस्वर्ग में ऊँचा स्थान मिलेगा? नहीं! तू तो नीचे मृत्युलोक में जाएगा!”
[16]प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, “जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी
सुनता है। जो तुम्हारा तिरस्कार करता है, वह मेरा तिरस्कार करता
है। और जो मेरा तिरस्कार करता है, वह मेरे भेजने वाले परमात्मा का
तिरस्कार करता है।”

बहत्तर शिष्यों का खुशी से वापस लौटना

[17]बहत्तर* शिष्य बड़ी खुशी से लौटे और कहने लगे, “प्रभुजी, आपके
नाम के अधिकार से अशुद्ध आत्माएँ हमारे सामने समर्पण कर देती हैं।”
[18]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “मैंने शैतान को बिजली के समान आकाश
से गिरते हुए देखा। [19]देखो, मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को कुचलने
की शक्ति और शैतान जो तुम्हारा दुश्मन है उसकी पूरी शक्ति पर
अधिकार दिया है, इसलिए कोई भी तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा।
[20]फिर भी सिर्फ इसलिए खुश न हो कि अशुद्ध आत्माएँ तुम्हारे सामने
समर्पण कर देती हैं, परंतु इसलिए खुश हो कि परमात्मा ने तुम्हारे नाम
परमस्वर्ग की मोक्ष पुस्तक में लिखे हैं।”

प्रभु येशु की आनंद भरी प्रार्थना

[21]उसी समय, प्रभु येशु पवित्र आत्मा के+ आनंद से भरकर कहने लगे,
“हे पिता परमात्मा, आकाश और पृथ्वी के मालिक, मैं धन्यवाद देता हूँ
कि आपने ज्ञानियों और बुद्धिमानों से इस सच को गुप्त रखा और आम
लोगों पर प्रकट किया। हे पिता परमात्मा, आपने ऐसा इसलिए किया
क्योंकि इससे आपको बहुत खुशी मिली।”
तब प्रभु येशु ने वहाँ आए लोगों से कहा, [22]“मेरे पिता परमात्मा ने
अपना सारा अधिकार मुझे सौंप दिया है। पिता परमात्मा के अलावा
मुझ पुत्र को अच्छी तरह कोई नहीं जानता। और मुझ पुत्र के अलावा
पिता परमात्मा को अच्छी तरह कोई नहीं जानता है। पुत्र जिसको भी
चाहे पिता परमात्मा को समझने का ज्ञान दे सकता है।”

---

* **10:17** *बहत्तर* - (10:1 देखें)

23तब प्रभु येशु शिष्यों की ओर मुड़े और उन्हें अलग ले जाकर उनसे
कहा, “तुम पर बड़ी कृपा है कि तुम यह सब देख रहे हो। 24मैं तुमसे
कहता हूँ कि अनेक परमात्मा के प्रवक्ताओं और राजाओं ने चाहा कि
जो बातें तुम देख रहे हो, देखें, पर न देख सके और जो बातें तुम सुन रहे
हो, सुनें, पर न सुन सके।”

किस से प्रेम करें?

25तब एक धर्मगुरु उठा और उसने प्रभु येशु को परखने के लिए पूछा,
“गुरुजी, मोक्ष प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?”
26प्रभु येशु ने कहा, “मोशे के नियम और शिक्षा में क्या लिखा है?
तुमने उसमें क्या पढ़ा है?”
27उसने कहा, “तुम प्रभु परमात्मा से पूरे मन, पूरे जीवन, पूरी शक्ति
और पूरी बुद्धि से प्रेम करो, और दूसरों से अपने समान प्रेम करो।”
28प्रभु येशु बोले, “तुमने ठीक कहा। यही करो, तो तुम मोक्ष प्राप्त करोगे।”
29परंतु धर्मगुरु प्रमाणित करना चाहता था कि वह सही मार्ग पर है। इसलिए
उसने प्रभु येशु से पूछा, “तो वे दुसरे लोग कौन हैं जिनसे मैं प्रेम करूँ?”
30तब प्रभु येशु ने उसके सवाल के जवाब में यह कहानी सुनाई।
“एक मनुष्य यरूशलम शहर से यरीखो शहर जा रहा था। तब उसे
रास्ते में डाकुओं ने घेर लिया और उसका सब कुछ छीन लिया। वे उसे
मारपीट कर अधमरा छोड़कर चले गए।
31“संयोग से एक पुरोहित उसी रास्ते से जा रहा था। जब उसने उस
घायल व्यक्ति को देखा तो वह कतराकर चला गया। 32इसी प्रकार
मंदिर का एक सेवादार भी उस जगह पर आया। उसने भी उस घायल
व्यक्ति को देखा और वह कतराकर चला गया।
33“उसके बाद एक समेरिया* निवासी आया, जो उस घायल व्यक्ति
को देखकर दया से भर गया। 34वह जा कर उसके पास बैठ गया
और उसने उसके घावों पर दवाई लगाकर* पट्टियाँ बाँधीं। तब वह

10:27 उपदेश 6:5 * **10:33** *समेरिया* - अधिकांश यहूदी लोग समेरी लोगों से नफरत करते थे और यह सोचते थे कि परमात्मा समेरिया लोगों से प्रेम नहीं करते है। लेकिन प्रभु येशु की इस कहानी में, समेरिया निवासी अपनी अद्भुत दया के कारण एक नेक व्यक्ति है। * **10:34** *दवाई लगाकर* - या, “तेल और अंगूर रस।” ऐसा माना जाता था कि तेल आराम देता है और अंगूर रस में मौजूद एल्कोहल घाव को साफ कर देती है।

उसे अपने गधे पर बैठाकर एक धर्मशाला में ले गया और वहाँ उसने
उसकी देखभाल की। 35दूसरे दिन उसने चाँदी के दो सिक्के निकालकर
धर्मशाला के मालिक को देते हुए कहा, 'इसकी देखभाल करना। यदि
आपका इससे अधिक खर्च होगा तो लौटने पर मैं चुका दूँगा।'"
36तब प्रभु येशु ने उस धर्मगुरु से पूछा, "तुम्हारे विचार में, इन तीनों में
से किसने अजनबी घायल से प्रेम किया जिसे डाकुओं ने मार-पीट कर
लूट लिया था?"
37धर्मगुरु ने कहा, "तीसरे ने उसके प्रति दया दिखाई।" प्रभु येशु ने
उससे कहा, "जाओ, तुम भी ऐसा ही करो।"

सबसे ज़रूरी चीज़ क्या है

38प्रभु येशु और उनके शिष्य यात्रा पर आगे बढ़ते हुए एक गाँव में
पहुँचे। वहाँ मार्था नामक स्त्री ने प्रवचन सुनने के लिए उनको अपने घर
बुलाया। 39उसकी एक बहन थी जिसका नाम मरियम था। मरियम प्रभु येशु
के चरणों में बैठी और उनके उपदेश सुन रही थी। 40पर मार्था मेहमानों
के लिए खाना बनाने की तैयारी में लगी थी। मार्था ने पास आकर कहा,
"प्रभुजी, क्या आपको नहीं लगता कि मेरी बहन ने सेवा-सत्कार करने के
लिए मुझे अकेला छोड़ दिया है? उससे कहिए कि वह मेरा हाथ बँटाए।"
41प्रभु येशु ने उसे उत्तर दिया, "मार्था, मार्था! तुम बहुत-सी चीज़ों में
उलझी और परेशान हो, 42जबकि मरियम ने उस सबसे ज़रूरी चीज़ को
चुन लिया है जो उससे कभी दूर नहीं की जाएगी।"

11

प्रार्थना कैसे करें?

1एक समय प्रभु येशु किसी स्थान पर प्रार्थना कर रहे थे। जब
वह प्रार्थना कर चुके, तब उनके एक शिष्य ने कहा, "प्रभुजी, जैसे
समर्पण-स्नान दाता योहन ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया
है, वैसे आप भी हमें सिखा दीजिए।"
2प्रभु येशु ने कहा, "तुम जब प्रार्थना करते हो तब यह कहो,
'हे पिता परमात्मा, आपके पवित्र नाम का आदर हो।
आपका साम्राज्य आए।

3 जितने भोजन की हमें ज़रूरत है
उतना रोज़ हमें दीजिए।
4 हमारे पापों को माफ कीजिए,
जैसे हम भी उनके पापों को माफ करते हैं
जो हमारे विरुद्ध पाप करते हैं।
और हमें पाप में फँसने की परीक्षा से बचाइए।'"
5 प्रभु येशु ने यह भी कहा, "मान लो, तुम्हारा कोई मित्र है। तुम आधी
रात को उसके पास जाओ, और कहो, 'मित्र, मुझे कुछ रोटी दो, 6 क्योंकि
मेरा एक मित्र यात्रा करता हुआ मेरे पास आया है और वह भूखा है पर मेरे
पास खाना नहीं है।' 7 और क्या अन्दर से कोई ऐसा जवाब दे सकता है,
'मुझे परेशान मत करो, दरवाज़ा बंद हो चूका है और मेरे बच्चे मेरे साथ सो
रहे हैं। मैं उठकर तुम्हें खाना नहीं दे सकता'? नहीं, कभी नहीं!
8 "मैं तुमसे यह कहता हूँ, वह तुम्हारा मित्र होने के नाते भले ही
उठकर तुम्हें कुछ न दे, वह उठेगा और पड़ोसियों में उसकी इज्ज़त
बनी रहे*, इस कारण तुम्हारी ज़रुरत को पूरा करेगा।
9 "इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, माँगों तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूँढ़ो तो
तुम पाओगे। खटखटाओ तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोला जाएगा।
10 क्योंकि जो माँगता है, उसे मिलता है। जो ढूँढ़ता है, वह पाता है, और
जो खटखटाता है, उसके लिए दरवाज़ा खोला जाता है। 11 तुममें से ऐसा
कौन पिता है कि यदि उसका बच्चा+ मछली माँगे तो वह उसे मछली
के बदले साँप दे? 12 या अगर अंडा माँगे तो वह बिच्छू दे? 13 जब तुम
बुरे होकर भी अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें देना जानते हो, तो पिता
परमात्मा* इससे कहीं बढ़कर जो लोग उनसे पवित्र आत्मा माँगते हैं
वह उन्हें+ पवित्र आत्मा क्यों न देंगे!"

प्रभु येशु और शैतान

14 एक दिन प्रभु येशु ने एक अशुद्ध आत्मा को ऐसे व्यक्ति के शरीर
से बाहर निकाला जिसे उस अशुद्ध आत्मा ने गूँगा बना रखा था। अशुद्ध

---

* **11:8** *पड़ोसियों में उसकी इज्ज़त बनी रहे* - या, "क्योंकि बहुत विनती करने पर।" * **11:13** *पिता परमात्मा* - या, "पिता परमात्मा जो परमस्वर्ग में शासन करते हैं"

आत्मा के निकलते ही गूँगा बोलने लगा तो लोग हैरान रह गए। [15]परंतु
उनमें से कई लोग कहने लगे, “यह तो अशुद्ध आत्माओं के शासक
बालज़बूल की मदद से अशुद्ध आत्माओं को निकालता है।” [16]कुछ
अन्य लोगों ने प्रभु येशु को परखने के लिए उनसे एक चमत्कार करने
को कहा कि जिससे वे यह जान सकें कि परमात्मा ने उन्हें यह करने
का अधिकार दिया है। [17]प्रभु येशु ने उनके विचार जानकर उनसे कहा,
“किसी भी देश में जब फूट पड़ जाती है, वह नाश हो जाता है। और
जिस परिवार में फूट पड़ जाए, वह बर्बाद हो जाता है। [18]इसलिए अगर
शैतान के राज्य में फूट पड़ जाती है, तो उसका राज्य कैसे टिक सकता
है?

“तुम कह रहे हो कि मैं दुष्ट बालज़बूल की मदद से अशुद्ध आत्माएँ
निकालता हूँ। [19]अच्छा, यदि मैं दुष्ट बालज़बूल की मदद से अशुद्ध
आत्माएँ निकालता हूँ, तो तुम्हारे अपने लोग किसकी मदद से अशुद्ध
आत्माएँ निकालते हैं? तुम्हारे अपने लोग ही इस बात को गलत
साबित करते हैं। [20]यदि मैं परमात्मा की शक्ति से अशुद्ध आत्माओं को
निकालता हूँ तो इससे साबित होता है कि परमात्मा का साम्राज्य तुम्हारे
बीच आ चुका है।

[21]“यदि कोई ताकतवर व्यक्ति हथियार लेकर अपने घर का पहरा
देता है, तो उसकी संपत्ति सुरक्षित रहती है। [22]परंतु यदि कोई उससे भी
अधिक ताकतवर व्यक्ति उस पर हमला कर उसे हरा दे, तो उसके वे
हथियार जिन पर उसे भरोसा था, छीन लेता है और लूटी हुई संपत्ति
अपने साथियों में बाँट देता है। [23]जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरुद्ध है।
और जो मेरे साथ भेड़ों को इकट्ठा नहीं करता, वह उन्हें मुझसे दूर ले
जाता है।”

अशुद्ध आत्मा की वापसी

प्रभु येशु ने आगे कहा, [24]“जिस मनुष्य के शरीर* में अशुद्ध आत्मा
रहती है, जब उस शरीर को छोड़ कर निकलती है, तब वह सुनसान
जगहों की तालाश में भटकती है। जगह न मिलने पर कहती है, ‘मैं उस

---

* **11:24** *शरीर* (या, “घर”) पद 25, 26 में भी देखें

शरीर से जहाँ से मैं निकली थी, वापस लौट जाऊँगी।' [25]जब अशुद्ध
आत्मा वापस लौटती है तो उस शरीर को अपने रहने लायक पाती है।
[26]तब वह जाकर अपने से अधिक बुरी सात और अशुद्ध आत्माएँ ले
आती है। वे मनुष्य के शरीर में रहने लगती हैं और उस मनुष्य की दशा
पहले से भी बदतर हो जाती है।"

सच्चा आशीर्वाद किसके पास है?

[27]प्रभु येशु ये बातें कह ही रहे थे कि भीड़ में से एक स्त्री ने ऊँची
आवाज़ में उनसे कहा, "परमात्मा तुम्हारी माँ को आशीर्वाद दे, जिस
गर्भ से तुम पैदा हुए, और जिन स्तनों ने तुम्हें दूध पिलाया!"
[28]इस पर प्रभु येशु ने कहा, "वास्तव में, परमात्मा के संदेश को सुनने
और उसका पालन करने वालों पर परमात्मा का आशीर्वाद है।"

परमात्मा के कार्य करने के सबूत की माँग

[29]जब प्रभु येशु के चारों ओर और भी लोग इकट्ठा हो गए तब वह
कहने लगे, "यह पीढ़ी बहुत बुरी है। तुम परमात्मा से सबूत माँगते हो,
परंतु तुम्हें परमात्मा के प्रवक्ता योना के अलावा कोई अन्य सबूत
नहीं दिया जाएगा। [30]जिस प्रकार बहुत समय पहले योना नीनवे शहर
के निवासियों के लिए सबूत बना कि परमात्मा ने उसे वहाँ भेजा है।
वैसे ही तेजस्वी मानव-पुत्र इस पीढ़ी के लिए सबूत होगा कि परमात्मा
ने उसे भेजा है। [31]दक्षिण देश की रानी तुम्हारे साथ अच्छे और बुरे
के कर्मो के न्याय के दिन खड़ी होगी और तुम पर बुरे काम करने
का दोष लगाएगी, क्योंकि बहुत समय पहले वह बहुत दूर से राजा
शलोमो का ज्ञान सुनने के लिए आई थी। और देखो, अब यहाँ कुछ
हो रहा है जो राजा शलोमो के शासन से भी अद्‌भुत है। [32]नीनवे शहर
के लोग भी अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन तुम्हारे साथ खड़े
होंगे और तुम पर बुरे काम करने का दोष लगाएँगे, क्योंकि नीनवे
शहर के लोगों ने परमात्मा के प्रवक्ता योना का संदेश सुनकर अपने
बुरे कर्मों से पश्चाताप किया। और देखो, आज, जो यहाँ हो रहा है,
वह योना के समय से भी बढ़कर है, लेकिन फिर भी लोग पश्चाताप
नहीं करते।"

अंतर्मन में उजाला

प्रभु येशु ने आगे कहा, [33]“कोई भी दीपक को जलाकर न तो ऐसे
स्थान पर रखता है जहाँ वह छुप जाए और न ही टोकरी के नीचे,+ परंतु
ऊँचे स्थान पर रखता है कि अंदर आने वाले लोगों को प्रकाश मिले।
[34]शरीर का दीपक आँखें हैं। यदि तुम्हारी आँख शुद्ध है तो तुम्हारा पूरा
शरीर प्रकाश से भरा है, किंतु यदि वह अशुद्ध हो जाए तो तुम्हारा पूरा
शरीर अंधकार से भरा होगा। [35]ध्यान रहे कि जो प्रकाश तुम में है कहीं
अंधकार में न बदल जाए। [36]यदि तुम्हारा पूरा शरीर प्रकाश से भरा है
और उसका कोई अंश अंधकार में नहीं तो वह प्रकाश से भरा रहेगा,
जैसे दीपक अपने प्रकाश से तुम्हें रोशन करता है।”

धर्मगुरुओं को उनके ढोंग के लिए चेतावनी

[37]जब प्रभु येशु बोल रहे थे फरीसी धार्मिक पंथ के एक व्यक्ति
ने उन्हें अपने घर बुलाया। प्रभु येशु उसके घर गए और भोजन करने
बैठे। [38]फरीसी को यह देखकर हैरानी हुई कि प्रभु येशु ने उनकी रीति
के अनुसार भोजन करने से पहले हाथों और बांहों को नहीं धोया।
[39]प्रभु येशु ने उससे कहा, “हे फरीसियो, तुम उन कटोरों और थालियों
की तरह हो जो बाहर से तो माँजे जाते हैं, लेकिन अंदर से गंदे रह
जाते हैं। ऐसे ही तुम भी बाहर से तो साफ दिखते हो, लेकिन तुम्हारे
दिल में लालच और बुराई की गंदगी भरी हुई है। [40]ओ निर्बुद्धियो!
जिन परमात्मा ने बाहरी भाग बनाया है, क्या उन्होंने भीतरी भाग नहीं
बनाया? [41]अंदर से साफ होने के लिए तुमको गरीबों को दान देना
चाहिए।

[42]“परंतु फरीसियो, तुम्हें इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा, क्योंकि
तुम इन छोटी-छोटी चीज़ों जैसे पुदीने, जीरे और सागपात के दसवें
हिस्से का दान देने पर ध्यान देते हो, परंतु तुम लोगों से भेद-भाव करते
हो और परमात्मा से प्रेम नहीं करते। तुम्हें दसवें हिस्से के दान देने के
साथ-साथ इन्साफ और प्रेम भी करना चाहिए था।

[43]“फरीसियो, तुम्हें इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा, क्योंकि तुम्हें
सत्संग भवन में प्रमुख आसन और चौक-चौराहों पर लोगों का सर
झुकाकर प्रणाम लेना अच्छा लगता है। [44]तुम्हें इसका परिणाम भुगतना

पड़ेगा क्योंकि तुम धरती में उन छिपी हुई कब्रों के समान* हो जिन पर
लोग अनजाने चलते-फिरते हैं और अशुद्ध हो जाते हैं।”
45धर्मगुरु ने प्रभु येशु को उत्तर दिया, “गुरुजी, ऐसी बातें कहकर आप
हमारा भी अपमान कर रहे हैं।”
46प्रभु येशु ने कहा, “ओ धर्मगुरुओं, तुम्हें इसका परिणाम भुगतना
पड़ेगा क्योंकि तुम कठिन नियमों का बोझ लोगों पर डालते हो, पर
तुम उस बोझ को उठाने में अपनी एक अँगुली से भी मदद नहीं करते।
47तुम्हें इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा! क्योंकि तुम परमात्मा के
प्रवक्ताओं के लिए समाधि बनाते हो जिनको तुम्हारे पूर्वजों ने ही मार
डाला। 48ऐसा करने से तुम साबित करते हो कि तुम्हारे पूर्वजों ने जो
किया, वह सही था। उन्होंने परमात्मा के प्रवक्ताओं की हत्या कर दी,
और तुम उनकी समाधि बनाते हो!
49“इसी कारण परमात्मा ने, जिनकी बुद्धि अपार है कहा, ‘मैं लोगों के
पास अपने प्रवक्ताओं और राजदूतों को भेजूँगा। उनमें से कुछ को वे मार
डालेंगे और कुछ पर अत्याचार करेंगे।’ 50इस पीढ़ी के लोगों को दुनिया
की शुरुआत से सभी परमात्मा के प्रवक्ताओं की हत्या के लिए ज़िम्मेदार
ठहराया जाएगा। 51मैं सच कहता हूँ, आदम के बेटे हाबिल के खून से
लेकर वेदी और मंदिर के मध्य मारे गए परमात्मा के प्रवक्ता जकरयाह के
खून तक* इन सब मौतों का हिसाब इस पीढ़ी के लोगों से लिया जाएगा।
52“ओ धर्मगुरुओं, तुम्हें इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा! तुम्हारे पास
परमात्मा के बारे में ज्ञान के द्वार की चाबी है, लेकिन तुम खुद भी अंदर
नहीं जाते, और न तुम दूसरों को जाने देते हो।”
53जब प्रभु येशु घर से चले गए तब वे धर्मगुरु और फरीसी बुरी तरह
उनके पीछे पड़ गए और उन्हें परेशान करने के लिए उलटे सीधे सवाल

---

* **11:44** *कब्रों के समान* - जिन कब्रों और शव रखने वाली गुफाओं पर कोई निशान नहीं होता था तो उस पर सफेदी कर दी जाती थी ताकि गलती से कोई उन्हें छू न ले। जो व्यक्ति शव और गुफा को छू भी लेता था तो उसे अशुद्ध समझा जाता था और वह दूसरे लोगों के साथ कुछ समय के लिए भक्ति-भजन नहीं कर सकता था। * **11:51** *परमात्मा के प्रवक्ता जकरयाह के खून तक* - परमात्मा-ग्रंथ की पहली पुस्तक उत्पत्ति है जो यह बताती है कि जिस पहले व्यक्ति की हत्या हुई, वह हाबिल का नाम था। यहूदी इतिहास में (प्रभु येशु से 400 साल पहले) जकरयाह आखरी परमात्मा के प्रवक्ताओं में से थे जिनकी हत्या हुई (2 इतिहास 24)।

करने लगे। [54]वे लोग इस बात की ताक में थे कि प्रभु येशु के मुँह की
कोई बात पकड़ें और उन पर आरोप लगाएँ।

12

परमात्मा से डरो, मनुष्यों से नहीं

[1]इतने में वहाँ हज़ारों लोगों की भीड़ लग गई यहाँ तक कि लोग
एक-दूसरे पर गिरे जा रहे थे। तब प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से कहा,
"फरीसियों की छल भरी शिक्षाओं से सावधान रहना जो खमीर की
तरह काम करती हैं। [2]ऐसा कुछ भी ढका नहीं जिसे खोला न जाएगा,
ऐसा कोई रहस्य नहीं, जिसे प्रकट न किया जाएगा। [3]तुमने जो कुछ
अँधेरे में कहा है, वह दिन की रोशनी में सब को सुनाया जाएगा और
बंद कमरों में जो कानाफूसी की है, वह छतों से लोगों को चिल्लाकर
बताई जाएगी।

[4]"मेरे मित्रो, लोगों से मत डरो। वे तुम्हारी हत्या कर सकते हैं, परंतु
उसके बाद तुम्हारा कुछ नहीं कर सकते! [5]तुमको परमात्मा से डरना
चाहिए। न केवल वह तुम्हारी जान ले सकते हैं, बल्कि उनके पास
तुमको नरक में भी डालने की शक्ति हैं। परमात्मा से डरो!

[6]"चिड़िया बहुत सस्ते दाम में बिकती है, दो सिक्कों में पाँच
चिड़ियाँ। परंतु परमात्मा उनमें से एक को भी नहीं भूलता। [7]तुम्हारे तो
सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। डरो मत, तुम अनेक चिड़ियों से
कीमती हो!

[8]"यदि तुम दूसरों को बताते हो कि तुम मेरे हो, तो तेजस्वी मानव-पुत्र
परमात्मा के स्वर्गदूतों को बताएगा कि तुम मेरे शिष्य हो। [9]लेकिन
अगर तुम मुझे ठुकराते हो, तो तुम भी परमात्मा के स्वर्गदूतों के सामने
ठुकरा दिए जाओगे। [10]जो मनुष्य तेजस्वी मानव-पुत्र की बुराई करेगा,
उसे माफी मिल सकती है, परंतु जो व्यक्ति पवित्र आत्मा का अपमान
करेगा, उसे माफी नहीं मिलेगी।

[11]"जब तुम्हारे विरोधी तुम्हें यहूदी सत्संग भवन या शासकों और
अधिकारियों के सामने ले जाएँ तब चिंता न करना कि तुम अपने
बचाव में क्या कहोगे, [12]क्योंकि उस समय पवित्र आत्मा तुम्हें बता
देगा कि तुम्हें क्या कहना चाहिए।"

जीवन और प्राण की सुरक्षा, पैसे में नहीं

[13]भीड़ में मौजूद एक व्यक्ति ने प्रभु येशु से कहा, “गुरुजी, मेरे भाई से कहिए कि मेरे पिता मरने के बाद जो संपत्ति छोड़ गए हैं, उसमें से मेरा हिस्सा मुझे दे दे।”

[14]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “मित्र, किसने मुझे तुम्हारा पंच नियुक्त
किया है?” [15]तब उन्होंने लोगों से कहा, “सावधान! हर प्रकार
के लालच से बचे रहो, क्योंकि बहुत सी चीजों का मालिक बनने से तुम्हारा जीवन सुरक्षित नहीं होगा।”

[16]इसलिए प्रभु येशु ने उन्हें एक कहानी सुनाई। “किसी अमीर किसान
की ज़मीन में बहुत अच्छी फसल हुई। [17]उसने मन-ही-मन सोचा, ‘मैं
क्या करूँ? मेरे पास अपनी फसल रखने के लिए जगह नहीं है।’ [18]तब
वह बोला, ‘मैं ऐसा करता हूँ, अपने भंडार घर तोड़कर उन्हें और बड़े बनाऊँगा, और वहाँ अपना सब अनाज और दूसरी सारी चीज़ें रखूँगा।’
[19]मैं अपने आप से कहूँगा, ‘तेरे पास बहुत सालों के लिए काफी अच्छी
चीज़ें रखी है। चैन से रह! खा, पी और आनंद मना!’ [20]परंतु परमात्मा ने
उससे कहा, ‘ओ मूर्ख! अगर इसी रात मैं तेरे प्राण तुझसे ले लूँ, तब जो कुछ तूने जमा किया है, वह किसका होगा?’”

[21]प्रभु येशु ने आगे कहा, “उन लोगों के साथ जो पैसे पाने पर ही ध्यान देते हैं लेकिन परमात्मा के साथ अपने रिश्ते पर ध्यान नहीं देते, ऐसा ही होगा।”

परमात्मा साथ हैं तो चिंता किस बात की

[22]फिर प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, “इस कारण मैं तुमसे कहता
हूँ कि अपने+ जीवन की चिंता न करना कि तुम क्या खाओगे और तुम
क्या पहनोगे। [23]जीवन भोजन और कपड़ों से कहीं अधिक कीमती है।
[24]कौवों पर ध्यान दो। वे न बीज बोते हैं, न फसल इकठ्ठा करते हैं और
न उनके अनाज घर हैं, फिर भी दाता उन्हें पालता है। तुम पक्षियों से
कहीं अधिक कीमती हो। [25]चिंता करके तुममें से कौन मनुष्य अपनी
उम्र को एक पल भी बढ़ा सकता है? [26]यदि तुम्हारे पास इन छोटी
चीज़ों को काबू करने की शक्ति नहीं है, तो बाकी सब चीज़ों की चिंता क्यों करते हो?

27 "देखो, जंगली फूल कैसे बढ़ते हैं। वे अपने कपड़े बनाने के लिए
कुछ नहीं करते। लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि राजा शलोमो ने इन
फूलों में से एक के समान भी सुंदर कपड़े नहीं पहने होंगे! 28 यदि
परमात्मा घास को, जो आज मैदान में है और कल जला दी जाएगी,
इस प्रकार हरा-भरा रखते हैं तो, ओ थोड़ी आस्था रखने वालो, वह
तुम्हारा ध्यान क्यों न रखेंगे?
29 "तुम केवल इस बात के ध्यान में न लगे रहो कि क्या खाएँगे या
क्या पिएँगे और न ही इसकी कोई चिंता करो, 30 क्योंकि इन चीज़ों
को पाने की कोशिश तो संसार के सभी लोग करते हैं। तुम्हारे पिता
परमात्मा जानते हैं कि तुम्हें इनकी ज़रूरत है। 31 इसके बजाय तुम
पहले परमात्मा को अपना राजा मानकर हमेशा उनकी सेवा करो तब ये
सांसारिक चीजें भी तुम्हारी हो जाएँगी।
32 "हे मेरे शिष्यो, तुम जो भेड़ों के झुंड के समान हो, डरो मत! यह
तुम्हारे पिता परमात्मा की इच्छा है कि वह तुम्हें साम्राज्य प्रदान करें।
33 अपनी संपत्ति बेच दो और उससे मिले पैसे को गरीबों को दान कर
दो। अपने लिए परमस्वर्ग में धन जमा करो जो कभी नष्ट नहीं होगा, इसे
चोर कभी नहीं लूटेंगे, और कीड़े कभी खराब नहीं करेंगे। 34 क्योंकि
जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।"

चौकन्ने रहो, मालिक कभी भी आ सकते हैं

प्रभु येशु ने आगे कहा, 35 "हर स्थिति के लिए अपने आप को
हमेशा तैयार रखो और अपने दीप जलाए रखो, 36 जैसे वे नौकर
जो अपने मालिक का इंतज़ार करते हैं कि वह शादी से कब
लौटे और मालिक के खटखटाने पर वे तुरंत दरवाज़ा खोल दें।
37 जो नौकर जगे हुए हैं और उसकी सेवा के लिए तैयार है मालिक
खुश होकर उन्हें इनाम देगा। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मालिक
ही नौकर के कपड़े पहन कर उन्हें भोजन के लिए बैठाएगा तथा
स्वयं उन्हें भोजन परोसेगा। 38 यदि वह आधी रात में या सुबह होने
से पहले आकर भी उन्हें इसी प्रकार पाए तब वह उन नौकरों को
इनाम देगा। 39 इतना जान रखो कि यदि घर के मालिक को पता
रहता कि चोर किस समय आ रहा है, तो वह अपने घर में चोरी

न होने देता। [40]तुम भी हमेशा तैयार रहो, क्योंकि जिस पल की
तुम कल्पना भी नहीं करोगे, उसी समय तेजस्वी मानव-पुत्र आ
जाएगा।”

[41]शिष्य पतरस ने पूछा, “प्रभुजी, यह कहानी आप सिर्फ हमें सुना रहे
हैं या सबको?”

[42]प्रभु येशु ने कहा, “तो कौन है वफादार और बुद्धिमान नौकर?
उस मालिक के नौकरों में से वह कौन है जिसको वह अपने दूसरे
नौकरों पर नियुक्त करे कि तय समय पर नौकरों को खाने का
सामान दे? [43]जब मालिक अपने घर वापस लौटकर देखता है कि
नौकर ने सारा काम अच्छी तरह से किया है तो मालिक नौकर को
इनाम ज़रूर देगा। [44]मैं तुमसे सच कहता हूँ, मालिक उस वफादार
नौकर को अपनी पूरी संपत्ति की देखभाल करने का अधिकार
देगा।

[45]“लेकिन मान लो कि वह नौकर सोचता है कि उसका मालिक तो
बहुत समय तक नहीं लौटेगा और वह अन्य सभी नौकर-नौकरानियों
को पीटना शुरू कर दे, खाए-पिए और नशे में धुत हो जाए। [46]यदि
ऐसा होता है, तो मालिक ऐसे समय में आएगा जब नौकर ने सोचा भी
नहीं होगा। फिर मालिक उस नौकर को कड़ी सज़ा देगा और वह उन
नौकरों के समान बाहर फेंक दिया जाएगा जो भरोसे के लायक नहीं
हैं।*

[47]“वह नौकर जो अपने मालिक की इच्छा जानते हुए भी तैयार
नहीं रहा, और न उसकी इच्छा पर चला, वह बहुत मार खाएगा।
[48]लेकिन जो नौकर यह नहीं जानता कि उसका मालिक उससे क्या
काम करवाना चाहता है, और वह अनजाने में कुछ ऐसा करता
है जिसके लिए उसे सज़ा मिलनी चाहिए, तो उसे ज़्यादा मार नहीं
खानी पड़ेगी। यदि परमात्मा ने तुमको कोई ज़िम्मेदारी दी है, तो
वह तुमसे जिम्मेदारी उठाने की उम्मीद करते हैं। यदि उन्होंने तुमको
बहुत अधिक जिम्मेदारी दी है, वह तुमसे और भी अधिक की उम्मीद
रखेंगे।”

---

* **12:46** *उस नौकर को कड़ी सज़ा देगा* - या, “उसके टुकड़े-टुकड़े कर।”

मुक्तिदाता येशु आज्ञा पालन का परिणाम

प्रभु येशु ने आगे कहा, [49]“मैं पृथ्वी पर आग बरसाने का लक्ष्य लेकर
आया हूँ! काश, यह पहले हो गया होता। [50]मुझे परेशानियों के सागर* से
गुज़रना है और जब तक वह गुज़र नहीं जाता, मैं बोझ में रहूँगा। [51]क्या
तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर शांति कराने आया हूँ? मैं कहता हूँ, नहीं।
मैं फूट डालने आया हूँ, [52]क्योंकि अब से एक ही परिवार के पाँच व्यक्ति
एक-दूसरे के विरुद्ध हो जाएँगे, तीन के विरुद्ध दो और दो के विरुद्ध
तीन। [53]वे एक-दूसरे का विरोध करेंगे, पिता पुत्र का और पुत्र पिता का,
माँ बेटी का और बेटी माँ का, सास बहू का और बहू सास का।”

युग के अंत के लक्षण की पहचान

[54]प्रभु येशु ने लोगों से यह भी कहा, “पश्चिम में बादल उठते देखकर
तुम तुरंत कह देते हो कि बारिश होगी, और ऐसा ही होता है। [55]और
जब दक्षिणी हवा चलती है, तब तुम कहते हो कि गर्मी होगी, और
ऐसा ही होता है। [56]ढोंगीयों! पृथ्वी और आकाश को देखकर मौसम में
बदलाव की पहचान तो तुम कर लेते हो, फिर इस समय के बदलाव
को क्यों नहीं पहचानते?

[57]“तुम आपस में मिलकर अपने झगड़े क्यों नहीं निपटा लेते?
[58]जब अदालत में सुनवाई से पहले तुम्हारा शत्रु तुम्हें दिखे, तो उससे
समझौता करने की कोशिश करो। ऐसा न हो कि वह तुम्हें जज के पास
खींच ले जाए और जज तुम्हें सिपाही को सौंप दे, और सिपाही तुम्हें
जेल में डाल दे। [59]मैं तुमसे कहता हूँ, जब तक तुम पैसा-पैसा न चुका
दोगे, जेल से नहीं छूट सकते।”

13

सबको अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करना है

[1]इसी समय में प्रभु येशु को बताया गया था कि राज्यपाल पिलातुस
ने बलि चढ़ाते समय गलील प्रदेश के कुछ लोगों को मारकर बलि

---

* **12:50** *परेशानियों के सागर* - या, “पानी में डुबकी लगाना,” लेकिन यहाँ इसका अर्थ है, “कठिनाई का एक बड़ा समय,” यानी, उसे क्रूस पर रखा जाना। **12:53** मिका 7:6

के मांस के साथ उनका ख़ून मिलाया है। 2प्रभु येशु ने उन्हें उत्तर दिया,
“क्योंकि इन गलील प्रदेश के लोगों को इस तरह से मार दिया गया
था, क्या तुमको लगता है कि इससे साबित होता है कि उन्होंने अन्य
सभी गलील के लोगों से अधिक पाप किए थे? 3नहीं! मैं तुमसे कहता
हूँ कि यदि तुम अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप नहीं करते हो तो तुम सब
भी मर जाओगे। 4और उन अठारह लोगों के बारे में क्या कहोगे जब
सिलोम की मीनार उनके ऊपर गिरी और वे दबकर मर गए थे? क्या
वे यरूशलम शहर के अन्य सब निवासियों से ज़्यादा पापी थे? 5नहीं!
मैं कहता हूँ कि यदि तुम अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप नहीं करते हो तो
तुम सब भी मर जाओगे।”

ऐसे पेड़ का क्या लाभ जो फल न दे

6फिर प्रभु येशु ने यह कहानी सुनाई। “किसी मनुष्य के अंगूर के बाग
में अंजीर का एक पेड़ था। वह उसका फल तोड़ने आया परंतु उसे
कुछ न मिला। 7इस पर उसने माली से कहा, ‘देखो, तीन साल से मैं
इस अंजीर के पेड़ का फल लेने आ रहा हूँ, पर मुझे कुछ नहीं मिलता।
इसे काट डालो, यह बेकार ही ज़मीन को घेरे हुए है।’ 8माली ने उत्तर
दिया, ‘मालिक, इसे इस साल और रहने दीजिए। मैं इसके आसपास
की ज़मीन खोदकर इसमें खाद डालूँगा। 9यदि यह अगले साल फल दे
तो ठीक, यदि न दे तो काट डालें।’”

क्या धार्मिक नियम भलाई करने से रोकते हैं?

10एक आराम-दिवस के मौके पर प्रभु येशु किसी यहूदी सत्संग भवन
में उपदेश दे रहे थे। 11वहाँ एक स्त्री थी जिसे अठारह साल से अशुद्ध
आत्मा ने विकलांग किया हुआ था। वह स्त्री कुबड़ी हो गई थी और
अपने आपको पूरी तरह सीधा नहीं कर पाती थी। 12प्रभु येशु ने उसे
देखकर अपने पास बुलाया और कहा, “बहन, तुम विकलांगता से
मुक्त हो जाओ।” 13तब प्रभु येशु ने उसे छुआ और तुरंत ही वह सीधी
हो गई और परमात्मा का गुणगान करने लगी।
14इस पर सत्संग भवन का मुखिया प्रभु येशु से नाराज़ हो गया
क्योंकि प्रभु येशु ने उस स्त्री को आराम-दिवस के मौके पर स्वस्थ

किया था। मुखिया लोगों से बोला, “छः दिन हैं जिनमें काम करना
ठीक है। उन दिनों में आओ और स्वस्थ हो, किंतु आराम-दिवस के
मौके पर नहीं।”
15प्रभु येशु ने उसे उत्तर दिया, “ढोंगीयो! क्या आराम-दिवस के मौके
पर तुममें से हर एक व्यक्ति अपने बैल या गधे को खोलकर पानी
पिलाने नहीं ले जाता? 16फिर यह स्त्री तो कुलपिता अब्राहम की वंशज
है जो अठारह सालों से शैतान के बंधन में थी। क्या आराम-दिवस पर
इसे बंधन मुक्त करना सही नहीं था?”
17प्रभु येशु की इस बात से सभी विरोधी तो शर्मिंदा हो गए, पर अन्य
सारे लोग उनके चमत्कारी कामों के कारण खुश हो रहे थे।

परमात्मा का साम्राज्य कैसे बढ़ता है

18तब प्रभु येशु ने कहा, “परमात्मा का साम्राज्य किसके समान है?
इसकी तुलना मैं किस से करूँ? 19वह राई के बीज के समान है जिसे
किसी मनुष्य ने लिया और अपने बगीचे में बो दिया। पौधा बढ़ा और
पेड़ बन गया, और आकाश के पक्षी आकर उसकी शाखाओं में बसेरा
करने लगे।”
20प्रभु येशु ने फिर कहा, “परमात्मा के साम्राज्य की तुलना मैं किससे
करूँ? 21वह तो खमीर के समान है जिसे किसी स्त्री ने लिया और
उसे दस किलो मैदे में मिला दिया और सब गूँधा हुआ मैदा खमीर के
कारण फूल गया।”

क्या सभी को मुक्ति प्राप्त होगी?

22प्रभु येशु नगर-नगर और गाँव-गाँव घूमते और शिक्षा देते हुए
यरूशलम शहर की ओर जा रहे थे। 23किसी ने उनसे पूछा, “प्रभुजी,
क्या कुछ ही लोग बुरे कर्मों के दंड से बच पाएँगे?”
प्रभु येशु ने कहा, 24“संकरे दरवाज़े से अंदर जाने की कोशिश करो,
क्योंकि बहुत से लोग अंदर जाने की कोशिश करेंगे, पर वे अंदर नहीं
जा पाएँगे। 25जब घर का मालिक उठकर दरवाज़ा बंद कर लेगा तो
तुम लोग बाहर खड़े हुए दरवाज़ा खटखटाओगे और कहोगे, ‘श्रीमान
जी, हमारे लिए दरवाज़ा खोलिए।’ वह उत्तर देगा, ‘मैं नहीं जानता कि

तुम कहाँ से आए हो।' [26]तब तुम कहने लगोगे, 'हमने आपके साथ
खाया-पिया था और आपने हमारे नगरों और गाँवों में शिक्षा दी थी।'
[27]परंतु वह तुमसे कहेगा, 'मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ से आए हो। ओ
कुकर्मियो, तुम सब मुझसे दूर हो!'
[28]"जब तुम कुलपिता अब्राहम, इसहाक, याकोब और सब परमात्मा
के प्रवक्ताओं को परमात्मा के साम्राज्य में देखोगे और स्वयं को बाहर
निकाला हुआ पाओगे, तब तुम रोओगे और दाँत पीसोगे। [29]लेकिन
पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग आएँगे और परमात्मा के
साम्राज्य की दावत में शामिल होंगे। [30]सच तो यह है कि जिन्हें यहाँ
कुछ नहीं समझा जाता है, वहाँ उन्हें बहुत सम्मान मिलेगा और जिन्हें
यहाँ बहुत कुछ समझा जाता है, उन्हें वहाँ कोई स्थान नहीं मिलेगा।"

ढीठ लोगों को देखकर प्रभु का दुखी होना

[31]उसी समय कुछ फरीसी धार्मिक पंथ के लोग आकर प्रभु येशु से
कहने लगे, "आप यहाँ से चले जाएँ, क्योंकि राजा हेरोदेस आपको मार
डालना चाहता है।"
[32]वह उनसे बोले, "जाकर उस चालाक लोमड़ी से कहो, 'मैं आज
और कल अशुद्ध आत्माओं को निकालता और बीमारों को स्वस्थ
करता रहूँगा, और तीसरे दिन मेरा काम पूरा हो जाएगा। [33]परंतु आज,
कल और परसों मुझे चलते रहना है, क्योंकि यरूशलम शहर वह जगह
है जहाँ हमेशा परमात्मा के प्रवक्ताओं की हत्या होती है।'"
प्रभु येशु ने आगे कहा, [34]"ओ यरूशलम शहर, ओ यरूशलम! तूने
परमात्मा के प्रवक्ताओं की हत्या कर दी और पथराव करके उन
संदेश-वाहकों को मार डाला जिन्हें तेरे पास भेजा गया था। मैंने कितनी
बार चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को पंखों के नीचे इकट्ठा करती
है, वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को इकट्ठा करूँ, पर यरूशलम, तूने यह न
चाहा। [35]देखो, तुम्हारा घर* उजाड़ छोड़ा जाता है। मैं तुमसे कहता
हूँ, तुम मुझे उस समय तक नहीं देखोगे जब तक यह न कहोगे, 'प्रभु
परमात्मा के नाम से आने वाले का गुणगान हो।'"

---

* **13:35** *तुम्हारा घर* - या, "तुम्हारा मंदिर।" **13:35** भजन शास्त्र 118:26

14

धार्मिक नियमों के बारे में ढोंग

[1]एक आराम-दिवस के मौके पर प्रभु येशु किसी प्रसिद्ध फरीसी के
घर भोजन करने गए। वहाँ के कुछ लोग उन पर नज़र रखे हुए थे कि
उनकी कोई गलती पकड़ें। [2]वहाँ हाथ-पैर में सूजन रोग से पीड़ित एक
मनुष्य प्रभु येशु के सामने आया। [3]प्रभु येशु ने धर्मगुरुओं और फरीसियों
से पूछा, “आराम-दिवस के मौके पर स्वस्थ करना मोशे के नियम और
शिक्षा के अनुसार सही है या नहीं?” [4]पर धर्मगुरु और फरीसी चुप
रहे। तो प्रभु येशु ने रोगी को छूकर स्वस्थ किया और उसे जाने दिया।
[5]तब प्रभु येशु ने उनसे पूछा, “यह बताओ, यदि तुममें से किसी का
पुत्र या बैल आराम-दिवस के मौके पर गड्ढे में गिर जाए तो क्या तुम
उसे तुरन्त ही बाहर न निकालोगे?” [6]धर्मगुरु और फरीसी इसका कोई
उत्तर न दे सके।

ऊँचे स्थान के लिए मत भागो

[7]जब प्रभु येशु ने मेहमानों को मुख्य-मुख्य जगहों को चुनते देखा तब
उन्होंने यह शिक्षा दी, [8]“जब कोई तुम्हें शादी में बुलाए तब मुख्य जगह
पर मत बैठो, कहीं ऐसा न हो कि उसने तुमसे भी अधिक सम्मानित
व्यक्ति को बुलाया हो। [9]और जिस व्यक्ति ने तुम्हें और उस अधिक
सम्मानित व्यक्ति को बुलाया है, वह आकर तुमसे कहेगा, ‘अपना
स्थान इनको दीजिए।’ तब तुमको शर्मिंदा होकर सबसे पीछे बैठना
पड़ेगा।

[10]“इसलिए जब तुम्हें बुलाया जाए तब जाकर सबसे पीछे बैठो कि
जब तुम्हें निमंत्रित करने वाला व्यक्ति आए और तुमसे कहे, ‘मित्र,
आगे आकर बैठिए।’ तो इससे मेहमानों के सामने तुम्हारी बड़ाई होगी।
[11]हर एक व्यक्ति जो अपने आपको दूसरों से ऊँचा समझता है, उसे
नीचा किया जाएगा और जो अपने आपको दूसरों से छोटा समझता है,
उसे ऊँचा किया जाएगा।”

[12]प्रभु येशु ने अपने निमंत्रण देने वाले से भी कहा, “जब तुम दोपहर
या रात के खाने की दावत दो, तब अपने मित्रों, भाइयों, रिश्तेदारों या
अमीर पड़ोसियों को मत बुलाओ, क्योंकि वे भी तुम्हें निमंत्रित करके

तुम्हारा बदला चुका देंगे। [13]लेकिन जब तुम दावत दो तब गरीबों,
अपंगों, लँगड़ों और अंधों को बुलाओ। [14]तब तुम्हें परमात्मा का
आशीर्वाद मिलेगा, क्योंकि गरीब होने के कारण वे तुम्हें दावत नहीं
दे सकते, किंतु अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के दिन धर्मी भक्तों के
ज़िन्दा होने के अवसर पर परमात्मा तुम्हें इसका फल देंगे।"

परमात्मा की दावत में कौन-कौन आएगा?

[15]यह सुनकर दावत में बैठा हुआ कोई मेहमान प्रभु येशु से बोला,
"भाग्यशाली है वह हर एक जो परमात्मा के साम्राज्य में भोजन करेगा।"
[16]प्रभु येशु ने उससे कहा, "किसी मनुष्य ने बड़ी दावत दी और
बहुत लोगों को बुलाया। [17]दावत का समय होने पर उसने बुलाए हुए
व्यक्तियों को अपने सेवक द्वारा खबर भेजी, 'आइए, क्योंकि सबकुछ
तैयार है।' [18]पर वे सब-के-सब बहाना करने लगे। पहले ने कहा, 'मैंने
एक खेत खरीदा है और उसे देखने के लिए मेरा जाना ज़रूरी है।
मुझे माफ़ कीजिएगा, मैं नहीं आ सकता।' [19]दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच
जोड़ी बैल खरीदे हैं और उनको परखने जा रहा हूँ। इसलिए मुझे माफ़
कीजिएगा, मैं नहीं आ सकता।' [20]एक और बोला, 'मेरी अभी शादी हुई
है, इसलिए नहीं आ सकता।'
[21]"सेवक ने लौटकर ये बातें अपने मालिक को बताईं। घर का
मालिक बहुत नाराज़ हुआ। उसने अपने सेवक से कहा, 'तुरंत शहर के
मार्गों और गलियों में जाओ और गरीबों, अपंगों, लँगड़ों और अंधों को
यहाँ ले आओ।' [22]कुछ समय बाद सेवक ने बताया, 'मालिक, आपने
जो आज्ञा दी थी, वह पूरी हो चुकी है। फिर भी बहुत लोगों के लिए
जगह बची है।' [23]इस पर मालिक ने दास से कहा, 'अब शहर के बाहर
गलियों में जाओ और लोगों से कहो कि वे ज़रूर आएँ ताकि मेरा घर
भर जाए। [24]मैं तुमसे कहता हूँ, उन मेहमानों को जिन्हें मैंने पहले बुलाया
था उन में से कोई भी व्यक्ति मेरी दावत का स्वाद चखने न पाएगा।'"

शिष्य बनने की वास्तविकता को जानना

[25]अब लोगों की एक बड़ी भीड़ प्रभु येशु के साथ चल रही थी। वह
पीछे मुड़कर उनसे कहने लगे, [26]"कोई व्यक्ति मेरे पास आता है और

यदि वह मुझसे अधिक अपने माता-पिता, पत्नी और बच्चों, भाइयों
और बहनों, यहाँ तक कि अपने जीवन को प्रिय मानता है, तो वह मेरा
शिष्य नहीं हो सकता। 27यदि कोई अपना क्रूस उठा कर* मेरे पीछे
चलने को तैयार नहीं हो, तो वह मेरा शिष्य हो ही नहीं सकता।

28"तुममें से कौन ऐसा व्यक्ति है जो भवन बनाना चाहता हो, और
पहले बैठकर खर्चे का हिसाब न कर ले कि उसे पूरा करने के साधन
उसके पास हैं या नहीं? 29ऐसा न हो कि नींव डालने पर वह उसे पूरा
न कर सके और देखने वाले उसका मज़ाक उड़ाएँ 30कि इस मनुष्य ने
भवन बनवाना तो शुरू किया, पर उसे पूरा न कर पाया।

31"और कौन ऐसा राजा है जो दूसरे राजा से युद्ध करने निकले और
पहले बैठकर अच्छी तरह विचार न कर ले कि जो राजा बीस हजार
सैनिक लेकर मुझ पर हमला कर रहा है, क्या मैं दस हजार सैनिकों के
साथ उसका सामना कर सकूँगा? 32यदि नहीं, तो वह राजा के दूर रहते
ही राजदूत भेजकर उससे शांति-प्रस्ताव की चर्चा करेगा। 33इसलिए
पहले सोच-विचार कर लो। यदि तुम सब कुछ त्यागने को तैयार नहीं
हो, तो तुम मेरे शिष्य नहीं हो सकते।

34"नमक स्वाद बढ़ाने के लिए अच्छा है, परंतु यदि नमक अपना
स्वाद खो बैठे तो वह फिर किससे नमकीन किया जाएगा? 35यह अब
न तो भोजन के लिए अच्छा होगा, न ही भूमि और खाद के लिए केवल
इसे फेंका ही जा सकता है। जिसके कान खुले हों वह सुन ले!"

15

खोई हुई भेड़ मिलने पर खुशी मनाना

1सब बेईमान टैक्स लेने वाले और पापी लोग प्रभु येशु के प्रवचन
सुनने के लिए उनके पास आ रहे थे। 2इस पर फरीसी और धर्मगुरु
बड़बड़ाने लगे, "यह तो पापियों से दोस्ती करता और उनके साथ
उठता-बैठता है।"

3तब प्रभु येशु ने पापियों से दोस्ती रखने का कारण बताते हुए
धर्मगुरुओं को एक कहानी सुनाई, 4"मान लो, तुममें से किसी के पास

---

* **14:27** *अपना क्रूस उठा कर* - या, "सताए जाने और यहाँ तक कि मरने के लिए"

सौ भेड़ें हों और उनमें से एक खो जाए, तो क्या तुम निन्यानवे भेड़ों को
मैदान में छोड़कर खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ते न रहोगे जब तक वह मिल
न जाए? 5खोई हुई भेड़ के मिल जाने पर तुम उसे खुशी से कंधे पर
उठा लोगे, 6और घर आकर अपने दोस्तों और पड़ोसियों को इकट्ठा
करके उनसे कहोगे, ‘मेरे साथ खुशी मनाओ, क्योंकि मेरी खोई हुई
भेड़ मिल गई है।’ 7इसी प्रकार, जब कोई अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप
कर लेता है तो परमात्मा और उनके स्वर्गदूत बहुत खुशी मनाते हैं।
मैं तुमसे कहता हूँ, उस समय परमस्वर्ग में उस पापी व्यक्ति के लिए
उन निन्यानवे धर्मी भक्तों के मुकाबले में अधिक खुशी मनाई जाती है
जिन्होंने पहले से ही अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप कर लिया है।”

खोया हुआ सिक्का मिलने पर खुशी मनाना

8प्रभु येशु ने लोगों को एक और कहानी सुनाई, “कौन सी ऐसी स्त्री
होगी जिसके पास दस चांदी के सिक्के हों और उनमें से एक खो जाए
तो वह दीपक जलाकर घर का कोना-कोना न छान मारे और जब तक
सिक्का मिल न जाए, मन लगाकर उसे ढूंढ़ती न रहे? 9तब वह सहेलियों
और पड़ोसियों को इकट्ठा कर और उनसे कहेगी, ‘मेरे साथ खुशी
मनाओ, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।’ 10मैं तुमसे सच
कहता हूँ, इसी प्रकार जब कोई पापी अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप
करता है तो परमात्मा और उनके स्वर्गदूत बहुत खुशी मनाते हैं।”

मार्ग से भटके पुत्र के वापस आने पर खुशी मनाना

11तब प्रभु येशु ने एक और कहानी सुनाई, “किसी मनुष्य के दो
बेटे थे। 12उनमें से छोटे ने पिता से कहा, ‘संपत्ति में से मेरा हिस्सा मुझे
दीजिए।’ तो पिता ने संपत्ति उन दोनों बेटों में बाँट दी।

13“कुछ दिन बाद ही छोटे बेटे ने अपने हिस्से में आया, सब कुछ
लिया और विदेश चला गया जहाँ उसने अपना सारा पैसा शानदार
जीवन बिताने में उड़ा दिया। 14जब वह अपना सबकुछ खर्च कर
चुका था उस जगह भयंकर अकाल पड़ा और वह कंगाल हो गया।
15उसे उस देश में एक आदमी मिला जिससे उसने कहा, ‘मुझे कुछ भी
काम करने को दे दो,’ और उस आदमी ने उसे अपने खेत में सूअरों

की देखभाल करने का काम दिया। [16]वह इतना भूखा था की जो खाना
सूअर खाते थे उसको खाने के लिए भी वह तरसता था, पर उसे कोई
कुछ नहीं देता था।
[17]“अब वह सोचने लगा कि वह क्या कर रहा है तो उसने अपने आप
से कहा, ‘मेरे पिता के कितने ही नौकरों को भर-पेट भोजन मिलता है
और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। [18]मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा
और उनसे कहूँगा, “पिताजी, मैंने परमात्मा के और आपके विरुद्ध पाप
किया है। [19]अब मैं इस काबिल नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।
आप मुझे अपने एक नौकर के समान ही रख लीजिए।”’
[20]“तब वह उठा और अपने पिता के पास चला। अभी वह दूर ही था
कि उसके पिता ने उसे देख लिया और पिता का मन दया से भर गया।
पिता ने दौड़कर उसे गले लगा लिया और उसको बहुत प्यार किया।
[21]बेटे ने कहा, ‘पिताजी, मैंने परमात्मा के और आपके विरुद्ध पाप
किया है। अब मैं इस काबिल नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।’
[22]“परंतु पिता ने अपने सेवकों से कहा, ‘जल्दी करो, अच्छे-से-अच्छे
कपड़े निकालकर इसे पहनाओ और इसकी उँगली में अँगूठी और पैर
में जूते पहनाओ। [23]तरह-तरह के पकवान* बनाओ कि हम खाएँ और
खुशी मनाएँ। [24]क्योंकि मेरा यह बेटा मर गया था, परंतु फिर जी गया है,
खो गया था और अब मिल गया है।’ इस प्रकार वे खुशी मनाने लगे।
[25]“उस समय बड़ा बेटा खेत में काम कर रहा था। जब वह लौटा
और घर के पास पहुँचा तब उसे संगीत और नाचने-गाने की आवाज़
सुनाई पड़ी। [26]उसने एक नौकर को बुलाकर पूछा, ‘यह सब क्या हो
रहा है?’ [27]सेवक ने बताया, ‘आपका छोटा भाई ठीक-ठाक घर वापस
आ गया है और आपके पिताजी ने तरह-तरह के पकवान बनवाए हैं।’
[28]“इस पर बड़े बेटे को बहुत गुस्सा आया और उसने अंदर जाने से
इंकार कर दिया। तब उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने लगा।

---

* **15:23** *तरह-तरह के पकवान* - (या, “मोटा जवान पशु”) यहूदी समाज में महत्वपूर्ण अवसरों पर तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं जिसमें मांस भी शामिल था, हालाँकि इस कहानी में प्रभु येशु के कहने का मुख्य बिंदु मांस खाना या न खाना नहीं हैं। प्रभु येशु के राजदूतों ने सिखाया कि मांसाहारी और शाकाहारी दोनों अच्छे हैं (रोमियों 14:1-23 देखें), परंतु जब कोई अपने पापों से पश्चाताप करता है, तो सबको अपनी सोच के अनुसार मज़ेदार खाने की चीज़ों के साथ खुशियाँ मनानी चाहिए।

29लेकिन उसने अपने पिता से कहा, 'देखिए, मैं इतने सालों से आपकी
सेवा कर रहा हूँ और मैंने कभी आपकी आज्ञा नहीं टाली। तो भी
आपने मेरे और मेरे दोस्तों के लिए एक छोटी सी दावत भी नहीं दी
कि मैं उनके साथ खुशी मनाता। 30परंतु जब आपका यह बेटा आया
जिसने आपका पैसा वेश्याओं में उड़ा दिया, तो आपने उसका स्वागत
तरह-तरह के पकवान बनवाकर किया!'

31"पिता ने उससे कहा, 'बेटा, तुम तो हमेशा मेरे साथ हो और जो
कुछ मेरा है, वह सब तुम्हारा है। 32परंतु हमारा खुशी मनाना ठीक है,
क्योंकि तुम्हारा यह भाई मर गया था, लेकिन फिर जीवित हो गया है।
वह खो गया था, फिर मिल गया है।'"

16

केवल परमात्मा ही भक्ति के योग्य हैं धन नहीं

1प्रभु येशु ने शिष्यों से यह कहा। "किसी अमीर मालिक का एक
मैनेजर था जो उसके व्यापार की देखभाल करता था। उसके मालिक
के सामने उस पर इल्ज़ाम लगाया गया, 'यह आपका पैसा बर्बाद कर
रहा है।' 2मालिक ने उसे बुलाकर पूछा, 'मैं तुम्हारे बारे में यह क्या सुन
रहा हूँ? अपने काम का सारा हिसाब-किताब दे दो, क्योंकि अब तुम
मेरे लिए काम नहीं कर सकते।'

3"मैनेजर ने अपने मन में सोचा, 'अब मैं क्या करूँ? मालिक मुझे
नौकरी से निकाल रहा है। खेत में काम करने की ताकत मुझमें नहीं
और भीख माँगने में मुझे शर्म आती है। 4अच्छा, अब मैं समझ गया कि
मुझे क्या करना चाहिए ताकि नौकरी से निकाल दिए जाने पर भी लोगों
की दोस्ती मेरे साथ बनी रहे और वे अपने घरों में मुझे आसरा दें।'

5"तो उसने अपने मालिक के कर्ज़दारों को एक-एक करके बुलाया
और पहले से पूछा, 'तुम पर मेरे मालिक का कितना कर्ज़ा है?' 6उसने
कहा, 'तीन हजार लीटर तेल।' तब मैनेजर ने कर्ज़दार से बोला, 'यह
अपने कर्ज़ का कागज़ लो, बैठो और तुंरत घटाकर इसे पंद्रह सौ लीटर
लिख दो।'

7"तब मैनेजर ने दूसरे कर्ज़दार से पूछा, 'तुम पर कितना कर्ज़ है?'
"उसने उत्तर दिया, 'तीस टन गेहूँ।'

"तब वह उससे बोला, 'अपने कर्ज़ का कागज़ लो और तीस के बजाय चौबीस टन लिख दो।'

[8]"जब मालिक को इसके बारे में पता चला तो उसने अपने बेईमान मैनेजर की चालाकी की तारीफ की। यह सच है की सांसारिक लोग आपसी लेन-देन में परमात्मा से प्रकाश पाए लोगों से ज़्यादा चालाक हैं।

[9]"मेरे शिष्यो, तुम्हारे लिए यह एक सीख है कि तुम इस सांसारिक पैसे से दूसरों की मदद करो और अपने लिए दोस्त बना लो, ताकि जब तुम्हारा पैसे और जीवन दोनों समाप्त हो जाए, तो वे* परमस्वर्ग में बने घरों में* तुम्हें आसरा देंगे।

[10]"जो सौंपे गए छोटे कामों को ईमानदारी से करता है वह बड़े कामों को भी ईमानदारी से करेगा, किंतु जो छोटे काम में बेईमान है, वह
बड़े काम में भी बेईमान निकलता है। [11]इसलिए यदि तुम संसार के पैसे
में ईमानदार न हुए तो तुमको परमस्वर्ग का सच्चा धन कौन सौंपेगा?
[12]यदि तुम अन्य लोगों की चीज़ों के प्रति ईमानदार नहीं हो, तो निश्चय वह तुम्हें परमस्वर्ग में कोई ज़िम्मेदारी नहीं देगा।

[13]"कोई सेवक दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से नफरत करेगा और दूसरे से प्रेम, या एक से वफादार रहेगा और दूसरे से बेइमानी करेगा। तुम परमात्मा और पैसे दोनों की भक्ति नहीं कर सकते।"

[14]फरीसी पंथ के लोग पैसे के लालची थे। ये सब बातें सुनकर वे प्रभु
येशु का मज़ाक उड़ाने लगे। [15]प्रभु येशु ने उनसे कहा, "दूसरों के सामने
तुम अपने आप को अच्छा दिखाते हो, परंतु परमात्मा तुम्हारे मन को जानते हैं। बहुत से लोगों की नज़र में जो चीज़ें घमंड के लायक हैं, परमात्मा उन चीजों से नफरत करते हैं।"

[16]"समर्पण-स्नान दाता योहन के समय तक मोशे के नियम और शिक्षा तथा अन्य परमात्मा के प्रवक्ताओं की पुस्तकें लोगों को सही रास्ता दिखाते रहे। योहन के समय से परमात्मा के साम्राज्य का शुभ संदेश

---

* **16:9** *वे* - या, जिसका अर्थ "परमात्मा, उनके स्वर्गदूत, और उनके मरे हुए भक्त"

* **16:9** *परमस्वर्ग में बने घरों में* - अर्थात् "शाश्वत निवास में।"

फैलता जा रहा है और हर एक व्यक्ति से परमात्मा के साम्राज्य में आने
के लिए ज़ोर देकर विनती की गई है। [17]मोशे के नियम और शिक्षा में से
कुछ नहीं मिटेगा। इसके मुकाबले पृथ्वी और आकाश का मिट जाना
ज़्यादा आसान होगा!

[18]“उदाहरण के लिए, जो अपनी पत्नी को छोड़कर* दूसरी औरत
से शादी करता है, वह उसके साथ यौन पाप करता है। वह पुरुष जो
तलाकशुदा महिला से शादी करता है वह भी उसके साथ यौन पाप
करता है।”

गरीबों की मदद न करने का परिणाम नरक

प्रभु येशु ने कहा, [19]“एक अमीर मनुष्य था जो महंगे कपड़े पहनता था
और उसका जीवन सब सुख-सुविधाओं से भरा था। [20]उसकी कोठी के
दरवाज़े पर फोड़ो से भरा हुआ लाज़रस नामक एक गरीब मनुष्य पड़ा
रहता था। [21]वह चाहता था कि उसे अमीर आदमी के बचे हुए खाने
की झूठन ही कोई लाकर दे दे। उसकी हालत इतनी खराब थी कि कुत्ते
आकर उसके घाव चाटा करते थे।

[22]“अब ऐसा हुआ कि गरीब लाज़रस मर गया और स्वर्गदूत उसे ले
गए कि वह कुलपिता अब्राहम के साथ सम्मानित स्थान पर बैठे।
वह अमीर भी मरा और गाड़ा गया, [23]पर वह मृत्युलोक में पीड़ा सह
रहा था। वहाँ से उसने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और दूर से कुलपिता
अब्राहम और लाज़रस को एकसाथ बैठे देखा।

[24]“तब अमीर व्यक्ति पुकार उठा, ‘कुलपिता अब्राहम, मुझ पर दया
कीजिए। लाज़रस को भेजिए कि वह अपनी अँगुली का सिरा पानी में
डुबाकर मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस आग में जल रहा हूँ।’

[25]“पर कुलपिता अब्राहम ने उससे कहा, ‘पुत्र, याद करो जब तुम
ज़िन्दा थे तो अपने जीवन में सब सुख-सुविधाएँ प्राप्त कर चुके थे और
इसी प्रकार लाज़रस ने अपने जीवन में बहुत सी परेशानियाँ सही हैं।
परंतु अब वह यहाँ शांति में है और तुम पीड़ा में हो। [26]इसके अलावा

---

* **16:18** *छोड़कर* - मत्तियाह 5:31 में प्रभु येशु इस बात में जोड़ते हैं कि अवैध सम्बन्ध को छोड़ किसी अन्य कारण से जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है तो वह उस से पाप कराता है।

हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई है। यदि कोई यहाँ से तुम्हारे
पास जाना चाहे तो नहीं जा सकता, और न वहाँ से कोई हमारे पास
आ सकता है।'
[27]"इस पर अमीर मनुष्य ने कहा, 'हे कुलपिता अब्राहम, मैं विनती
करता हूँ कि लाज़रस को मेरे परिवार के पास भेज दीजिए [28]कि वह मेरे
पाँचों भाइयों को चेतावनी दे, ताकि वे इस पीड़ा की जगह पर न आएँ।'
[29]"अब्राहम ने कहा, 'उनके पास परमात्मा के प्रवक्ता मोशे और
उनके अन्य प्रवक्ताओं के द्वारा लिखी गईं पुस्तकें हैं। वे उनकी सुनें।'
[30]"अमीर आदमी बोला, 'नहीं, कुलपिता अब्राहम! यदि मरने के बाद
कोई ज़िन्दा होकर उनके पास जाए तो वे अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप
करेंगे।'
[31]"परंतु अब्राहम ने उत्तर दिया, 'जब उन्होंने परमात्मा के प्रवक्ता
मोशे और अन्य प्रवक्ताओं की ही नहीं सुनी तो यदि कोई मरने के बाद
ज़िन्दा होकर उनके पास जाए तो वे उसकी भी नहीं सुनेंगे।'"

17

पश्चाताप करने वाले को माफ करो

[1]प्रभु येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "पाप के जाल में फँसने का समय
आएगा ज़रूर, लेकिन परमात्मा उस व्यक्ति को भयानक दंड देंगे
जिसने वह जाल बिछाया है। [2]जो पाप का जाल बिछाकर मासूम लोगों
को फँसाता हैं, उसके लिए परमात्मा के द्वारा दंड भोगने से अच्छा
होता कि उसके गले में एक चक्की का पत्थर बाँधा जाता और गहरे
समुद्र में फ़ेंक दिया जाता। [3]इसलिए सावधान रहो।
"यदि भक्त भाई या बहन पाप करे तो उसे समझाओ। और यदि वह
अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करे, तो उसे माफ कर दो। [4]यदि वह दिन
में सात बार तुम्हारे विरुद्ध पाप करे और सातों बार* आकर तुमसे कहे,
'मैं अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करता हूँ, मुझे माफ कर दो!' तो तुम
उसे माफ कर दो।"

---

* **17:4** *सातों बार* - यह वह तरीका था जिससे यहुदी लोग कहा करते थे, जितनी बार ज़रूरी हो उतनी बार माफ करते रहो!

[5]तब प्रभु येशु के राजदूतों ने उनसे कहा, “हमारी आस्था को और
मज़बूत कीजिए!”

[6]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “यदि तुममें राई के बीज बराबर भी आस्था
हो और तुम इस शहतूत के पेड़ से कहो कि उखड़ जा और समुद्र में
लग जा, तो वह तुम्हारी आज्ञा मान लेगा।

[7]“तुममें ऐसा कौन मालिक है जिसका सेवक खेत में हल
चलाकर या चारागाह में भेड़ें चराकर आए तो मालिक उससे कहे,
‘जल्दी आओ, और मेरे साथ खाना खाओ।’ [8]कोई भी नहीं कहेगा!
बल्कि मालिक कहेगा, ‘खाना तैयार करो और जब तक मैं खा-पी
न लूँ, तुम मेरी सेवा करो। उसके बाद तुम भी खा-पी लेना।’ [9]क्या
मालिक नौकर को धन्यवाद देगा कि उसने उसकी बातें मानी?
नहीं! [10]इसी प्रकार तुम भी सब बातें मानने के बाद कहो, ‘यह
हमारा काम हैं। हमने केवल वही किया जो हमें करना चाहिए
था।’”

जो स्वस्थ हुए उनमें से धन्यवाद देने कौन लौटा

[11]प्रभु येशु यरूशलम शहर जाते समय समेरिया और गलील प्रदेश के
बीच से होकर निकले। [12]किसी गाँव में पंहुचने पर प्रभु येशु को दस
कोढ़ी मिले। कोढ़ियों ने दूर खड़े होकर [13]ऊँची आवाज़ में उनसे कहा,
“हे स्वामी येशु, हम पर दया कीजिए।”

[14]उनको देखकर प्रभु येशु ने कहा, “जाओ और अपने आपको
पुरोहितों को दिखाओ।” जाते-जाते वे स्वस्थ हो गए।

[15]तब उनमें से एक कोढ़ी, यह देखकर कि वह स्वस्थ हो गया
है, ऊँची आवाज़ में परमात्मा का गुणगान करता हुआ प्रभु येशु के
पास वापस लौट कर आया। [16]वह प्रभु येशु के चरणों पर गिरा और
धन्यवाद देने लगा। यह व्यक्ति समेरिया समाज से था।

[17]तब प्रभु येशु ने कहा, “क्या दस के दस स्वस्थ नहीं हुए? तो फिर
बाकी नौ कहाँ हैं? [18]क्या इस समेरिया निवासी के अलावा और कोई
ऐसा न निकला जो लौटकर परमात्मा का गुणगान करता?” [19]तब
उन्होंने उससे कहा, “उठो और जाओ। तुमने मुझपर आस्था रखी
इसलिए तुम स्वस्थ हो गए।”

परमात्मा के साम्राज्य और तेजस्वी मानव-पुत्र का आगमन

[20]कुछ फरीसियों के पूछने पर कि परमात्मा का साम्राज्य कब आ
रहा है, प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “परमात्मा का साम्राज्य ऐसे नहीं आएगा
जिसे तुम आँखों से देख पाओगे। [21]लोग यह नहीं कहेंगे, ‘देखो, यहाँ है’
या ‘वहाँ है।’ क्योंकि परमात्मा का साम्राज्य स्वयं तुम्हारे मनों में है।”*
[22]फिर प्रभु येशु ने शिष्यों से कहा, “भविष्य में तुम तेजस्वी मानव-पुत्र
को पृथ्वी पर लौटते हुए देखने के लिए तरसोगे, लेकिन तुम नहीं देख
पाओगे। [23]लोग तुमसे कहेंगे, ‘देखो, तेजस्वी मानव-पुत्र वहाँ है! देखो,
वह यहाँ है!’ पर तुम उनकी बात पर विश्वास न करना, [24]क्योंकि जैसे
बिजली आकाश में एक ओर से दूसरी ओर तक चमकती है, उसी
प्रकार तेजस्वी मानव-पुत्र अपने दिन में+ आएगा। [25]परंतु इससे पहले
यह ज़रूरी है कि वह बहुत दुख उठाए और इस पीढ़ी के लोग उसे
अस्वीकार करें। [26]जैसा परमात्मा के प्रवक्ता नोहा के समय में हुआ
वैसा ही तब भी होगा जब तेजस्वी मानव-पुत्र आने वाला होगा। [27]नोहा
के जहाज़ पर चढ़ने के दिन तक लोग खाते-पीते और शादी करते-कराते
रहे। तब जल-प्रलय हुआ और सब नष्ट हो गए।
[28]“इसी प्रकार कुलपिता अब्राहम के भतीजे लोत के दिनों में भी
हुआ। लोग खाते-पीते, खरीदते-बेचते, पेड़ लगाते और घर बनाते रहे।
[29]परंतु जिस दिन लोत सदोम शहर से निकला, उसी दिन आकाश
से आग और गंधक की बारिश हुई और सब नष्ट हो गए। [30]तेजस्वी
मानव-पुत्र के प्रकट होने के दिन भी ऐसा ही होगा। [31]उस दिन यदि
कोई छत पर हो, तो घर से कुछ भी लेने के लिए नीचे न उतरे। इसी
प्रकार जो खेत में हो, वह भी कुछ लाने के लिए मुड़कर वापस न
जाए। [32]लोत की पत्नी के साथ जो हुआ था उसे याद रखो।
[33]“जो अपना जीवन बचाने की कोशिश करेगा, वह उसे खोएगा और
जो खोएगा वह उसे बचाएगा। [34]मैं तुमसे कहता हूँ, उस रात दो व्यक्ति
एक पलंग पर सो रहे होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया
जाएगा। [35-36]दो महिलाएँ साथ-साथ चक्की पर अनाज पीसती होंगी, एक
ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।”+

---

* **17:21** *तुम्हारे मनों में है* - या, “तुम्हारे ही बीच में है।” **17:27** उत्पत्ति 6:9

[37]तब शिष्यों ने पूछा, “हे प्रभुजी, यह कहाँ होगा?”
प्रभु येशु ने कहा, “जहाँ शव पड़ा है, वहीं गिद्ध इकट्ठा होंगे।”

18

परमात्मा अपने लोगों की दुहाई ज़रुर सुनते हैं

[1]प्रभु येशु ने अपने शिष्यों को एक कहानी बताकर दिखाया कि
उन्हें कैसे प्रार्थना करते रहना चाहिए और कभी निराश नहीं होना
चाहिए, [2]“किसी शहर में एक जज रहता था। वह न तो परमात्मा का
आदर-सम्मान करता था और न ही किसी मनुष्य को कुछ समझता
था। [3]उसी शहर में एक विधवा रहती थी जो जज के पास आकर
बार-बार उससे विनती करती थी, ‘न्याय कीजिए और मेरे दुश्मन से मुझे
बचाइए।’

[4]“कुछ समय तक तो जज उसे टालता रहा। आखिरकार, एक दिन
उसने अपने आप से कहा, ‘मैं न तो परमात्मा का आदर-सम्मान करता हूँ
और न ही लोगों को कुछ समझता हूँ, [5]लेकिन मुझे इस विधवा की मदद
करनी पड़ेगी, क्योंकि वह मुझे बार-बार आकर परेशान करती रहती है।
अगर मैं ऐसा नहीं करूँगा, तो वह मेरी नाक में दम कर देगी।’”

[6]फिर प्रभु येशु ने कहा, “ध्यान दो, इस अधर्मी जज ने क्या कहा।
[7]तो क्या परमात्मा अपने चुने हुए लोगों का, जो दिन-रात उनकी दुहाई
देते हैं, इंसाफ नहीं करेंगे? क्या वह उनकी मदद करने में देरी करेंगे?
[8]मैं तुमसे कहता हूँ, परमात्मा जल्दी ही अपने चुने हुए लोगों का इंसाफ
करेंगे। फिर भी जब तेजस्वी मानव-पुत्र आएगा तो क्या वह पृथ्वी पर
ऐसी आस्था पाएगा?”

परमात्मा धार्मिक ढोंग जानते हैं

[9]फिर प्रभु येशु ने उन लोगों के बारे में एक कहानी सुनाई जो अपने
आप को दूसरों की तुलना में ज़्यादा अच्छा समझते हैं। [10]“दो मनुष्य
परमात्मा के मंदिर में प्रार्थना करने गए, एक फरीसी धार्मिक पंथ का
था और दूसरा टैक्स लेने वाला। [11]फरीसी खड़े होकर प्रार्थना* करने

---

* **18:11** *खड़े होकर प्रार्थना* - या “खड़े होकर मन-ही-मन में प्रार्थना।”

लगा, 'हे परमात्मा, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि मैं अन्य लोगों की
तरह रिश्वतखोर, बेईमान और अवैध सम्बन्ध रखने वाला नहीं हूँ। मैं
बहुत खुश हूँ कि मैं वहाँ खड़े उस टैक्स लेने वाले की तरह नहीं हूँ।
12मैं हफ्ते में दो बार उपवास रखता हूँ और मैं अपनी पूरी आमदनी का
दसवाँ भाग आपको चढ़ाता हूँ।'
13"किंतु टैक्स लेने वाले ने दूर खड़े होकर आकाश की ओर आँखें
तक न उठाईं। वह अपनी गलतियों पर बहुत शर्मिंदा था और उसने
अपनी आँखों में आँसू भर कर कहा, 'हे परमात्मा, मुझ पापी पर दया
कीजिए।'"
14फिर प्रभु येशु ने कहा, "उन दोनों के घर लौटने के बाद, परमात्मा ने
उस फरीसी को नहीं, परंतु इस टैक्स लेने वाले को एक अच्छा भक्त
माना। क्योंकि यदि कोई घमंड से अपना सिर ऊँचा करके चलता है,
तो परमात्मा उसका घमंड तोड़ेंगे। लेकिन अगर कोई पाप स्वीकार
करके सिर झुका देता है, तो परमात्मा उसका मस्तक ऊँचा करेंगे।"

प्रभु येशु बच्चों की चिंता करते हैं

15एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को प्रभु येशु के पास ला रहे थे कि
वह उन्हें आशीर्वाद दें। लेकिन जब उनके शिष्यों ने उन्हें ऐसा करते
देखा, तो उन्होंने लोगों से कहा कि वे प्रभु को परेशान न करें।
16पर प्रभु येशु ने बच्चों को अपने पास बुलाया और कहा, "बच्चों को
मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि जो लोग इन बच्चों के
समान हैं परमात्मा का साम्राज्य उन्हीं का है। 17मैं तुमसे सच कहता हूँ,
यदि कोई परमात्मा के साम्राज्य में जाना चाहता है तो उसका स्वभाव
बच्चों के समान कोमल होना चाहिए। नहीं तो उसका जाना कभी संभव
नहीं है।"

पैसे से नज़दीकी का अर्थ, मोक्ष से दूरी

18किसी यहूदी अधिकारी ने प्रभु येशु से पूछा, "हे उत्तम गुरु, मोक्ष
प्राप्त करने के लिए मैं क्या करूँ?"
19प्रभु येशु ने उससे कहा, "तुम मुझे 'उत्तम' क्यों कहते हो? सिर्फ
परमात्मा ही उत्तम हैं। 20तुम आज्ञाएँ जानते हो, 'शादी के बाहर

शारीरिक सम्बन्ध न रखो, हत्या न करो, चोरी न करो, दूसरों के बारे में झूठ मत बोलो, अपने माता-पिता का आदर करो।'"

[21]उसने उत्तर दिया, "इन सबका मैंने अपने बचपन से पालन किया है।"

[22]यह सुनकर प्रभु येशु ने उससे कहा, "तुममें अब तक एक बात की कमी है। जाओ, अपना सबकुछ बेच दो और जो पैसा मिले उसे गरीबों में बाँट दो और परमस्वर्ग में तुम्हें धन मिलेगा। उसके बाद आना और मेरा शिष्य बनना।"

[23]अधिकारी यह बात सुनकर बहुत उदास हो गया, क्योंकि वह बहुत अमीर था।

[24]प्रभु येशु ने यह देखकर कहा, "अमीरों का परमात्मा के साम्राज्य
में जाना कितना कठिन है! [25]परमात्मा के साम्राज्य में अमीर के जाने के
मुकाबले, ऊँट का सुई के छेद से निकल जाना ज़्यादा आसान है!"

[26]इस पर सुनने वालों ने पूछा, "तो फिर कौन मुक्ति पाकर परमात्मा के साम्राज्य में जा सकता है?"

[27]प्रभु येशु ने कहा, "जो मनुष्य के लिए असंभव है, वह परमात्मा के लिए संभव है।"

[28]फिर पतरस बोला, "प्रभुजी, हम सब कुछ छोड़कर आपके शिष्य बन गए हैं।"

[29]इस पर प्रभु येशु ने सबसे कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, जिस
मनुष्य ने परमात्मा के साम्राज्य के लिए घर, पत्नी, बच्चों, भाई-बहन,
माता-पिता को छोड़ा है, [30]उसे इस संसार में कई गुना प्रतिफल और
आने वाले संसार में मोक्ष प्राप्त होगा।"

प्रभु येशु फिर बताते हैं उनकी मृत्यु के बाद क्या होगा

[31]प्रभु येशु ने अपने बारहों राजदूतों को एक तरफ ले जाकर उनसे
कहा, "देखो, हम यरूशलम शहर जा रहे हैं। जो बातें परमात्मा के
प्रवक्ताओं ने तेजस्वी मानव-पुत्र के बारे में लिखी हैं, वे सब वहाँ पूरी
होंगी। [32]लोग तेजस्वी मानव-पुत्र को उन लोगों के हाथ सौंप देंगे जो

18:20 निर्गमन 20:12-16; उपदेश 5:16-20

यहूदी समाज से नहीं हैं। वे तेजस्वी मानव-पुत्र की हंसी उड़ाएँगे,
उसका अपमान करेंगे, उस पर थूकेंगे, [33]और कोड़ों से पीटने के
बाद उसे मार डालेंगे, परंतु तेजस्वी मानव-पुत्र तीसरे दिन ज़िन्दा हो
जाएगा।"

[34]प्रभु येशु के राजदूतों को ये बातें समझ में नहीं आईं। इस बात का
अर्थ उनके लिए रहस्य ही बना रहा और वे इसका मतलब नहीं समझ
पाए।

अंधा भिखारी कैसे देखने लगा

[35]प्रभु येशु यरीखो शहर के निकट पहुँचे। वहाँ एक अंधा मनुष्य
रास्ते के किनारे बैठा भीख माँग रहा था। [36]वह भीड़ के चलने की
आवाज़ सुनकर पूछने लगा कि क्या बात है। [37]लोगों ने उसे बताया कि
नासरत-निवासी येशु जा रहे हैं। [38]इस पर वह पुकार उठा, "हे येशु जी,
हे राजा दाविद के वंशज, मुझ पर दया कीजिए।"

[39]आगे चलने वाले लोगों ने उसे डाँटा कि वह चुप रहे, पर वह और
भी ऊँची आवाज़ में पुकारने लगा, "हे राजा दाविद के वंशज, मुझ पर
दया कीजिए!"

[40]प्रभु येशु रूक गए और लोगों से कहा कि वह अंधा व्यक्ति उनके
पास लाया जाए। जब वह पास आया तब प्रभु येशु ने उससे पूछा,
[41]"तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?"

उसने कहा, "प्रभुजी, मुझे मेरी आँखें वापस दे दीजिए।"

[42]प्रभु येशु ने उससे कहा, "तथास्तु। मुझमें तुम्हारी आस्था ने तुम्हें
ठीक कर दिया है।" [43]उसी समय से वह देखने लगा और परमात्मा का
गुणगान करते हुए प्रभु येशु के पीछे हो लिया। यह देखकर भीड़ भी
परमात्मा का गुणगान करने लगी।

19

अमीर लालची का जीवन बदल गया

[1]प्रभु येशु यरीखो शहर में से गुजर रहे थे। [2]वहाँ ज़खायस नामक एक
व्यक्ति था जो टैक्स लेने वालों का बड़ा अधिकारी था, और वह अमीर
था। [3]ज़खायस प्रभु येशु को देखने की कोशिश में था कि वह कौन

है, किंतु भीड़ और अपने छोटे कद के कारण वह देख न पा रहा था।
[4]इसलिए ज़खायस दौड़ के आगे गया और प्रभु येशु को देखने के लिए
एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि प्रभु येशु उसी रास्ते से जाने
वाले थे। [5]जब वह उस स्थान पर पहुँचे तब ऊपर देखकर उससे बोले,
"ज़खायस, जल्दी उतरो, क्योंकि आज मैं तुम्हारे घर में ठहरूँगा।"
[6]वह तुरंत पेड़ से नीचे उतरा और प्रभु येशु को अपने घर में बहुत
खुशी से ठहराया। [7]यह देखकर सब बड़बड़ाने लगे कि प्रभु येशु एक
पापी व्यक्ति के यहाँ मेहमान बनकर गए हैं।
[8]इस दौरान भोजन करते समय ज़खायस ने खड़े होकर प्रभु येशु से
कहा, "हे प्रभुजी, देखिए, मैं अपनी आधी संपत्ति गरीबों को देता हूँ।
यदि मैंने किसी से बेईमानी करके कुछ लिया है तो उसे चौगुना लौटाता
हूँ।"
[9]तब प्रभु येशु ने उससे कहा, "आज तुम्हें और तुम्हारे परिवार को
अपने पापों की सज़ा मिलने से मुक्ति प्राप्त हुई है, क्योंकि तुम भी
कुलपिता अब्राहम की संतान हो। [10]तेजस्वी मानव-पुत्र खोए हुओं को
ढूँढ़ने और उन्हें मुक्ति देने आए हैं।"

क्रूर राजकुमार

[11]लोग ये बातें सुन रहे थे तो प्रभु येशु ने एक कहानी भी सुनाई
क्योंकि वह यरूशलम शहर के पास पहुँच रहे थे। वे लोग समझते थे
कि परमात्मा का साम्राज्य अभी प्रकट होने वाला है। [12]इसलिए प्रभु येशु
ने कहा, "एक बार एक राजकुमार विदेश गया कि वहाँ उसके ताज
पहनाने की रस्म पूरी हो और उसके बाद वह वापस आ जाए। [13]जाने से
पहले उसने अपने दस सेवकों को बुलाया और हर एक सेवक को सोने
का एक-एक सिक्का देते हुए कहा, 'मेरे लौटने तक इनसे व्यापार करो।'
[14]"परंतु राजकुमार से उसके देश के लोग नफरत करते थे। इसलिए
लोगों ने विदेश में संदेश-वाहक भेज कर सम्राट से कहा, 'हम नहीं
चाहते कि यह व्यक्ति हमारा राजा बने।'
[15]"फिर भी जब वह राजकुमार राजा बनकर लौटा तो उसने यह जानने
के लिए कि किसने कैसा व्यापार किया है, उन सेवकों को अपने पास
बुलाया।

16“पहले ने आकर बताया, ‘मालिक, आपके एक सिक्के से मैंने दस
सिक्के और कमाए हैं।’
17“मालिकने उससे कहा, ‘बहुत अच्छा, अच्छे सेवक। तुम थोड़े में
ईमानदार रहे, इसलिए तुम दस शहरों पर शासन करोगे।’
18“दूसरे ने आकर बताया, ‘मालिक, आपके एक सिक्के से मैंने पाँच
सिक्के और कमाए हैं।’
19“उसने कहा, ‘तुम भी पाँच शहरों पर शासन करो।’
20“तब एक और सेवक ने आकर बताया, ‘मालिक, यह है आपका
सिक्का, मैंने इसे रूमाल में छिपा कर रखा था। 21मैं आपसे डरता था,
क्योंकि आप कठोर मनुष्य हैं। आप वह ले लेते हैं जो आपका नहीं है,
और आप उन फसलों की कटाई करते हैं जिन्हें आपने नहीं लगाया।’
22“मालिक ने कहा, ‘अरे निकम्मे सेवक! मैं तेरी बातों से ही तुझे
दोषी ठहराता हूँ। तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूँ। जो मेरा नहीं है
वह ले लेता हूँ, और मैं उन फसलों की कटाई करता हूँ जिन्हें मैंने नहीं
लगाया था। 23तो तूने मेरे पैसे ब्याज पर क्यों नहीं चढ़ा दिया कि मैं
वापस आकर उसे ब्याज सहित प्राप्त कर लेता?’
24“तब उसने पास खड़े लोगों से कहा, ‘सिक्का इससे ले लो और उसे
दे दो जिसके पास दस सिक्के हैं।’
25“परंतु उन्होंने कहा, ‘मालिक, उसके पास तो दस सिक्के पहले से ही
हैं।’
26“मालिक ने उत्तर दिया, ‘मैं तुमसे कहता हूँ, जिसके पास है, उसे
और दिया जाएगा और जिसके पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके
पास है, छीन लिया जाएगा। 27अब मेरे दुश्मनों को, जो नहीं चाहते
थे कि मैं उन पर राज्य करूँ, यहाँ लाओ और उन्हें मेरे सामने मार
डालो।’”

प्रभु येशु का येरूशालेम में अद्‌भुत स्वागत

28ये बातें कहकर प्रभु येशु ने यरूशलम शहर की ओर बढ़ना शुरू
किया। 29जब वह जैतून पहाड़ी पर बैथफगे और बैथनिया गाँवों के
नज़दीक आए, तब उन्होंने दो शिष्यों को 30यह कहकर भेजा, “सामने
के गाँव में जाओ। उसमें जाते समय तुम्हें गधी का एक बच्चा बंधा हुआ

मिलेगा जिस पर अब तक किसी ने सवारी नहीं की है। उसे खोलकर ले
आओ [31]और यदि कोई तुमसे पूछे कि क्यों खोलते हो तो यह कहना,
'प्रभु को इसकी ज़रूरत है।'"
[32]वे चले गए और सब कुछ ठीक वैसा ही पाया जैसा प्रभु येशु ने
कहा था। [33]जब वे गधी के बच्चे को खोल रहे थे तब उसके मालिकों ने
कहा, "तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?"
[34]उन्होंने कहा, "प्रभु को इसकी ज़रूरत है।" [35]तो वे उसे प्रभु येशु के
पास ले आए। उन्होंने गधी पर अपनी शालें डालकर प्रभु येशु को उस
पर बैठा दिया।
[36]जैसे-जैसे प्रभु येशु आगे बढ़ते गए, लोगों ने रास्ते में उनके सम्मान
में अपनी-अपनी शालें बिछा दीं। [37]जब प्रभु येशु जैतून पहाड़ी से नीचे
आ रहे थे, तो उनके शिष्यों की बड़ी भीड़ बहुत खुश थी और वे सभी
चमत्कारों के कारण, जो उन्होंने अपनी आँखों से देखे थे, परमात्मा का
गुणगान यह कह कर रहे थे,

[38]"परमात्मा का आशीर्वाद इस राजा पर है
जो प्रभु परमात्मा के नाम से आता है!
परमस्वर्ग में शांति और परमात्मा का गुणगान हो!"

[39]इस पर भीड़ में से कुछ फरीसियों ने कहा, "गुरुजी, अपने शिष्यों
को ऐसा गुणगान करने से रोकिए।"
[40]प्रभु येशु ने उत्तर दिया, "यदि ये लोग चुप रहे तो ये पत्थर बोलकर
मेरा गुणगान करने लगेंगे!"

यरूशलम शहर के लिए विलाप

[41]जब प्रभु येशु यरूशलम शहर के निकट आए तो वह शहर को
देखकर रो पड़े। [42]वह बोले, "क्या ही अच्छा होता कि तुम यरूशलम
शहर के लोग, आज के दिन जानते कि तुम्हें शांति कैसे मिलेगी। परंतु
अभी यह शांति का रास्ता तुम्हारी आँखों से छिपा है। [43]तुम्हारे ऐसे दिन
आएँगे जब शत्रु मोर्चा बाँधकर तुम्हें घेर लेंगे और तुम्हें निकलने नहीं
देंगे। [44]वे तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को मार डालेंगे और तुम्हारे शहर

19:38 भजन शास्त्र 118:26

को पूरी तरह से बर्बाद कर देंगे, क्योंकि तुमने उस अवसर को नहीं
पहचाना जिसे परमात्मा ने दिया था।”

प्रभु येशु मंदिर में सुधार लाए

45तब प्रभु येशु परमात्मा के मंदिर के आँगन में आए। वह
खरीदने-बेचने वालों को मंदिर से यह कहकर निकालने लगे,
46“परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, ‘मेरा मंदिर प्रार्थना का मंदिर होगा, परंतु
तुमने उसे चोरों का अड्डा बना रखा है।’”
47प्रभु येशु मंदिर में हर रोज़ उपदेश दिया करते थे। उधर प्रधान-पुरोहित,
धर्मगुरु और समाज के प्रमुख व्यक्ति इस कोशिश में थे कि कैसे उनकी
हत्या कर दें, 48पर उनको ऐसा करने का मौका नहीं मिल पा रहा था,
क्योंकि सारे लोग प्रभु येशु की सारी बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे।

20

प्रभु येशु से धर्मगुरुओं के सवाल

1एक दिन जब प्रभु येशु मंदिर के आँगन में लोगों को शिक्षा दे रहे थे
और परमात्मा के साम्राज्य का शुभ संदेश सुना रहे थे तब समाज के
बड़ों के साथ प्रधान-पुरोहित और धर्मगुरु भी वहाँ आए। 2उन्होंने प्रभु
येशु से पूछा, “हमें बताइए कि किस अधिकार से आप ये सब कर रहे
हैं, और वह कौन है जिसने आपको यह अधिकार दिया है?”
3प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “मैं भी आप लोगों से एक प्रश्न पूछता हूँ।
4मुझे बताइए, योहन को समर्पण-स्नान देने का अधिकार परमात्मा की
ओर से प्राप्त हुआ था या इंसान की ओर से?”
5वे आपस में कहने लगे, “यदि हम कहें, ‘परमात्मा की ओर से’ तो
यह कहेगा, ‘तुमने उनका विश्वास क्यों नहीं किया?’ 6परंतु यदि हम
कहें, ‘मनुष्य की ओर से’ तो सारे लोग हमें पथराव कर मार डालेंगे,
क्योंकि उनका यह पक्का विश्वास है कि योहन परमात्मा के प्रवक्ता
थे।” 7इसलिए उन्होंने प्रभु येशु को उत्तर दिया, “हम नहीं जानते कि
योहन को समर्पण-स्नान देने का अधिकार किसने दिया था।”

19:46 यशायाह 56:7; यरमियाह 7:11

8इस पर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तो मैं भी तुम्हें नहीं बताऊँगा कि मैं
किस अधिकार से ये कार्य करता हूँ।”

धार्मिक गुरुओं को आईना दिखाना

9प्रभु येशु ने लोगों से यह कहानी कही, “किसी मनुष्य ने अंगूर का
बाग लगाया और उसे किसानों को पट्टे पर देकर बहुत दिनों के लिए
यात्रा पर चला गया। 10फल का मौसम आने पर उसने एक सेवक को
किसानों के पास भेजा कि वे अंगूर के बाग के फलों का कुछ भाग
उसे दें। पर किसानों ने उस सेवक को पीटा और खाली हाथ लौटा
दिया। 11उसने एक और सेवक को भेजा। उन्होंने उसे भी पीटा और
अपमानित कर खाली हाथ लौटा दिया। 12फिर उसने एक तीसरे को
भेजा, पर उन्होंने उसे भी मार-पीट कर बाग के बाहर फ़ेंक दिया।
13“इस पर अंगूर के बाग के मालिक ने कहा, ‘अब मैं क्या करूँ? मैं
अपने प्रिय बेटे को भेजूँगा। हो सकता है कि वे उसका आदर करें।’
14“किंतु मालिक के बेटे को देखकर किसानों ने आपस में कहा, ‘यह
मालिक का वारिस है। आओ, इसे मार डालें कि इसकी पूरी संपत्ति
हमारी हो जाए।’ 15तो उन्होंने उसे अंगूर के बाग से बाहर निकालकर
मार डाला।”
प्रभु येशु ने पूछा, “तो अंगूर के बाग का मालिक उनके साथ क्या
करेगा? 16वह आकर किसानों को मार डालेगा और अंगूर का बाग
दूसरों को पट्टे पर दे देगा।”
यह सुनकर लोग बोल उठे, “इस दशा से तो किसी को भी नहीं
गुज़रना चाहिए।”
17प्रभु येशु ने उनकी ओर देखकर कहा, “तो फिर परमात्मा-ग्रंथ में
इस पद का क्या अर्थ है?

‘भवन बनाने वालों ने जिस पत्थर को बेकार समझा
वही नींव का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया।’

18“जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा, वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा और
जिस पर यह पत्थर गिरेगा उसको पीस डालेगा।”

20:17 भजन शास्त्र 118:22

[19]धर्मगुरुओं और प्रधान-पुरोहितों ने प्रभु येशु को उसी समय पकड़ना
चाहा। परंतु उन्हें भीड़ का डर था। वे समझ गए थे कि प्रभु येशु ने यह
कहानी उन्हीं के बारे में कही थी।

प्रभु येशु का टैक्स देने के बारे में आदेश

[20]प्रभु येशु के दुश्मनों ने उन पर नज़र रखी हुई थी, क्योंकि वे प्रभु
येशु को राज्यपाल को सौंपना चाहते थे। इसलिए उन्होंने कुछ लोगों
को भेजा जिन्होंने अच्छा होने का नाटक किया, लेकिन वे वास्तव में
जासूस थे जो प्रभु येशु को कुछ गलत कहते हुए पकड़ने की कोशिश
कर रहे थे। [21]जासूसों ने कहा, "गुरुजी, हम जानते हैं कि आप इस
बात की सच्चाई सिखाते हैं कि परमात्मा लोगों से क्या चाहते हैं। और
आप सबका एक जैसा आदर-सम्मान करते हैं, चाहे वह कोई भी हो।
[22]बताइए, हम यहूदियों के लिए रोम सम्राट को टैक्स देना मोशे के
नियम और शिक्षा के अनुसार ठीक है या नहीं?"

[23]प्रभु येशु उनकी चालाकी भाँप कर उनसे बोले, [24]"मुझे एक चाँदी
का सिक्का दिखाओ।" तब उन्होंने सिक्का दिखा कर पूछा, "इस पर
किसका चित्र है और किसका नाम लिखा है?"*

उन्होंने कहा, "रोम सम्राट का चित्र है और उन्हीं का नाम लिखा है।"

[25]प्रभु येशु ने कहा, "जो सम्राट को देना चाहिए वह सम्राट को दो
और जो परमात्मा को देना चाहिए वह परमात्मा को दो।"

[26]प्रभु येशु ने वहाँ लोगों के सामने कुछ भी गलत नहीं कहा था,
इसलिए उनके दुश्मनों की उन्हें पकड़ने की योजना बेकार हो गई। प्रभु
येशु के जवाब सुनकर जासूस हैरान रह गए और चुप हो गए।

मृत्यु के बाद एक नई तरह का जीवन

[27]सदूकी धार्मिक पंथ के कुछ लोग प्रभु येशु के पास आए। वे मरे
हुओं के ज़िन्दा होने को नहीं मानते थे। [28]उन्होंने प्रश्न किया, "गुरुजी,
परमात्मा के प्रवक्ता मोशे ने जो हमारे लिए लिखा है कि यदि शादीशुदा

*** 20:24** *किसका नाम लिखा है* - यह रोम चाँदी का सिक्का "दीनार" कहलाता था जिस पर सम्राट टैबिरियस का चित्र बना था। इस पर सम्राट टैबिरियस "दिव्य अगस्तस का बेटा" लिखा था।

व्यक्ति की मृत्यु बिना संतान हो जाती है, तो उसके भाई को विधवा भाभी से शादी करना चाहिए। तब उनका पहला बेटा मृत भाई का बेटा माना जाएगा।

29"सुनो, एक स्थान पर सात भाई रहते थे। पहले ने शादी की और
बिना कोई बच्चा हुए मर गया। 30दूसरे ने पहले भाई की विधवा से शादी
की और वह भी बिना संतान मर गया। 31ऐसा ही तीसरे के साथ भी
हुआ। और सभी सात भाइयों ने इस औरत से शादी की और बिना
किसी बच्चे के उन सब की मृत्यु हो गई। 32अंत में वह औरत भी मर
गई। 33जब परमात्मा सब मरे हुए लोगों का न्याय करने के लिए उन्हें
ज़िन्दा करेंगे, तब वह औरत किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह तो
सातों भाइयों की पत्नी रही थी।"

34प्रभु येशु ने उनसे कहा, "इस संसार के पुरुष और स्त्री शादी करते
और कराते हैं, 35परंतु आने वाले संसार में ऐसा नहीं होगा। जो जीवित
होकर परमात्मा के साथ जीवन बिताने के योग्य होंगे, वे शादी नहीं
करेंगे। 36वे स्वर्गदूतों की तरह होंगे और उनकी मृत्यु नहीं होगी।+ वे
परमात्मा की संतान हैं और वे मरे हुओं में से जीवित हुए हैं।

37"मृत लोगों का जीवित हो जाना एक सच्चाई है। यह तो परमात्मा
के प्रवक्ता मोशे ने भी जलती झाड़ी के वर्णन में दिखाया है जहाँ प्रभु
परमात्मा कहते हैं कि उनकी भक्ति अब्राहम, इसहाक और याकोब
की जीवित आत्माएँ करती हैं। 38इसलिए वह मरे हुओं के नहीं, परंतु
जीवितों के परमात्मा हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि में उनके सब लोग अभी
भी जीवित हैं।"

39इस पर धर्मगुरुओं ने उत्तर दिया, "गुरुजी, आपने बहुत अच्छा
कहा।" 40फिर उन्हें और कोई प्रश्न पूछने का साहस नहीं हुआ।

मुक्तिदाता के बारे में सवाल

41प्रभु येशु ने उनसे कहा, "लोग, क्यों कहते हैं कि मुक्तिदाता राजा
दाविद के वंशज हैं? 42क्योंकि स्वयं राजा दाविद ने भजन शास्त्र में
कहा है,

20:37 निर्गमन 3:6

‘प्रभु परमात्मा ने मेरे प्रभु से कहा,
43 “तुम मेरे सिंहासन के दाईं ओर बैठकर शासन करो
जब तक मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे पाँव तले न ले आऊँ।”’
44 “इस प्रकार राजा दाविद उन्हें ‘प्रभु’ कहते हैं, तो वह दाविद के
सिर्फ वंशज कैसे हुए?”

दिखावटी धार्मिक गुरुओं से सावधान रहो

45 जब सब लोग प्रभु येशु को सुन रहे थे उन्होंने अपने शिष्यों से कहा,
46 “धर्मगुरुओं से सावधान रहना जिन्हें लंबे सुंदर चोगे पहनकर घूमना
अच्छा लगता है। वे चाहते हैं कि वे जहाँ कहीं भी जाएँ लोग उन्हें
झुककर प्रणाम करें। उनको सत्संग भवनों में प्रमुख आसन और दावतों
में खास मेहमान बनकर बैठना बहुत पसंद है। 47 परिवार में, पतियों
के मर जाने पर, वे उनकी विधवाओं से सारी संपत्ति ले लेते हैं और
दिखावे के लिए लंबी-लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं। परमात्मा उन्हें अधिक
दंड देंगे।”

21

गरीब विधवा का दान अमीरों के दान से बड़ा

1 प्रभु येशु ने देखा कि अमीर लोग मंदिर के आँगन में अपना-अपना
दान पेटियों में डाल रहे हैं। 2 वहाँ एक गरीब विधवा ने भी दो छोटे सिक्के
दान-पेटी में डाले। 3 प्रभु येशु ने यह देखकर कहा, “मैं तुमसे सच कहता
हूँ, इस गरीब विधवा ने सबसे अधिक दान दिया है। 4 क्योंकि अन्य
सबने अपने बहुत पैसे में से थोड़ा सा दान दे दिया, परंतु यह तो गरीब
थी फिर भी जो कुछ पैसा उसके पास था सब दान पेटी में डाल दिया।”

यरूशलम मंदिर के विनाश की भविष्यवाणी

5 जब कुछ शिष्य यरूशलम शहर के मंदिर के बारे में कह रहे थे कि
वह सुंदर पत्थरों की नक्काशी और मंदिर की दीवारें मन्नत की भेंटों से
सजी हुई है। पर प्रभु येशु ने उनसे कहा, 6 “यह भवन जो तुम देख रहे

20:43 भजन शास्त्र 110:1

हो, वह समय आएगा जब इन भवनों का एक भी पत्थर अपने स्थान पर नहीं बचेगा। हर एक पत्थर को नीचे ढाह दिया जाएगा।”

इस संसार का अंत

[7]लोगों ने पूछा, “गुरुजी, ये घटनाएँ कब होंगी? जब ये बातें घटेंगी, इसकी क्या निशानी होगी कि ये होने वाली हैं?”

[8]प्रभु येशु ने कहा, “उन लोगों द्वारा मूर्ख मत बनना जो आएँगे और
अपने आप को मुक्तिदाता कहेंगे और यह भी कहेंगे की इस संसार
का अंत होने वाला है। तुम उन लोगों के पीछे न जाना। [9]जब युद्धों और
सरकार के विरुद्ध विद्रोहों की चर्चा सुनो तब डरना नहीं। पहले इन बातों
का होना ज़रूरी है, पर इसका अर्थ यह नहीं हैं कि अंत होने वाला है।

[10]“देश आपस में लड़ेंगे और राज्य एक दूसरे पर हमला करेंगे।
[11]बड़े-बड़े भूकंप होंगे, और कई स्थानों पर भूख के कारण लोगों की
मौत होगी और भयानक महामारियाँ फैलेंगी। आसमान में हैरान करने
वाली अजीब-अजीब चीजें दिखेंगी जिनसे लोग बहुत डर जाएँगे।

[12]“परंतु यह सब होने से पहले लोग मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे
और तुम पर अत्याचार करेंगे। सत्संग भवनों में तुम पर मुकद्दमा चलाया
जाएगा और जेल में डाल दिया जाएगा। मेरे कारण तुम्हें राजाओं और
राज्यपालों के सामने न्याय के लिए पेश किया जाएगा। [13]लेकिन यह तुम्हारे
लिए अवसर होगा कि तुम मुझमें अपनी आस्था के बारे में उन्हें बताओ।

[14]“तो चिंता मत करो कि तुम अपने बचाव में क्या कहोगे। [15]मैं तुम्हें
समझा दूँगा कि क्या कहना है। तुम्हारा कोई भी दुश्मन तुम्हारा विरोध
नहीं कर पाएगा और न यह कह पाएगा कि तुम गलत हो। [16]तुम्हारे
अपने माता-पिता, भाई, परिवार और दोस्त तुम्हें धोखा देंगे। तुम में
से कुछ मारे भी जाएँगे। [17]मेरे नाम के कारण तुमसे सब लोग नफरत
करेंगे। [18]पर तुम्हारे सिर का एक बाल भी नष्ट नहीं होगा। [19]आस्था में
मज़बूत बनो जिससे तुम मोक्ष प्राप्त करोगे।”

यरूशलम के विनाश की भविष्यवाणी

प्रभु येशु ने आगे कहा, [20]“जब तुम यरूशलम शहर को सेनाओं से
घिरा हुआ देखो, तब जान लेना कि यरूशलम का विनाश निकट है।

[21]उस समय जो यहूदिया प्रदेश में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। जो शहर में हों, वे शहर से बाहर निकल जाएँ और जो गाँवों में हों वे शहर में न आएँ, [22]क्योंकि यह दिन दंड देने के होंगे जिससे परमात्मा-ग्रंथ में की गई भविष्यवाणी पूरी हो। [23]उन स्त्रियों के लिए बहुत बुरा होगा जो उन दिनों गर्भवती होंगी या बच्चों को दूध पिलाती होंगी। परमात्मा एक भयानक संकट द्वारा देश को दंडित करेंगे। [24]कुछ लोग तलवार से मौत के घाट उतारे जाएँगे और कुछ बंदी बनकर विश्व के देशों में जाएँगे। रोम शासक और उनके बाद आने वाले शासक* यरूशलम शहर को तब तक रौंदते रहेंगे जब तक उजब तक उनके शासन का अंत समय न आ जाए।”

तेजस्वी मानव-पुत्र का दुबारा आना

प्रभु येशु ने कहा, [25]“सूर्य, चंद्रमा और सितारों के साथ अजीब चीजें होती हुई दिखाई देंगी। पृथ्वी के सारे देशों पर संकट पड़ेगा और समुद्र और लहरों के गर्जन से ये देश घबरा जाएँगे। [26]दुनिया के साथ जो कुछ होगा उसके कारण लोग इतने डर जाएँगे कि वे बेहोश हो जाएँगे। यहाँ तक कि स्वर्ग की शक्तियाँ भी डर से कांप जाएँगी। [27]तब सब लोग तेजस्वी मानव-पुत्र को अपार शक्ति और तेज के साथ बादलों पर आता हुआ देखेंगे। [28]जब ये घटनाएँ होने लगें तो हिम्मत के साथ स्थिर खड़े रहना, क्योंकि तुम्हें तुम्हारी परेशानियों से मुक्ति जल्दी मिलेगी।”

घटनाओं के लक्षणों को पहचानों

[29]तब प्रभु येशु ने एक उदाहरण दिया, “अंजीर के या किसी अन्य पेड़ को देखो। [30]ज्योंही उनमें पत्ते निकलते हैं, तुम उन्हें देखकर अपने आप जान लेते हो कि मौसम बदल रहा है। [31]इसी प्रकार जब तुम ये भयंकर घटनाएँ होते देखो तो समझ लेना कि परमात्मा का साम्राज्य जल्दी आने वाला है। [32]मेरी बात ध्यान से सुनो। इन घटनाओं के हुए बिना इस पीढ़ी का अंत नहीं होगा। [33]आकाश और पृथ्वी हमेशा के लिए नहीं रहेंगे, लेकिन मेरे शब्द हमेशा रहेंगे।”

*** 21:24** *रोम शासक और उनके बाद आने वाले शासक* - या, “लोग जो यहूदी समाज से नहीं हैं,” लेकिन निहित लोग उनके वर्तमान विदेशी रोम शासक हैं और जो उनके बाद आएँगे।

सतर्क रहो

[34-35]प्रभु येशु ने आगे कहा, “सावधान रहो। अपने मन को सांसारिक
चीज़ों में फँसने न दो, ऐसा न हो कि तुम अपने जीवन की चिंताओं में,
सुखों में, और नशों में खोए हुए हो, और फिर अचानक अच्छे और बुरे
कर्मों के न्याय का दिन आ जाए और पृथ्वी के सभी लोगों को जाल के
समान पकड़ लेगा। [36]इसलिए हमेशा आने वाले समय के लिए तैयार रहो
और प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आने वाली बातों से बचने में और
तेजस्वी मानव-पुत्र के सामने आत्मविश्वास के साथ खड़े हो सको।”
[37]प्रभु येशु हर दिन परमात्मा के मंदिर के आंगन में उपदेश देते और
रात जैतून पहाड़ी पर बिताते थे। [38]सब लोग सुबह-सुबह प्रभु येशु का
उपदेश सुनने के लिए मंदिर के आँगन में उनके पास आ जाते थे।

22

कैसे एक शिष्य ने अपने गुरु को धोखा दिया

[1]रोटी का त्यौहार, जो मुक्ति का त्यौहार भी कहलाता है, निकट
आ रहा था। [2]प्रधान-पुरोहित और धर्मगुरु इस कोशिश में थे कि किस
प्रकार प्रभु येशु को मार डालें, पर वे लोगों के विरोध से डरते थे।
[3]तब शैतान ने प्रभु येशु के बारह राजदूतों में से यहूदा इस्करियोत
में प्रवेश किया। [4]उसने जाकर प्रधान-पुरोहितों और मंदिर के
सेना-अधिकरियों से बातचीत की कि वह प्रभु येशु को गिरफ्तार करने
में कैसे मदद कर सकता है। [5]इससे प्रधान-पुरोहित बहुत खुश हुए
और उसे पैसे देने को सहमत हो गए। [6]यहूदा ने उनसे पैसा ले लिया
और उस सही मौके की ताक में रहने लगा कि प्रभु येशु को उस समय
गिफ्तार करवाए जब भीड़ उनके साथ न हो।

मुक्ति के त्यौहार की तैयारी

[7]अब रोटी और मुक्ति त्यौहार का दिन आ पहुँचा जब मेमने* की
बलि दी जाती है। [8]प्रभु येशु ने पतरस और योहन को यह कहकर भेजा,
“जाओ और हमारे खाने के लिए त्यौहार का भोज तैयार करो।”

---

* **22:7** *मेमने* - या, “जवान भेड़”

9उन्होंने पूछा, “आप किस स्थान में भोज तैयार करवाना चाहते हैं?”
10प्रभु येशु बोले, “शहर में जाते ही तुम्हें एक मनुष्य मिलेगा। वह
पानी से भरा घड़ा लिए जा रहा होगा। तुम उसके पीछे-पीछे जाना।
जिस घर में वह जाए, तुम भी उसमें चले जाना 11और घर के मालिक से
कहना, ‘हमारे गुरुजी ने आपसे यह पूछा है, “मेहमानों का वह कमरा
कहाँ है जहाँ वह अपने शिष्यों के साथ मुक्ति के त्यौहार का भोज
खाएँगे?”’ 12वह तुम्हें घर की पहली मंजिल पर तुम्हारे इस्तेमाल के
लिए तैयार बड़ा कमरा दिखा देगा। वहीं तुम भोज तैयार करना।”
13तो पतरस और योहन उस जगह पर पहुँचे और जैसा प्रभु येशु ने उनसे
कहा था, वैसा ही पाया। वहीं उन्होंने मुक्ति के त्यौहार का भोज तैयार किया।

प्रभु स्मृति भोज का आरंभ

14जब समय हुआ तब प्रभु येशु अपने बारहों राजदूतों के साथ भोजन
करने बैठे। 15उन्होंने कहा, “मेरी दिल से इच्छा थी कि मेरे कष्ट का
समय शुरू होने से पहले तुम्हारे साथ मुक्ति के त्यौहार का भोज खाऊँ।
16क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ, जब तक परमात्मा के साम्राज्य में इस
भोज का अर्थ पूर्ण न हो जाए, मैं इसे फिर+ न खाऊँगा।”
17तब प्रभु येशु ने प्याले में अंगूर-रस लिया और परमात्मा को
धन्यवाद दिया और राजदूतों से कहा, “इसे लो और आपस में बाँट
कर पी लो। 18मैं तुमसे कहता हूँ, जब तक परमात्मा का साम्राज्य नहीं
आ जाता मैं अंगूर-रस नहीं पीऊँगा।”
19उसके बाद प्रभु येशु ने रोटी ली और परमात्मा को धन्यवाद देकर
रोटी के टुकड़े किए और यह कहते हुए शिष्यों को दी, “इसे मेरा शरीर
समझो+ जो तुम्हारे लिए बलि किया जाएगा। मैंने जो तुम्हारे लिए किया
है उसकी स्मृति में इसे खाओ।”
20इसी प्रकार भोजन के बाद प्रभु येशु ने अंगूर के रस का प्याला
दोबारा लिया और कहा, “यह अंगूर-रस बलि के उस खून को दिखाता
है जो परमात्मा और इंसान के बीच किए गए एक नए अनुबंध की पुष्टि
है। उस नए अनुबंध की पुष्टि करने के लिए मेरा खून उंडेला जाएगा।
21“पर देखो, जो मेरे साथ विश्वासघात करेगा वह यहाँ मेरे साथ मेज़
पर है। 22परमात्मा ने निर्णय लिया कि तेजस्वी मानव-पुत्र की मृत्यु हो, परंतु

उसे इसका परिणाम भुगतना होगा जो उसे धोखा देगा।” [23]इस पर राजदूत
एक-दूसरे से पूछने लगे, “हममें से वह कौन है जो यह काम करेगा?”

कौन बड़ा है?

[24]शिष्यों में इस बात पर बहस होने लगी कि उनमें सबसे बड़ा कौन
है। [25]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “दुनिया में राजा अपनी प्रजा पर बलपूर्वक
शासन करते हैं। ऐसा करते हुए भी वे कहते हैं कि वे लोगों के लिए
भला कर रहे हैं। [26]लेकिन तुम्हें ऐसा नहीं बनना चाहिए। तुममें जो
सबसे बड़ा है, वह सबसे छोटे के समान हो जाए और तुम्हारा लीडर
सेवक के समान। [27]किसको लोग बड़ा समझते हैं? वह जो भोजन करने
बैठा है, या वह जो खड़े होकर भोजन परोस रहा है? क्या भोजन करने
वाला बड़ा नहीं? पर मैं तुम्हारे बीच एक सेवक के समान हूँ।
[28]“तुम ही हो जो मेरे संकटों में मेरा साथ देते रहे हो। [29]जैसे मेरे पिता
परमात्मा ने मुझे शासन करने का अधिकार दिया है, वैसे ही मैं तुम्हें
अधिकार देता हूँ [30]जिससे तुम मेरे साम्राज्य में मेरे साथ मेज़ पर खाओगे
और पीओगे। तुम में से हर एक सिंहासन पर बैठकर इज़राएल देश के
बारह वंशों पर शासन करेगा।”

शिष्यों द्वारा अपने गुरु का इंकार

[31]फिर प्रभु येशु ने शिमोन पतरस से कहा,+ “शिमोन, शिमोन, सुनो!
शैतान ने तुम सब शिष्यों माँग की है कि वह तुम्हें गेहूँ की तरह फटके।
[32]लेकिन शिमोन, मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की है कि इन कष्टों के कारण
तुम्हारी आस्था न टूटे। और जब तुम मेरे पास वापस आओ, तो अपने
साथी शिष्यों की मदद करो।”
[33]पतरस ने कहा, “प्रभुजी, मैं आपके साथ जेल में जाने या मरने के
लिए भी तैयार हूँ।”
[34]प्रभु येशु ने कहा, “पतरस, मैं तुमसे कहता हूँ, सुबह मुरगे के बाँग
देने से पहले, तुम तीन बार कहोगे कि तुम मुझे नहीं जानते हो।”
[35]फिर प्रभु येशु ने अपने सब राजदूतों से कहा, “जब मैंने तुमको
बटुए, गठरी और जूतों के बिना बाहर भेजा तो क्या तुम्हें किसी चीज़
की कमी हुई थी?”

उन्होंने उत्तर दिया, “नहीं।”
[36]प्रभु येशु ने कहा, “परंतु अब जिसके पास बटुआ है, वह उसे ले
ले, और इसी प्रकार गठरी भी। और जिसके पास तलवार नहीं है, वह
अपना कोट बेचकर तलवार खरीद ले।* [37]ऐसा इसलिए करें क्योंकि
परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, ‘उन्हें एक विद्रोही माना जाता था।’ यह मेरे
बारे में लिखा गया था, और यह जल्द ही सच हो जाएगा।”
[38]राजदूत बोले, “प्रभुजी, देखिए, यहाँ दो तलवारें हैं।”
प्रभु येशु ने कहा, “बहुत हुई।”

परेशानियों के सागर में प्रार्थना करना

[39]प्रभु येशु वहाँ से निकलकर जैतून पहाड़ी पर चले गए, जहाँ वह
अक्सर जाते थे, और शिष्य भी उनके साथ गए। [40]उस स्थान पर
पहुँचकर प्रभु येशु ने कहा, “प्रार्थना करते रहो, जिससे परीक्षा में न
फँसो।”
[41]फिर वह शिष्यों से थोड़ी सी दूर गए और घुटने टेककर प्रार्थना करने
लगे, [42]“पिता परमात्मा, यदि हो सके तो इस दुख के पहाड़ को मुझ से
दूर कर दें। परंतु जो मैं चाहता हूँ वह नहीं, पर जो आप चाहते हैं पूरा
हो।” [43]तब परमस्वर्ग से एक दूत उनकी मदद करने आया। [44]प्रभु येशु
का मन बहुत भारी था इसलिए वह और भी गंभीरता से प्रार्थना करने
लगे। उनका पसीना खून की बूंदों के समान ज़मीन पर गिर रहा था।+
[45]प्रभु येशु प्रार्थना से उठकर अपने शिष्यों के पास आए। उन्होंने
शिष्यों को सोते हुए पाया, क्योंकि वे दुख और थकान से भरे थे। [46]प्रभु
येशु ने उनसे कहा, “सोते क्यों हो? उठो, प्रार्थना करो कि परीक्षा में न
फँसो।”

प्रभु येशु को बंदी बनाया जाना

[47]प्रभु येशु बोल ही रहे थे कि एक भीड़ आ पहुँची और उनके बारह
राजदूतों में से एक, यहूदा उस भीड़ के आगे-आगे चल रहा था। उसने

---

* **22:36** *तलवार खरीद ले* - जब लोग खतरनाक यात्राओं पर निकलते थे तो वह अपने साथ बटुआ, यात्रा का थैला और तलवार अपने साथ रखते थे। प्रभु येशु उन्हें बता रहे थे कि कुछ भी घट सकता है। **22:37** यशायाह 53:12

प्रभु येशु के गालों को चूमकर नमस्कार किया। [48]प्रभु येशु ने यहूदा
से पूछा, “तुम चूमकर तेजस्वी मानव-पुत्र से विश्वासघात करके
पकड़वाना चाहते हो?”
[49]पास खड़े प्रभु येशु के शिष्यों ने यह देखकर कि क्या होने वाला है
पूछा, “प्रभुजी, क्या हम तलवार से हमला कर दें?” [50]तभी उन शिष्यों
में से एक ने महापुरोहित के सेवक पर हमला कर उसका दायाँ कान
काट कर सिर से अलग कर दिया।
[51]इस पर प्रभु येशु ने कहा, “बस करो!” उन्होंने कान लिया और उसे
पहले जैसा स्वस्थ कर दिया।
[52]फिर प्रभु येशु ने प्रधान-पुरोहितों, मंदिर के सुरक्षा कर्मियों और
समाज के बड़ों से जो उन्हें पकड़ने आए थे, कहा, “क्या तुमने मुझे
खतरनाक क्रन्तिकारी समझा है कि तुम तलवार और लाठियाँ लेकर
मुझे पकड़ने आए हो? [53]जब मैं मंदिर के आँगन में रोज़ाना तुम्हारे पास
आता था तब तुमने मुझको क्यों नहीं पकड़ा? परंतु अब यह तुम्हारा
समय है जिस पर अंधकार* की शक्ति शासन करती है।”

शिष्य का गुरु को कठिनाइयों में अकेला छोड़ना

[54]वे लोग प्रभु येशु को पकड़कर ले गए। वे उनको महापुरोहित के
भवन में लाए। उस समय पतरस दूरी बनाकर पीछे चल रहा था। [55]कुछ
लोग आँगन में आग जलाकर उसके चारों ओर बैठे हुए थे, तब पतरस
भी उनके बीच बैठ गया। [56]एक सेविका ने उसको आग के पास बैठे
देखा। उसने उसको बहुत ध्यान से देखा और बोली, “यह भी येशु के
साथ था।”
[57]परंतु पतरस ने यह कहकर मना किया, “बहन, मैं उसे नहीं जानता।”
[58]थोड़ी देर बाद कोई दूसरा व्यक्ति पतरस को देखकर बोला, “तुम
भी तो उन्हीं में से हो।”

पतरस ने कहा, “अरे भाई, मैं नहीं हूँ।”
[59]लगभग एक घंटे के बाद किसी दूसरे व्यक्ति ने ज़ोर देकर कहा,
“ज़रूर यह मनुष्य उसके साथ था, क्योंकि यह भी गलील-निवासी है।”

---

* **22:53** *अंधकार* - यहाँ पर अंधकार को शैतान की शक्ति के रूप में दिखाया गया है।

60पतरस बोला, “अरे भाई, मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या
कह रहे हो।”
और उसी समय, जबकि वह बोल ही रहा था, मुरगे ने बाँग दी।
61प्रभु येशु ने मुड़कर पतरस की ओर देखा। तब पतरस को प्रभु येशु
की कही वह बात याद आई, “आज मुरगे के बाँग देने से पहले तुम
तीन बार कहोगे कि तुम मुझे नहीं जानते।” 62और पतरस बाहर जाकर
फूट-फूट कर रोने लगा।

मुक्तिदाता का अपमान

63जो सिपाही प्रभु येशु पर पहरा दे रहे थे, वे उनका मज़ाक उड़ाने लगे
और उन्हें मारने लगे। 64वे उनकी आँखों पर पट्टी बांधकर पूछते थे,
“परमात्मा से पूछकर बता, तुझे किसने मारा?” 65वे और भी कई अन्य
तरीकों से प्रभु येशु का अपमान कर रहे थे।

मुक्तिदाता येशु की जाँच पड़ताल

66जब दिन हुआ तब समाज के बड़े, प्रधान पुरोहित और धर्मगुरु इकट्ठा
हुए और उन्होंने प्रभु येशु को अपनी धर्म-महासभा में प्रस्तुत किया।
67उन्होंने प्रभु येशु से पूछा, “यदि तुम मुक्तिदाता हो तो हमें बताओ।”
प्रभु येशु ने कहा, “यदि मैं तुमसे कहूँ तो भी तुम विश्वास नहीं
करोगे। 68और यदि मैं तुमसे कुछ पूछूँ तो तुम उत्तर नहीं दोगे। 69परंतु
अब से तेजस्वी मानव-पुत्र सर्वशक्तिमान परमात्मा के सिंहासन के दाईं
ओर बैठेगा और शासन करने का अधिकार पाएगा।”
70इस पर सब बोल उठे, “तो क्या तुम परमात्मा के पुत्र हो?”
प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जो तुम कहते हो वह सही है।”
71तब वे आपस में कहने लगे, “क्या हमें अब भी और गवाहों की
ज़रूरत है? हमने स्वयं इसी के मुँह से यह सुन लिया है।”

23

प्रभु येशु पर आरोप

1तब धर्म-महासभा के सब सदस्य उठे और प्रभु येशु को राज्यपाल
पिलातुस के पास ले गए। 2वे उन पर आरोप लगाते हुए कहने लगे,

“हमने इस व्यक्ति को हमारे लोगों को विद्रोह के लिए भड़काते, और
सम्राट को टैक्स देने से रोकते हुए पकड़ा है। इसका दावा तो यह भी है
कि यह हमारा मुक्तिदाता और राजा है।”
3पिलातुस ने प्रभु येशु से पूछा, “क्या तुम यहूदियों के राजा हो?”
प्रभु येशु ने उत्तर दिया, “आपने स्वयं ही कह दिया।”
4तब पिलातुस ने प्रधान-पुरोहितों और लोगों से कहा, “मुझे इस
व्यक्ति में कोई दोष नहीं मिला कि इस पर मुकद्दमा चलाया जाए।”
5परंतु वे अपनी बात पर अड़े रहे और ज़ोर देकर कहने लगे, “यह
गलील प्रदेश से लेकर इस स्थान तक पूरे यहूदिया प्रदेश में अपनी
गलत शिक्षाओं से लोगों को भड़काता है।”
6यह सुनकर पिलातुस ने पूछा, “क्या यह गलील प्रदेश का निवासी
है?” 7और जब उसे यह पता चला कि प्रभु येशु गलील प्रदेश के
शासक हेरोदेस के इलाके से हैं, उसने उन्हें हेरोदेस के पास भेज दिया
जो उन दिनों यरूशलम शहर में ही था।
8हेरोदेस प्रभु येशु को देखकर बहुत खुश हुआ। वह उन्हें बहुत दिनों
से देखना चाहता था, क्योंकि उसने उनके बारे में काफी सुन रखा था
और उनसे कुछ चमत्कार देखने की आशा करता था। 9हेरोदेस प्रभु येशु
से बहुत से प्रश्न पूछता रहा, पर उन्होंने कोई भी जवाब न दिया। 10इस
बीच प्रधान-पुरोहित और धर्मगुरु वहाँ खड़े हुए गुस्से से भरकर उन
पर आरोप लगा रहे थे। 11तब हेरोदेस ने अपने सैनिकों के साथ प्रभु येशु
को शाही पोशाक पहनाकर उनकी हँसी उड़ाई और उनका अपमान
किया, और फिर उन्हें पिलातुस के पास वापस भेज दिया। 12उस दिन
से हेरोदेस और पिलातुस एक दूसरे के मित्र बन गए। इससे पहले उनमें
दुश्मनी थी।

लोगों का गलत चुनाव

13तब पिलातुस ने प्रधान-पुरोहितों, अधिकारियों और लोगों को
बुलाकर कहा, 14“तुमने मेरे सामने इस मनुष्य पर लोगों को विद्रोह
के लिए भड़काने जैसे कई और आरोप लगाए हैं। मैंने तुम्हारे सामने
इसकी जाँच की है, मैंने तुम्हारे लगाए आरोपों में से इसे किसी भी
आरोप का दोषी नहीं पाया। 15और न हेरोदेस ने ही इसे दोषी पाया,

क्योंकि उसने इसे हमारे पास वापस भेज दिया है। इसने मृत्युदंड के
योग्य कोई काम नहीं किया है। [16-17]इसलिए मैं इसे कोड़े लगाकर छोड़
देता हूँ।”
[18]किंतु वे सब एक-साथ चिल्ला उठे, “इसको मार डालो और हमारे
लिए बराबस को छोड़ दो!”* [19]बराबस शहर में हत्या और रोम
सरकार के विरुद्ध हुए विद्रोह में भाग लेने के कारण जेल में था।
[20]पिलातुस ने प्रभु येशु को छोड़ देने की इच्छा से लोगों को फिर
समझाया, [21]पर वे चिल्लाते रहे, “क्रूस पर मृत्युदंड दो, इसे क्रूस पर
मृत्युदंड दो!”
[22]पिलातुस ने तीसरी बार कहा, “क्यों? इसने क्या गलती की
है? मैं इसमें मृत्युदंड के योग्य कोई दोष नहीं पाता। तो मैं इसे कोड़े
लगवाकर छोड़ देता हूँ।”
[23]परंतु वे चिल्ला-चिल्लाकर पिलातुस के पीछे पड़ गए, “उसको
मृत्युदंड दो!” और उनका चिल्लाना सफल हुआ। [24]पिलातुस ने फैसला
सुनाया कि लोगों की माँग पूरी की जाए। [25]पिलातुस ने बराबस को
छोड़ दिया जो विद्रोह और हत्या के कारण जेल में बंद था। पर
पिलातुस ने लोगों की माँग के सामने हार मान ली और प्रभु येशु को
अपने सैनिकों के हाथों में सौंप दिया।
[26]जब सैनिक प्रभु येशु को ले जा रहे थे, तब उन्होंने एक शिमोन नामक
आदमी को पकड़ा, जो गावों से होकर यरूशलम शहर आ रहा था। वह
साइरेन इलाके का निवासी था। उन्होंने उस पर क्रूस लाद दी कि वह प्रभु
येशु के पीछे क्रूस को ले कर चले। [27]लोगों की भारी भीड़ प्रभु येशु के पीछे
चल रही थी। भीड़ में जो महिलाएँ थी प्रभु येशु के लिए सुबक-सुबक
कर रो रहीं थीं। [28]प्रभु येशु ने उनकी ओर मुड़कर कहा, “यरूशलम शहर
की पुत्रियो! मेरे लिए मत रोओ, पर अपने लिए और अपने बच्चों के लिए
रोओ, [29]क्योंकि देखो, वे दिन आ रहे हैं जब लोग कहेंगे, ‘भाग्यशाली हैं वे
महिलाएँ जो बाँझ हैं और जिनके पास दूध-पीते शिशु नहीं हैं, क्योंकि यह
एक कठिन और भयानक समय होगा।’ [30]तब लोग पहाड़ों से कहेंगे, ‘हम

---

* **23:18** *बराबस को छोड़ दो!* - शिष्य मत्तियाह लिखते हैं कि मुक्ति-त्यौहार के मौके पर राज्यपाल लोगों की इच्छानुसार एक बंदी को मुक्त करता था (मत्तियाह 27:15)।

पर गिर पड़ो' और पहाड़ियों से 'हमें ढक लो कि हम मर जाएँ।' [31]यदि
पेड़ के हरे होने पर भी ऐसा हो रहा है, तो पेड़ के सूखने पर क्या होगा?"*

[32]सैनिक अन्य दो मनुष्यों को भी, जो अपराधी थे, प्रभु येशु के
साथ मृत्युदंड के लिए ले चले। [33]जब वे "कपाल" नामक स्थान पर
पहुँचे तब उन्होंने वहाँ प्रभु येशु को क्रूस पर ठोक दिया।* उन दोनों
अपराधियों को भी क्रूस पर कीलों से ठोका गया था, एक को प्रभु येशु
की क्रूस के बाईं ओर और एक को दाहिनी ओर।

[34-35]प्रभु येशु ने कहा, "पिता परमात्मा, इनसे इनके इस पाप का
हिसाब न लेना, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।"*

जब लोग खड़े-खड़े यह सब देख रहे थे, तब सैनिकों ने यह तय करने
के लिए कि प्रभु येशु के कपड़े कौन लेगा, उन्होंने पर्ची पर अपने नाम
लिख कर डाले। यहूदी समाज के नेता भी हँसी उड़ाते हुए कह रहे थे,
"इसने दूसरों को बचाया। यदि यह परमात्मा का चुना हुआ मुक्तिदाता
है, तो अब अपने को बचाए!" [36]सैनिकों ने भी प्रभु येशु की हँसी उड़ाई
और उन्हें खट्टा अंगूर-रस पीने को दिया। [37]वे बोले, "यदि तू यहूदियों
का राजा है तो स्वयं को बचा ले।" [38]प्रभु येशु के सिर के ऊपर क्रूस पर
यह सूचना भी लगाई गई थी, "यह यहूदियों का राजा है।"

[39]क्रूस पर टँगा एक विद्रोही यह कहकर प्रभु येशु का अपमान करने
लगा, "अगर तू मुक्तिदाता है? तो फिर हमें और अपने को बचा ले।"

[40]पर दूसरे अपराधी ने उसे डाँटकर कहा, "क्या तुझे परमात्मा का
डर नहीं? क्योंकि तुझे भी तो इन्हीं की तरह वही सज़ा मिली है? [41]जो
सज़ा हमें मिली है वह ठीक है, क्योंकि हम अपनी करनी का फल भोग
रहे हैं, पर इन्होंने कोई गलत काम नहीं किया।"

[42]तब वह बोला, "हे राजा येशु, जब आपका शासन आए, तब मुझे
मत भूलिएगा।"

---

* **23:31** *यदि पेड़ के हरे होने पर भी ऐसा हो रहा है, तो पेड़ के सूखने पर क्या होगा?* - या "यदि पवित्र भक्त (हरे पेड़) के साथ ऐसा हो रहा है तो बुरे लोगों (सूखे पेड़) के साथ क्या होगा?"

* **23:33** *क्रूस पर ठोक दिया* - या, "क्रूस पर लिटाकर उनके हाथ पांव में कीलें ठोक कर क्रूस को खड़ा कर दिया।" * **23:34-35** *प्रभु येशु ने कहा, "पिता परमात्मा, इनसे इनके इस पाप का हिसाब न लेना, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं"* - कुछ हस्तलिपियों में इस संदर्भ को नहीं जोड़ा गया है।

[43]प्रभु येशु ने उससे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ कि आज ही* तुम
मेरे साथ स्वर्ग में होगे।”

मुक्तिदाता येशु की मृत्यु

[44]लगभग दोपहर का समय था और उस समय से तीन बजे तक सारे
देश में अंधकार छाया रहा। [45]सूरज का चमकना बंद हो गया और
परमात्मा के परमात्मा के मंदिर का परदा* बीच में से फट कर दो
भागों में बँट गया था। [46]तब प्रभु येशु ने ऊँची आवाज़ से कहा, “पिता
परमात्मा, मैं अपनी आत्मा आपके हाथों में देता हूँ।” और यह कहकर
प्राण त्याग दिए।

[47]यह घटना देखकर रोम सेना-अधिकारी ने परमात्मा का गुणगान
किया और कहा, “सचमुच, यह मनुष्य निर्दोष था।” [48]सब लोग
जो यह देखने को इकट्ठा हो गए थे, इन घटनाओं को देखकर लोग
रोते-बिलखते अपने घर लौट गए। [49]वे सब महिलाएँ और प्रभु येशु के
दोस्त जो गलील से उनके साथ आए थे, कुछ दूरी पर खड़े होकर ये
सब देख रहे थे।

प्रभु येशु के शव को गुफा में रखा जाना

[50]योसफ नामक व्यक्ति धर्म-महासभा का सदस्य था। वह एक
नेक और धर्मी व्यक्ति था। [51]वह प्रभु येशु के विरुद्ध धर्म-महासभा
के दिए गए निर्णय से सहमत नहीं था। योसफ यहूदिया प्रदेश के नगर
अरिमतेया का निवासी था, और वह उस समय का इंतज़ार कर रहा था
जब परमात्मा सब लोगों पर शासन करेंगे। [52]उसने पिलातुस के पास
जाकर प्रभु येशु का शव माँग लिया। [53]उसने शव को क्रूस से उतारकर
सन के कपड़े की चादर में लपेटा और उसे एक पहाड़ी में खोदी गई

---

* **23:43** *आज ही* - या “मैं तुमसे अभी कहता हूँ कि तुम मेरे साथ स्वर्ग में होगे।” * **23:45** *मंदिर का परदा* - यरूशलम शहर के मंदिर के भीतरी दो भाग थे, पवित्र स्थान जहाँ पुरोहित को ही प्रवेश की आज्ञा थी और परम पवित्र स्थान जहाँ केवल साल में एक बार महापुरोहित को ही प्रवेश की आज्ञा थी। मंदिर के इन दोनों भागों के बीच में एक बड़ा परदा पड़ा हुआ था। प्रभु येशु की मृत्यु के समय, यह परदा बीच में से दो भागों में फट गया, जिसका अर्थ है कि अब मनुष्य का परमात्मा के साथ सीधे सम्बन्ध रखना संभव हो गया है।

गुफा में शव को रख दिया। इस गुफा में कभी कोई शव नहीं रखा
गया था। [54]यह आराम-दिवस से एक दिन पहले शुक्रवार का दिन था
जिसमें आराम दिवस की तैयारी की जाती है। और सूरज छुपने पर
आराम-दिवस शुरू होने वाला था।
[55]जो महिलाएँ गलील प्रदेश से प्रभु येशु के साथ आई थीं, उन्होंने
योसफ के साथ जाकर गुफा को देखा और यह भी देखा कि प्रभु येशु
का शव उस गुफा में किस प्रकार रखा गया है। [56]तब उन्होंने घर
लौटकर प्रभु येशु के शव पर लगाने के लिए खुशबूदार मसाले तैयार
किए। परंतु मोशे के नियम और शिक्षा के अनुसार आराम-दिवस पर
आराम किया।

24

प्रभु येशु का ज़िन्दा हो जाना

[1]हफ्ते के पहले दिन सुबह-सुबह ही वे महिलाएँ उस गुफा पर आईं
जहाँ शव रखा गया था। वे अपने साथ उस खुशबूदार मसाले को, जो
उन्होंने शव पर लगाने के लिए तैयार किया था, लेकर आई थीं। [2]उन्होंने
उस पत्थर को जो गुफा के मुख पर रखा था लुढ़का हुआ पाया, [3]किंतु
गुफा के अंदर जाने पर उन्हें प्रभु येशु का शव नहीं मिला। [4]वे अभी
सोच ही रही थीं कि क्या हो गया। और तभी अचानक दो पुरुष उनके
पास आ खड़े हुए। उनके कपड़े उज्जवल प्रकाश की तरह चमक रहे
थे। [5]स्त्रियों ने डर के कारण ज़मीन की ओर सिर झुका लिया। पुरुषों
ने उनसे कहा, “तुम ज़िन्दा इंसान को उस स्थान में क्यों ढूँढती हो जहाँ
मरे हुए रखे जाते हैं? [6]प्रभु येशु यहाँ नहीं हैं। परमात्मा ने उन्हें ज़िन्दा
कर दिया है!+ याद करो, उन्होंने गलील में रहते हुए तुमसे कहा था
[7]कि तेजस्वी मानव-पुत्र पापियों को सौंप दिया जाएगा जो उसे क्रूस
पर चढ़ाकर कीलों से ठोक देंगे। लेकिन तीन दिन बाद वह ज़िन्दा हो
जाएगा।”
[8]तब स्त्रियों को प्रभु येशु की कही बातें याद आईं [9]और वे गुफा से
लौट गईं। उन्होंने ग्यारह राजदूतों को और अन्य सबको ये सारी बातें
बताईं। [10]जिन स्त्रियों ने राजदूतों से ये बातें कहीं, वे थीं, मगदलवासी
मरियम, जोआना, याकोब की माता मरियम और उनके साथ कुछ

और अन्य महिलाएँ। [11]परंतु राजदूतों को ये बातें बकवास लगीं और
उन्होंने उन स्त्रियों की बातों पर विश्वास नहीं किया। [12]फिर भी पतरस
उठा और दौड़कर गुफा तक गया। जब उसने झुककर देखा तो गुफा में
केवल अलग पड़ी वे पट्टियाँ दिखाई दीं जो शव पर लपेटी गई थीं। वह
इस घटना पर आश्चर्य करता हुआ लौट आया।+

प्रभु येशु का ज़िन्दा होकर दो शिष्यों को दर्शन देना

[13]उसी दिन उनमें से दो शिष्य इमाउस नामक गाँव को जा रहे थे, जो
यरूशलम शहर से लगभग ग्यारह किलोमीटर दूर है। [14]वे, जो घटनाएँ
हो चुकी थीं, उनके बारे में आपस में बातचीत कर रहे थे। [15]जब वे
बातचीत कर ही रहे थे, तब स्वयं प्रभु येशु उनके पास आए और उनके
साथ-साथ चलने लगे। [16]हालाँकि वे प्रभु येशु को देख रहे थे, लेकिन
उन्हें पहचान नहीं पाए।

[17]प्रभु येशु ने पूछा, “तुम चलते-चलते आपस में किस बारे में
बातचीत कर रहे थे?” इस पर वे उदास हो गए और रुक गए। [18]तब
उनमें से एक, जिसका नाम क्लेयोपस था, बोला, “क्या यरूशलम
शहर से आए आप अकेले ऐसे व्यक्ति हैं जिसको नहीं मालूम कि इन
दिनों वहाँ क्या हुआ है?”

[19]प्रभु येशु ने पूछा, “क्या हुआ है?”

वे बोले, “वे बातें जो नासरत वासी येशु के साथ घटीं। उन्होंने जो
कुछ किया और कहा, उससे उन्होंने दिखाया कि वह एक शक्तिशाली
परमात्मा के प्रवक्ता थे जिन्होंने अपनी इन बातों से परमात्मा और
सभी लोगों को खुश किया। [20]उन्हें हमारे प्रधान-पुरोहितों और
धर्म-महासभा के अधिकारियों ने मृत्युदंड की सज़ा देने के लिए रोम
अधिकारियों को सौंपा और क्रूस पर चढ़ाकर कीलों से ठोक दिया।
[21]हमें तो आशा थी कि यही हैं वह व्यक्ति जो इज़राएल देश के लोगों
को मुक्ति देंगे। इन बातों को तीन दिन बीत चुके थे।

[22]“आज सुबह हमारे समूह की कुछ महिलाओं ने हमें हैरान कर
दिया। वे सुबह-सुबह ही गुफा पर गई थीं, [23]लेकिन उन्हें वहाँ प्रभु येशु
का शव नहीं मिला। वे आकर बोलीं कि उन्हें स्वर्गदूत तो दिखाई दिए
जिन्होंने उनसे कहा था कि प्रभु येशु ज़िन्दा हैं। [24]हमारे कुछ साथी गुफा

पर गए और इसे वैसे ही पाया जैसे स्त्रियों ने बताया था। लेकिन उन्होंने
भी प्रभु येशु को वहाँ नहीं देखा।"
[25]तब प्रभु येशु ने दोनों शिष्यों से पूछा, "तुम्हारी समझ कहाँ चली
गई है? तुम्हें परमात्मा के प्रवक्ताओं की बातों पर विश्वास करने में
इतना समय क्यों लग रहा है? [26]क्या यह ज़रूरी नहीं था कि मुक्तिदाता
परमात्मा का तेजस्वी शासन प्राप्त करने से पहले दुख उठाए?" [27]तब
प्रभु येशु ने परमात्मा के प्रवक्ता मोशे और सारे परमात्मा के प्रवक्ताओं
की पुस्तकों से लेकर, पूरे परमात्मा-ग्रंथ में अपने बारे में लिखी बातों
का अर्थ उन्हें समझा दिया।
[28]इतने में वे दो शिष्य उस गाँव के नज़दीक पहुँच गए जहाँ उन्हें जाना
था और उन्हें ऐसा लगा कि प्रभु येशु उनके गाँव से आगे जाना था, [29]तो
उन्होंने प्रभु येशु से विनती की, "आज रात हमारे साथ ही रहिए क्योंकि
दिन अब ढल चुका है।" इसलिए प्रभु येशु उनके साथ रूकने के लिए
घर के अंदर चले गए।
[30]जब वह उनके साथ भोजन करने बैठे तब प्रभु येशु ने रोटी ली और
परमात्मा को धन्यवाद देते हुए रोटी के टुकड़े किए और उन्हें देने लगे।
[31]तब तुरंत उन्होंने प्रभु येशु को पहचान लिया, परंतु प्रभु उनकी आँखों
के सामने से ओझल हो गए।
[32]इस पर वे आपस में कहने लगे, "जब वह मार्ग में हमारे साथ
बातचीत कर रहे थे और हमें परमात्मा-ग्रंथ को समझा रहे थे, तब क्या
हमारे मन में एक अजीब सी खुशी नहीं हो रही थी?"
[33]वे दोनों उसी समय उठे और यरूशलम शहर को लौट गए। उन्होंने प्रभु
येशु के ग्यारह राजदूतों और उनके अन्य साथियों को इकट्ठा पाया [34]जो कह
रहे थे, "प्रभु सचमुच ज़िन्दा हो गए हैं और शिमोन को दिखाई दिए हैं!"
[35]तब उन दोनों ने भी मार्ग में हुई घटनाएँ उन्हें बताते हुए कहा, "जब
प्रभु रोटी के टुकड़े कर रहे थे तब हमने उन्हें पहचान लिया।"

प्रभु येशु को ज़िन्दा देखकर शिष्यों का डर जाना

[36]वे दोनों शिष्य ये बातें कर ही रहे थे कि स्वयं प्रभु येशु वहाँ आकर
उनके बीच खड़े हो गए। और प्रभु ने उनसे कहा, "तुममें शांति बनी रहे।"
[37]शिष्य सहम गए और डरकर सोचने लगे कि वे कोई भूत देख रहे हैं।

[38]प्रभु येशु ने उनसे कहा, “तुम क्यों घबराते हो? तुम्हारे मन में शक
क्यों आया? [39]मेरे हाथ और मेरे पैर देखो, यह मैं ही हूँ। मुझे छूकर
देखो, क्योंकि भूत के मांस और हड्डियाँ नहीं होतीं पर जैसा तुम देख रहे
हो कि मेरे हैं।” [40]यह कहकर उन्होंने उनको अपने हाथ-पैर दिखाए।
[41]शिष्य इतने खुश और हैरान थे कि उन्हें यकीन ही नहीं हो रहा था।
प्रभु येशु ने तब उनसे पूछा, “क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है?”
[42]उन्होंने प्रभु येशु को खाने के लिए भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा+
दिया। [43]प्रभु येशु ने मछली ली और उनके सामने खाई।

प्रभु येशु के अंतिम आदेश

[44]फिर प्रभु येशु ने उनसे कहा, “जब मैं तुम्हारे साथ था तब मैंने तुमसे
कहा था कि मोशे के नियम और शिक्षा, परमात्मा के प्रवक्ताओं की
पुस्तकों और भजन शास्त्रों में जो कुछ मेरे बारे में लिखा है, वह सभी
पूरा होना ही था।” [45]तब प्रभु येशु ने शिष्यों की बुद्धि खोल दी कि वे
परमात्मा-ग्रंथ को समझ सकें [46]और उनसे कहा, “इसमें लिखा है कि
मुक्तिदाता की दर्दनाक मौत होगी और फिर वह तीसरे दिन ज़िन्दा हो
जाएँगे। [47]इसमें यह भी लिखा गया है कि यरूशलम शहर से शुरुआत होकर
इसे दुनिया के हर समाज के लोगों में मुक्तिदाता के नाम और अधिकार में
बताया जाना चाहिए ताकि वे अपने बुरे कर्मों के खाते को मिटवाने के लिए
अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करें। [48]तुम इन बातों के गवाह हो। [49]देखो,
अब मैं तुम पर पवित्र आत्मा भेजूँगा, जैसा कि मेरे पिता परमात्मा ने वादा
किया था। परंतु तब तक तुम यरूशलम शहर में ही ठहरे रहना जब तक
पवित्र आत्मा न आए और परमात्मा तुम्हें शक्ति से न भर दे।”

प्रभु येशु का परमस्वर्ग की ओर प्रस्थान

[50]फिर प्रभु येशु उन्हें बैथनिया गाँव तक ले गए और उन्होंने अपने
हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। [51]आशीर्वाद देते हुए वह उनसे
अलग हो गए और परमस्वर्ग में उठा लिए गए।+ [52]शिष्यों ने उनकी
भक्ति की और वे+ खुशी-खुशी यरूशलम शहर लौट आए। [53]वे अपना
समय परमात्मा के मंदिर में परमात्मा का गुणगान करते रहते थे।